23

8, III

त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

वसन्ताङ्क

वर्ष
८
सं० २००६

संख्या
३
चैत्र

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
४) रु०

इस अङ्कका
मूल्य १।।) रु०

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव अचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

त्यागमूर्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज प्रधानमन्त्री स०ध०प्र० सभा पंजाब।

धर्ममार्त्तण्ड राजा साहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी०आई०ई० सोलन।

रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।

श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी ज़मींदार साहब उपरोड़ा स्टेट सी० पी०।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।

आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी सीतावर्डी, नागपुर।

श्री वेणुभाई एम० रावल पाचोरा (पूर्वखान्देश)।

रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ़।

श्री १०५ महाराज रणदीपसिंहजी साहब नाहन (सिरमौर)

अचरोलके राजाधिराज श्री १०५ मान् हरिसिंहजी उदयपुर (मेवाड़)

श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंहजी बार. एट-ला, बनेड़ा (मेवाड़)।

श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार भरतपुर।

श्रीमान् स्व० अक्रियानन्दजी (श्री चुन्नीलालजी) भरतपुर।

श्रीमान् पं० हरिशङ्करजी शास्त्री ज्योतिषरत्न खिड़कियां सी० पी०।

श्रीमान् दानवीर सेठ श्रीगोपालजी मोहता उदयपुर (मेवाड़).

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों बी० ए०, एल-एल० बी० नाभा।

श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी बी० ए० एल०-एल० बी० सेशनजज सोलन।

श्रीमान् लाला शिवप्रसादजी आढती खड़ (पंजाब)।

श्रीमान् ला० बांकेलाल राजकुमार आढती खड़ (पंजाब)।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्यो० मा० ज्यो०र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायँगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायँगे।

'श्रीस्वाध्याय'के नियम

(१) 'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १।) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायँगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणा-पूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायँगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएँ।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमी का 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) रु० न लेकर वर्षसमाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मँगानेसे उक्त मूल्यमें चार आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जायँगे।

वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। गत पञ्चमवर्ष का 'श्रीहनाङ्क' और विगत चतुर्थ वर्षका 'नववर्षाङ्क' तथा गत सातवें वर्षका 'वसन्ताङ्क' अब कार्यालय में नहीं है, अतः इन अङ्कोंके लिए अब कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

ग्राहकोंको आवश्यक सूचना

गत वर्ष चैत्र मासमें 'वसन्ताङ्क' से जो सज्जन एक वर्षके लिए ग्राहक बने थे उनका मूल्य गत पौष मासके 'हेमन्ताङ्क' में समाप्त हो गया है। अतः मूल्य प्राप्त होने पर ही उन्हें यह 'वसन्ताङ्क' प्राप्त हो सकेगा। जो सज्जन इस अङ्कसे स्थायी ग्राहक बनना चाहें वे इस 'वसन्ताङ्क' और आगामी आषाढ़के 'ग्रीष्माङ्क' का छः माही (अर्धवार्षिक) मूल्य २) और आगामी नवम वर्षका विशेषाङ्क सहित पूरा वार्षिक मूल्य ४) मिलाकर कुल ६) रु० मनीआर्डर से शीघ्र भेजें। केवल इस वसन्ताङ्कका मूल्य १॥) है। यह एक अङ्क वी० पी० द्वारा १॥=) में पड़ेगा, अतः ६) अग्रिम (पेशगी) भेजकर डेढ़वर्षके लिए स्थायी ग्राहक बननेमें ही ग्राहकों को विशेष लाभ है। इस अङ्कमें पूरा सं० २००६ का विस्तृत भविष्यफल और 'श्रीसंक्रान्ति पञ्चदर्शी' गद्यपद्यानुवाद सहित होनेसे माँग बहुत बढती जा रही है, अतः आप भी आज ही मूल्य भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित कर लीजिए, अन्यथा विलम्ब करने पर यह अङ्क प्राप्त न हो सकेगा।

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

वि० सं० २००६ का

"श्रीविश्वविजय-पंचांग"

जिस पंचांगकी चार महीनोंसे प्रतीक्षा कर रहे थे वही सुप्रसिद्ध श्रीविश्वविजय पञ्चाङ्ग बहुत सुन्दर रूपमें अनेक विशेषताओंके साथ प्रकाशित होकर हाथोंहाथ बिक रहा है। विस्तृत भविष्यफल, नेताओंका सचित्र भविष्य, व्यापार परिस्थिति, तेजो-मंदी विचार, पाक्षिक फलादेश, दैनिकग्रहस्पष्ट, दैनिक लग्नसारणी, प्रतिदिनकी ग्रह युति, अमृतसिद्धि योगादि अनेक विषय इस पंचांगकी लोकप्रियताके प्रधान कारण हैं। उत्तर भारतमें इस प्रकारका सर्वाङ्ग शुद्ध यह पहला ही पंचांग है। छपते ही हजारों प्रतियाँ निकल चुकी हैं। यदि आपने अभी तक नहीं मंगवाया हो तो आज ही डाकखर्च सहित ॥=) नीचे लिखे पते पर भेजकर शीघ्र प्राप्त कर लीजिए। अब बहुत थोड़ी प्रतियां शेष हैं अतः विलम्ब करनेसे प्राप्त न हो सकेगा। रजिस्ट्री से मँगवानेके लिए चार आने अधिक भेजना चाहिए। ११२ पृष्ठके इस विशाल पञ्चाङ्गका मूल्य ॥।) बारह आने मात्र हैं। २० प्रति से अधिक मंगवाने वालोंको २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

पता—श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला)

स्थायी लाभके लिए —— 'श्रीस्वाध्याय' में

विज्ञापन दीजिए

'श्रीस्वाध्याय' प्रत्येक शिक्षित परिवारके पास पहुँचता है। यह व्यापारका पथ प्रदर्शक है। व्यापारी इसे पूंजीकी भांति सुरक्षित रखते हैं। इसलिए प्रत्येक उच्च घरानेमें इसका आदर है। आप अपने व्यापारका सम्बन्ध यदि उच्च घरानोंसे कराना चाहते हैं तो 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी 'ग्रीष्माङ्क' में विज्ञापन दीजिए। प्रामाणिक विश्वस्त व्यवसाइयोंके कुछ चुने हुए विज्ञापन ही 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित हो सकेंगे। शुल्क (रेट्स) आदि के लिए निम्नपते पर शीघ्र लिखिये—

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीति का ज्ञान तो भलीभांति हो ही गया है। इसमें जो मोक्षादि पांच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन किन बिषयों पर लेख लिखे जा सकते हैं ? इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें —

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपु· आदि मतों के संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भमें —

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्म रहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्प-सूत्र। स्त्रीधन। दत्तक-दाय। दाय-भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्त्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जायें। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्यवाणियां। राशिफल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकोंका परिचय।

अर्थस्तम्भमें —

अर्थ शास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायतमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेजी मन्दी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक, भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादनसे अर्थ प्राप्ति आदि आदि।

कामस्तम्भमें----

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ़ स्वस्थ ओजस्वी बनानेके उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कलाकौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि आदि।

इतिहासस्तम्भमें---

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिलालेखादि) संस्कृत-साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय (देश की सीमायें नदियां पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि) प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्टविद्वान् भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन-चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष----

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्ककी त्रैमासिक अवधिमें जो जो विशेष पर्व त्यौहार या जिन जिन अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियाँ आवेंगी उन उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जावेगा। आगामी अङ्क (ग्रीष्माङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्वप्रथम निम्न विषयोंपर सुविचारपूर्ण लेख भेजने की अवश्य कृपा करें—

उत्सर्जन उपाकर्मनिर्णय, योद्धाकृष्ण, ब्रह्मण्यकृष्ण, विलासीकृष्ण, भगवान्कृष्ण, अवतारीकृष्ण, वीरकृष्ण चतुरकृष्ण, जगद्गुरुकृष्ण, प्रौष्ठपदी, महालयश्राद्ध, देवी नवरात्र आदि आदि।

सब लेख ज्येष्ठ कृष्ण ३० ता० २७ मई १९४९ तक सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) इस पते पर पहुँचना आवश्यक है।

वाऽध्यायोऽध्येतव्यः

❀ श्रीः ❀

स्वाऽध्यायान्न प्रमदितव्यम् ।

श्रीस्वाध्याय

[वसन्ताङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ (राष्ट्रलोक)

वर्ष ८ | सोलन, चैत्र शु० १० शुक्रवार सं० २००६ वि० | संख्या ३

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥

—अ० वा० आचार्य

सत्पुरुषव्रत

असन्तो नाभ्यर्थ्याः सुहृदपि न याच्यः कृशधनः प्रिया न्याय्या वृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेऽप्यसुकरम् ।
विपद्युच्चैः स्थेयं पदमनुविधेयं च महतां सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ॥

—श्री भर्तृहरि

[तलवारकी धार कितनी तीखी होती है, आपने देखी है न ? क्या उस पर आप चल सकते हैं ? आप भले ही उस पर चल न सकें, पर सत्पुरुष तो इस अत्यधिक कठिन असिधाराव्रत पर चलेंगे ही। सन्तोंको इस पर चलने के लिए किसने कहा है ? किसीने नहीं। सन्त किसीके कहने सुनने पर नहीं चला करते। उनका तो यह सहज स्वभाव है। देखिये, ये सत्पुरुष हैं। जीवन निर्वाहके लिए इन्हें जिन पदार्थोंकी अत्यधिक आवश्यकता है उन पदार्थोंकी जिनके पास समृद्धि है वे दुष्ट हैं। इसी लिए उनसे ये कभी याचना नहीं करेंगे। हां, अकारण ही इनका हित चाहने वाले इनके एक मित्र हैं, पर उनसे भी ये याचना नहीं करते। कारण मित्रकी आर्थिक परिस्थिति अच्छी नहीं। लोगोंको भी प्रिय और इनके हृदयको भी प्रिय एवं साथ ही न्यायानुमोदित भी हो ऐसी ही वृत्ति सर्वदा इनकी रहेगी। प्राण भले ही चले जायें परन्तु ऐसा वैसा कर्म ये नहीं कर सकते, क्योंकि मलिनता इनके स्वभावसे विरुद्ध है। इन पर विपत्तिका पहाड़ ही क्यों न टूट पड़े, ये अपनी उच्च विचार धाराको कदापि छोड़नेको प्रस्तुत नहीं। साथ ही महापुरुषोंके ही मार्ग का अनुसरण इन्हें अच्छा लगता है और उसी पर निरन्तर ये चलते हैं।]

धर्मनिर्णय कौन कर सकता है ?

सामान्य और विशेष ये दोनों ही आरोपमात्र होते हैं। जैसे वृक्ष सामान्य हो तो आम्र विशेष। इन दोनों कल्पनाओं की पितृभूमि एक ही रहती है। विशेष आपेक्षिक दृष्टिसे कहीं सामान्य हो जाता है और कहीं विशेष। ऐसे ही सामान्य भी आपेक्षिक दृष्टिसे कहीं विशेष और वही कहीं पर सामान्य। मूल पदार्थको इन दोनोंमेंसे एक होनेका निर्धारण असङ्गत है। दोनों ही भाव उस मूलसे प्रकट होते हैं, अतः दोनों ही वह है ऐसा कहा जा सकता है। जो प्रकट होता है वह तो रूपविशेष है और कल्पित। इस दृष्टिकी अपेक्षासे जो बाहर प्रकट नहीं होता वह सामान्य मान लिया जाता है। दूसरे शब्दोंमें कह सकते हैं कि समष्टिके आधार पर व्यष्टि और व्यष्टिके आधार पर समष्टिका टिकाव आत्मानन्दके लिए मान लिया गया है। किन्तु किसी भी दृष्टिमें दोनोंमेंसे एककी भी उपेक्षा सह्य नहीं। इन दोनोंका आदिम और अन्तिम महाभाव एक ही स्वयम्भुतत्त्व है। इसी बातको समझानेके लिए हमने अपने 'श्रीआत्मविलास'में कहा है—

आत्मा ब्रह्म परः शिवोऽथ परमा संवित्स्वभावोऽथ वा सोमो वा पुरुषेऽपि वाऽथ भगवान् कर्ताऽथ कर्मापि वा।
बुद्धो वाऽथ जिनोऽपि वा गुरुरथो हानिर्न काप्यत्र मे तत्त्वदर्शनसिद्धभूरभिमताऽऽनन्दात्मिका पातु माम्।

मूल एक होता है, शाखा बहुत। एक पिताके पुत्र बहुत हो सकते हैं, किन्तु एक पुत्रके बहुत पिता नहीं। एकमें कलह नहीं होता, कलहकी सम्भावना तो अनेकमें ही है। कल्पित मिटाया जा सकता है, अकल्पित नहीं। अशान्ति कल्पित है और शान्ति अकल्पित। कल्पित और कृत्रिम पर्यायमात्र है। इसीको विकृति भी कह सकते हैं। प्रकृति स्थिर है, विकृति अस्थिर। प्रकृति आधार है, विकृति आधेय। आधार और धर्म एक ही वस्तु है। अस्थिरको धर्म कहना आत्मवञ्चना होगा। धर्मका निर्माण नहीं होता, उसका तो साक्षात्कार किया जाता है। वह तो सिद्ध वस्तु है। उसके साक्षात्कारसे अनेकतामें अनुस्यूत एकताके दर्शन होते हैं। अशान्ति मिट जाती है। दुःख सुख हो जाते हैं। कलह भाग जाते हैं। अव्यवस्था विलीन हो जाती है। अधर्म शब्दका अर्थ है जो मूल नहीं। उसे तो शाखा, कल्पित, कृत्रिम, बनावटी आदि कह सकते हैं। कल्पित प्रकृति वास्तविक नहीं। इसी कारण महर्षि कणाद ने—"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।"—ऐसा धर्म लक्षण किया। निःश्रेयस तो आत्म-साक्षात्कारके बिना हो ही नहीं सकता। अभ्युदय तो काल्पनिक होता है। कल्पित ही सारी सृष्टि और उसमें भी कल्पित ही सारा कार्यकारणभाव। और फिर उनके अनन्तानन्त नामरूपोंकी कल्पना। उसीमें फिर जी तोड़ वज्रकठोर घड़तोड़की चिन्ता और परिश्रम, और उसका फल—"जायस्व म्रियस्व"। आत्मानुग्रह होने पर अन्तर्मुखता होती है। बहिर्मुखता तो निग्रह है, जड़ता है। बहिर्मुख अशान्त होते हैं। उनकी वह अशान्ति ही उन्हें धर्माधर्मका विवेक नहीं होने देती। अन्तर्मुख शान्त होते हैं। उन्हें धर्माधर्मका परिज्ञान होता है। वे ही धर्मका साक्षात्कार करा सकते हैं। कल्पित आदर्श अनेक हो सकते हैं। अकल्पितमें मतभेद मिट जाते हैं। अन्तर्मुखोंकी श्रुति तथा स्मृति सभी प्रकारकी सुव्यवस्था स्थापित करनेकी क्षमता रखती है। बहिर्मुखोंका तो जनश्रुति ही प्रिय होती है। उनके मतमें जनश्रुतिसे बढ़ कर उत्कृष्ट कुछ नहीं। बाह्य नामरूपोंकी चकाचौंधसे उनकी आँखें चुंधियाई होती हैं, तो भी पशुबलसे बली होकर भी वे अपने आपको ऋषि मनवानेका हठ करते हैं। अव्यवस्थाको ही व्यवस्था नाम देते हैं। कल्पना किसी श्रेणीकी हो उसकी स्थिरताकी अभिलाषा हो तो विधि और निषेध देखने ही होंगे। इन सुनिरीक्षित विधि निषेधों पर सादर चलनेसे ही अभीष्ट आदर्शकी स्थिर रक्षा होगी, अन्यथा नाश। सामान्य विधिनिषेध सामान्यका और विशेष विधिनिषेध विशेषकी स्थिरता रखनेमें सहायक हो सकते हैं। इसीलिए व्यष्टि नियम समष्टि पर और समष्टिनियम व्यष्टि पर हठात् लादनेसे क्या सुख होगा? आत्म-

ज्ञानसे बली आत्मनिष्ठासे वशिष्ठ ही वास्तविक ऋषिपदके अधिकारी हैं। वे ही वस्तुतः धर्माधर्मनिर्णायक हो सकते हैं। वे चोरको साहू और साहूको चोर नहीं कहते। वे कुलटाको पतिव्रता और पतिव्रताको कुलटा नहीं मानते। वे गधोंको घोड़ा और घोड़ोंको गधा नहीं बतलाते। वे अधरोत्तर (विप्लव) नहीं करते। जिससे असन्तोष बढ़े, अपहारवृत्ति फैले, काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सरोंको व्यवस्थापक माना जाये, क्या उसको सुव्यवस्था माना जा सकता है? वेश्याओंकी मनोवृत्ति पातिव्रत्यको सुरक्षित रखनेका भार वहन कर सकती है? कदापि नहीं। भोगवादको आदर्श मानने वाले त्यागवादियोंके लिए विधिनिषेधका निर्माण करके उन्हें सुख पहुंचाएंगे? हाँ, यदि अन्धे आँख वाले कौन और अन्धे कौन इसका निर्णय कर सकते हों तो यह भी सम्भव है।

मौर्य चन्द्रगुप्तका साम्राज्य कितना सुविशाल और कितना सुसमृद्ध था इसको इतिहासवेत्ता जानते हैं। इस सम्बन्धमें 'मेगास्थनीज' के कुछ संस्मरण देखने योग्य हैं। उस सुविशाल साम्राज्यके सम्राट्पद पर चन्द्रगुप्तको अभिषिक्त करने वाला महामनीषी प्रधान महामन्त्री आर्य चाणक्य विष्णु शर्मा किसी प्रासादमें रहनेकी अभिलाषा नहीं रखता था। इस विषयमें आजसे पन्द्रहसौ वर्ष पहले महाकवि विशाखदत्तने अपने 'मुद्राराक्षस' नाटकमें आर्य चाणक्यके निवासस्थानका वर्णन करते हुए जो लिखा है वह आजके विधाननिर्माताओंको तथा शासनका दम्भ भरने वालोंकी आँखें खोल कर देखना चाहिए। महाकवि कहता है—

उपल शकलमेतद्भेदकं गोमयानां
बटुभिरुपहृतानां बर्हिषां स्तोममेतत्।
शरणमपि समिद्भिः शुष्यमाणाभिराभि-
र्विनमितपटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम्॥

[यह देखिये भारतके प्रधान महामन्त्री चाणक्य विष्णुशर्माका निवास स्थान—छतके छज्जों पर लकड़ियां सूखने डाली हैं और उनके बोझसे कुटियाकी छत तथा छज्जे झुक गये हैं। भीतें पुरानी हो गई हैं। यह देखिये सूखी गोबरकी पाथियोंको तोड़नेका यह छोटा बट्टा रक्खा है। यह देखिये इधर कुशोंका स्तोम (पूलोंका ढेर) भी रक्खा है। विद्यार्थी इन्हें ले आते हैं। यही इनका घर है।]

चाणक्यके बनाये कौटिलीय अर्थशास्त्रका अध्ययन करने वाले भलीभाँति जानते हैं कि धर्मनिर्णयके लिए उन्होंने श्रुति स्मृतिको ही प्रमाण माना है। जैमिनिमहर्षिका धर्मविचारशास्त्र (पूर्वमीमांसा) जिन्होंने गुरुशुश्रूषा करते हुए पढ़ा है संसारभरके धर्मव्यवस्थाका निर्णय करनेमें वे निःसंशय योग्य माने जा सकते हैं। किन्तु इस आहारयुगमें अनार्यतन्त्रमें उन्हें अयोग्य माना जाता है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं। गणतन्त्र (पार्टीबन्दी) हो अथवा व्यक्तितन्त्र (डिक्टेटरशाही) दोनों ही अनार्यतन्त्र हैं। वे कभी भी शान्तिस्थापना नहीं कर सकते। भारतके वर्तमान नेता यदि भारतमें सुख शान्ति स्थापना करना चाहते हैं तो उन्हें अनार्यतन्त्रको आदर्श मानना छोड़ना होगा। जिस तन्त्रके आधार पर संसारके जगद्गुरु पद पर लाखों वर्ष भारत प्रतिष्ठित रहा वह धर्मतन्त्र ही था और उसी धर्मतन्त्रका आश्रय लेना होगा। अमेरिका रूस आदि भौतिक दृष्टिवालोंका आदर्श भारतका कल्याण नहीं, विनाश कर डालेगा। समय रहते चेतना चाहिए। रूसी साम्यवाद कालका विकराल गाल बनता जा रहा है। उधर अमरीकी आढ्यगणनीति भारतको महामारीके समान हड़पनेकी चालें चल रही है। अंग्रेज अब भी भारतको बलिदानका छाग (बकरा) बना कर स्वर्गभोग बनाये रखने के जी तोड़ प्रयत्नमें लगे हैं। भारतके कुछ अवयवोंको काटकर उसे पाकिस्तान नाम दे न्याय निर्णयकी भूल-भुलैयामें फाँसकर जो भी भारतका विनाश किया गया है उसे सब जानते हैं। आँखों पर पट्टी बाँधकर बातें बनाने वाले भले ही न जाननेका ढोंग रचें! आज अरबों रुपयोंकी हानि और लाखों मनुष्योंका प्राणनाश हो चुका है। सहस्रों नारियोंका अपमान भारत ने सहा है। कोट्यधिक भारतीय वृत्तिहीन और स्थानविहीन हो गये हैं। हमारे नेताओंको ऐसे कुसमयमें हिन्दुकोड बिल जैसे राष्ट्रमें फूट, असन्तोष, विद्वेष, अधर्म आदि विनाशकारी अनिष्ट बढ़ाने वाली वस्तुको प्रचारित करनेकी चिन्ता लग रही है। शासकगण

और उनके अनुयायिओंमें दिन प्रतिदिन पदलोलुपता उत्कोचग्राहिता (रिश्वतखोरी) उद्दण्डता उच्छृङ्खल स्वेच्छाचारिता इतनी बढ़ रही है कि जिसका वर्णन भी भयप्रद है। अधिक क्या लिखें, अन्तमें शासकपदारूढ़ नेताओंसे इतना ही निवेदन है कि भारतको संसारमें पूर्ण स्वतन्त्र सुखशान्तिसमृद्ध बनाना है तो सबसे पहले अन्न वस्त्र और रहनेका स्थान, इनका उचित वितरण और व्यवस्थापन अत्यधिक आवश्यक है। साथ ही शासन यंत्रको स्निग्ध निर्मल तथा उचित गतिमान् बनाया जाना चाहिए। राष्ट्रके नेताओंको तथा शासकोंके सश्रेणिकोंको सबसे अधिक और सबसे प्रथम अपरिग्रहताका आदर्श सर्वसाधारण जनताके समक्ष आचरणपूर्वक उपस्थित करना होगा। खाली बातें बनानेसे राष्ट्र अत्यधिक दुर्दशाग्रस्त हो जायेगा। चीनकी पुनरावृत्ति भारतमें न होने पाये यदि ऐसी इच्छा हो तो मुट्ठीभर लोगोंके मतको बहुमत बनाने का ढोंग सर्वथा छोड़ देना होगा। भूस्वामित्वका अपहार करनेसे और धनपतियों पर बड़े बड़े कर लगा देने से सुख समृद्धि नहीं होगी। नाहीं बुद्धिसाम्य हो सकेगा। आध्यात्मिक साम्यवादके आधार पर व्यावहारिक औचित्यवादका आश्रय लिए बिना अनर्थ नहीं टलेगा। 'भूपति' का आदर्श नीच है और 'भूपुत्र' का उच्च; यह बात यावत्पर्यन्त लोगों की समझमें न आयेगी तावत्पर्यन्त भू (राष्ट्र) की सेवा कभी न होगी। आजके भूपतियोंको हटाकर किसानोंको भूपति बनानेसे ही शान्ति नहीं हो सकेगी। आजके धनपतियोंको निर्धन बनाने मात्रसे शान्तिस्थापना कभी भी सम्भव नहीं। श्रौतस्मार्त्त विधानों के हटाने मात्रसे व्यवस्था नहीं होगी। अन्तर्मुख दृष्टिसे प्रकृतिनिरीक्षण बिना किये जो भी शासनविधान लोगों पर हठात् थोपे जायेंगे वे नयेसे नये विप्लवोंको निमंत्रण होंगे। प्रत्येक नये शासनमें तात्कालिक शासक नये नये विधान बनाते रहेंगे तो एक लम्बी शोधप्रतिशोधोंकी अनर्थकारिणी परम्परा चलती रहेगी और राष्ट्रमें जनताके कष्टोंका कोई ठिकाना न रहेगा। फिर "विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम्" ऐसी दशा होगी। राष्ट्र स्वर्गके स्थानमें नरक बन जयेगा। अतः बारम्बार यही प्रार्थना है कि नेतागण ऐसी कोई अनर्थकारिणी बात न करें। एक बात और —अशक्त अन्याय नहीं कर सकता। शक्तिमान् ही अन्याय करते हैं। इसलिए हमारा स्पष्ट निवेदन है कि शासक गणोंके सश्रेणिकोंकी जांच गुप्तचरों द्वारा कड़ाईसे होनी चाहिए और उनपर पूर्ण नियन्त्रण अध्यात्मवाद, अपरिग्रहवादके आधार पर होना चाहिए। केवल कांग्रेसी सिद्धान्तसे सहमत न रहने वालोंकी जांचसे या उनको कारालयोंमें डाल देनेसे यां उन पर करोंका बोझ लाद देनेसे अथवां और किसी वस्तुकी सुविधा उन्हें न देनेसे, या उनकी वस्तुओंका अपहार करनेसे राष्ट्रकी सेवा न होगी। केवल कांग्रेसी सदस्य हो जानेसे या शिरसे पैर तक मोटा खद्दर धारण कर लेनेसे राष्ट्र उन्नत न होगा। यावत्पर्यन्त राष्ट्रका प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको स्वतन्त्र सुखी अनुभूत न करेगा तावत्पर्यन्त राष्ट्र उन्नत न होगा। इसलिए एक किसी भी गणका निश्चित किया हुआ शासनविधान हठात् सब पर लागू करना सुख नहीं दुःख फैलायेगा, अस्तु। राष्ट्रहितैषी सुख समृद्धि स्थापित करने की अभिलाषा रखने वाले हमारे इस निवेदन पर अवश्य अवधान देंगे।

—अ० वा० आचार्यः



श्रीसंक्रान्तिपंचदशी

प्रस्तावना

(संस्कृत)

भिन्नभिन्नभोगाऽऽभोगभासुरे भवेऽस्मिंस्तत्रभवतो भवतो भगवतः स्वयम्भुवो विश्वम्भरस्य भर्गस्य भाग्यभूम्युपारूढस्य भैरवीभैरवाऽभिन्नस्य भावाऽभावभावनाऽभिरूपतमस्याऽहम्महोरूपिणो भर्गस एव भवति समग्रोऽपि भेदाऽभेदकल्पनासंरम्भ इति सर्वोऽप्यार्यानार्यवर्णिकापरिग्रह इति चेति सर्वतोभावेन भारतभुवमेव स्वराष्ट्रमित्याभिजन्येन संभावयन्तो धन्यधीधनसमृद्धा भारता भारतीया आर्या एव प्रभवन्ति परिज्ञातुम् ।

अत एव शान्तिस्थापनां समुद्दिश्यैवान्तःकरणबहिःकरणव्यापारपरायणत्वं निर्भ्रान्तं दरीदृश्यते तेषामार्याणाम् । अनार्याणां च सर्वोऽप्यन्तःकरणबहिःकरणव्यापारो हिताऽहितज्ञानविवेकविधुरतया रुचिमात्राऽभिनिविष्टतया च सर्वथा कलहायैव कल्पते । हितप्रधाना दैवीं सम्पदमभिजाता विवेकिन आर्याः । रुचिप्रधाना आसुरीं सम्पदमभिजाताः सङ्करिणोऽनार्याः । महामहेश्वरः परशिव एव स्वविलासायैव खलु भर्गोरूपया निजाऽभिन्नकलया निग्रहाऽनुग्रहतारतम्यं सङ्कल्प्य स्वात्मरङ्गभूमावार्याऽनार्यवर्णिकां परिगृह्य नाटयति जगन्नाटकमिति हि तथ्यतरम् । इयं भर्गोरूपा परशिवाऽभिन्ना निग्रहाऽनुग्रहमूलभूता कलैवाऽभिनवरमणीयतया कामकलेति महाकामेश्वरीति महात्रिपुरसुन्दरीति च साक्षात्कृतस्वरूपैः साम्प्रदायिकैराचार्यैरनुभूतस्वरूपैर्महर्षिभिः स्वरूपप्रतिष्ठितैः सना-

(हिन्दी)

कुल परम्परासे भारतभूमिको ही पूर्णतया अपना राष्ट्र मानने वाले, प्रशंसनीय बुद्धिरूपी धनसे समृद्ध, विद्वान्, आर्य लोग ही इस बातको समझ सकते हैं कि—नाना प्रकारके भोगोंके विस्तारसे मण्डित इस विश्वमें जो कुछ भी भेद अभेदका काल्पित क्षणिक आवेश है वह सब तथा आर्य अनार्य भेदका जो स्वाँग रचा गया हैं वह सब भी सर्व श्रेष्ठ परमाराध्य स्वयं प्रकट होने वाले विश्वका धारण पोषण करने वाले भैरव तथा भैरवीके अभिन्न-स्वरूप भाव और अभावकी विलक्षण भावनाके कारण प्रत्येक प्रकारसे अतिशय सुन्दर भगवान् शिवके सर्वोच्च सौभाग्यभूत अहम्महोरूपी (सृष्टिस्थिति संहार निग्रहानुग्रहकार) आत्मतेजसे ही उत्पन्न होता है ।

अत एव उन आर्योंकी आन्तरिक और वाह्य प्रयत्न परायणता शान्ति स्थापनाके लिए ही निर्भ्रान्त रूपसे दृष्टिगोचर होती है । अनार्यों की सम्पूर्ण आन्तरिक और वाह्य प्रवृत्ति हिताऽहित ज्ञानसे शून्य होनेके कारण उसमें केवल रुचिका अभिनिवेश है अतः वह कलहका ही कारण बनाती है ।

दैवीसम्पत्तिसे सहज सम्पन्न विवेकशील आर्य हितको प्रधानता देते हैं । परन्तु जिनके कुलमें आसुरी सम्पत्ति ही एकमात्र सम्पत्ति मानी जाती है वे साङ्कर्य दोष दुष्ट अनार्य जन रुचिको ही प्रधानता देते हैं । "महामहेश्वर परशिव ही आत्मानन्द के लिये ही भर्गो रूपिणी आत्मकलासे दमन और दयाके तारतम्यकी कल्पना करके आत्मरूप नाट्यशालामें आर्यअनार्य रूपोंकी रचनाकर इस संसार नाटककी सञ्चालना करते हैं । यह बात पूर्ण सत्य है । परशिवसे अभिन्न दण्ड तथा दयाका कारण यह भर्गो रूपिणी कला ही निज अभिनव-रमणीयताके कारण साक्षात्कृत स्वरूप

सनैः परमर्षिभिश्च ज्ञायते दृश्यतेऽनुभूयते प्रविश्यते च। निखिलमपि विश्वं निजपदेनाऽऽक्रम्य स्ववशे प्रतिष्ठापयन्तीं कामकलामेव क्रान्तिरित्यस्य नामधेयस्याऽन्वर्थत्वं विभावयन्तः केचिद्रहस्यविद आचार्याः क्रान्तिरित्येवं सम्भावयन्ते भवानीमिमाम्।

तदेतद्रहस्यं संक्षेपतोऽस्माभिः "श्रीक्रान्तिकौमुदी" प्रारम्भे मङ्गलपद्ये समुपश्लोकितम्। तथाहि तत्र—

शिष्टाऽनुग्रहदुष्टनिग्रहमिषात्कल्याणमातन्वती
विश्वस्य क्रमविक्रमाऽक्रममयी धर्मस्वरूपा शिवा ॥
आनन्दाऽमृतवर्षिणी शिवमहासत्ता चिदम्भोनिधि-
र्देवी क्रान्तिरुदारधीर्विजयतामार्या परा भैरवी ॥
इति ॥

विस्तरशश्च क्रान्तिविषये "श्रीक्रान्तिकौमुद्याम्" "श्रीराष्ट्रसञ्जीवने" श्रीराष्ट्रालोकभाष्ये च सुनिरूपितं तत्तत्रैव समवलोकनीयम्। भवतु। "कारणगुणाः कार्यगुणानारभन्ते" इतिरीत्या क्रान्तिमूलं सर्वमपि क्रान्तिप्रियमित्या च परमाणोरा च परममहतः सर्वत्र क्रान्तिर्विजृम्भते। तत्र स्वातन्त्र्यविकासतारतम्यमवलम्ब्य कल्पितजडाजडविभागविभाजिते पदार्थसार्थमात्रे क्रान्तिकर्तृत्वं; क्रान्तिकरणत्वं, क्रान्तिकार्यत्वं च व्यवस्थाविषयमवगाहते। करणपदे कार्यपदे चाऽऽरूढं वस्तु परतन्त्रमिति क्रान्तिकर्त्रुपदेशाऽनर्हमेव। स्वतन्त्रस्यैव कर्तृपदलाभसंभवात्। स्वतन्त्रा एव चाऽत्र क्रान्तिकर्त्रुपदेशविषये विनयग्राहिणः।

आर्याऽनुग्रहणाऽनार्यनिग्रहणेन विश्वस्मिन्नपि विश्वमण्डलेऽमङ्गलनिवृत्तिपूर्वकं मङ्गलस्थापनायै समुपास्यतया यां क्रान्ति समुपदिशन्ति तामेव संक्रान्तिरिति राष्ट्रवादिनो विनयाचार्यवर्याः संस्तुवन्ति। संस्तव एव चाऽयं तस्य तस्य सर्वस्याऽपि विधिकोटिप्रवेशपदं

साम्प्रदायिक आचार्योंके स्वरूपका अनुभव करनेवाले महर्षियों तथा आप्त प्रतिष्ठित सनातन परम ऋषियों द्वारा 'काम-कला' 'महाकामेश्वरी' 'महात्रिपुरसुन्दरी' के रूपमें जानी जाती है, देखी जाती है, अनुभव की जाती है और इसीमें लीनता प्राप्त की जाती है। कुछ रहस्यज्ञाता आचार्य अपने पदसे संपूर्ण विश्वको आक्रान्त कर उसे अपने वशमें रखती हुई उस भवानी काम कलाको ही 'क्रान्ति' शब्दका वास्तविक अर्थ समझते हैं और इसे ही क्रान्ति मानते हैं। इस रहस्यको हमने "क्रान्ति-कौमुदी" के प्रारम्भ में मङ्गलश्लोक में सङ्क्षेपसे उपनिबद्ध किया है। यथा—

सज्जनों पर कृपा और दुष्टोंके नियमनके व्याजसे संसार का कल्याण करती हुई, संसारके क्रम, विक्रम, और अक्रम को धारण करने वाली, धर्मस्वरूपिणी, कल्याणमयी, आनन्दसुधावर्षिणी शिवमहासत्ता चैतन्य समुद्र उदार बुद्धि वाली आर्या परा भैरवी क्रान्ति देवीकी जय हो।

क्रान्तिके विषयमें विस्तार पूर्वक तो 'श्रीक्रान्ति-कौमुदी' में तथा 'श्रीराष्ट्रलोक'के श्रीराष्ट्र-संजीवन भाष्यमें निरूपण किया गया है अतः वहीं उसका अवलोकन करना चाहिए कारणके गुणोंसे कार्यके गुणोंका प्रारम्भ होता है, इस नियमसे यह सम्पूर्ण विश्व, जिसका मूल क्रान्ति है, क्रान्तिप्रिय है। अतः परमाणुसे लेकर परम महत् तक सर्वत्र क्रान्तिका ही साम्राज्य है। स्वातन्त्र्यविकास अवलम्बन कर जड़-चेतनरूप कृत्रिम विभागमें विभक्त सम्पूर्ण पदार्थों में क्रान्ति, कर्ताके रूपमें करण (साधन) के रूपमें तथा कार्यके रूपमें व्यवस्थाका विषय है। करणरूपमें और कार्य रूपमें स्थित वस्तु दूसरेके अधीन होती है अतः उस रूपमें उनको क्रान्तिका उपदेश करना वयर्थ है। अतः कर्तृ शब्दका व्यवहार उसीके लिए होता है जो (क्रियाके करनेमें) पुरुष स्वतन्त्र होता है। क्रान्तिकारीके योग्य उपदेश अधिकारी स्वतन्त्र पुरुष के लिए ही हो सकते हैं। यतः क्रान्ति विषयक नीतिको ग्रहण करनेकी क्षमता उन्हींमें होती है। राष्ट्रवादी प्रवीण नीतिज्ञोंका कथन है कि आर्यों पर कृपा और अनार्योंका दमन करनेके कारण सम्पूर्ण संसारमें अमङ्गलकी निवृत्तके साथ-साथ मङ्गलकी स्थापनाके लिए जिस क्रान्तिकी उपासना विहित है वह क्रान्ति ही संक्रान्ति है।

लम्भयते संस्तुतं तं तमर्थम्। "यः स्तूयते स विधीयते" इति हि कर्ममीमांसाकुशलानां पण्डितानां राद्धान्तः। सतश्च संक्रान्तिसमुपासना हि नाम प्रशस्ततमं कर्मेति प्रियस्वातन्त्र्याणामार्याणां स्वभावसहजं कर्मेति निश्चयते।

तत्र भवतां भवतां पाठकमहाभागानां करकमलमलङ्कुर्वती संक्रान्तिपञ्चदशी चेयं सक्रान्तिस्तुतिपरकपञ्चदशपद्यात्मिका पुस्तिका विश्वकल्याणाय संक्रान्तिसमुपासनायमवश्यं सम्प्रेरयेदिति बाढं समाशास्महे।

अत्र हि खलु विश्वोन्नतिं राष्ट्रोन्नतिं स्वव्यक्तिसमुन्नतिं वा कामयमानानां विनयग्राहिणां कृते पर्याप्ताः समुपदेशाः सन्ति। अभाग्यवन्तोऽनार्याः केऽपि न नाम ऽऽद्रियेरन्निमां कृतिं ततश्च काऽस्माकं हानिः सम्भवेदिति त एव विभावयन्तु।

गीर्वाणवाण्यनभिज्ञानां कृते कविवर पं० श्रीनन्दकुमारशर्मविरचितेन हिन्दीभाषामयेन गद्यपद्यात्मकेनानुवादेन च समलङ्कृत्य सम्मुद्य प्रकाशिता चेयं कृतिः सर्वमपि भारतं जनमुपकरिष्यतीति दृढः प्रत्ययः। किमधिकेन पल्लवितेन। शमस्तु विश्वस्येति निवेदयति—

भवतामात्मरूपः—
अ० वा० आचार्य

अत एव राष्ट्रनीतिके आचार्य उस संक्रांतिकी भली प्रकार स्तुति करते हैं। जिस पदार्थकी अच्छी स्तुति (प्रशंसा) अथवा अच्छा परिचय कराया जाता है उस पदार्थकी वह प्रशंसा ही उस पदार्थको स्वीकार करनेमें प्रेरणा करती है, अर्थात् संक्रांति जैसा सर्वतः प्रशस्त कर्म स्वातन्त्र्य प्रिय आर्योंका स्वाभाविक पवित्रतम कर्तव्य हो जाता है। कर्ममीमांसाके कुशल पण्डितोंका सर्वश्रेष्ठ यही सिद्धान्त है कि—"जिसकी प्रशंसा हो वह विधेय है।"

माननीय पाठकोंके कर-कमलोंको अलंकृत करने वाली संक्रांति स्तुतिमय पन्द्रह पद्य वाली यह 'संक्रांति पञ्चदशी' नामकी छोटी सी पुस्तक संसारके कल्याणार्थ संक्रान्ति प्रेरणा करेगी, इस प्रकारकी हम सुदृढ़ आशा करते हैं।

इसमें विश्वकी उन्नति, राष्ट्रकी उन्नति, तथा वैयक्तिक उन्नतिके इच्छुक राष्ट्र-नीतिज्ञोंके लिए सत्क्षेत्रमें पर्याप्त उपदेश विद्यमान हैं। कुछ अभागे कलहप्रिय अनार्य लोग यदि इस कृतिका आदर न करें तो इसमें हमारी क्या हानि है यह वे ही लोग सोचें। जो संस्कृत नहीं जानते हैं उनके लिये इसका कविवर पं० नन्दकुमारजी शर्मा द्वारा विरचित गद्य-पद्यमय अनुवाद प्रकाशित किया गया है, जिससे सभी भारतीयोंका उपकार होगा, यह हमारा दृढ़ विश्वास है। अधिक विस्तार न करते हुए हम भगवान्‌से यही प्रार्थना करते हैं कि संसारका कल्याण हो।

अनुवादक—
श्री पं० प्रेमनिधि शास्त्री M. A.

[पृष्ठ १६ का शेष]

श्रीमद्विक्रमभूपतेरथगते लीनेनरेवत्सरे
पञ्चम्यां विधुवासरे सितदले वैशाखमासे शुभे।
आचार्योऽमृतवाग्भवेन रचिता संक्रान्तिभक्तानियं
संक्रांतिस्तुतिवृत्तपंचदशिका प्रीणातु पुष्णातु च॥१६

संवत् गुणनभव्योमभुज शुभ वैशाख सुमास।
शुक्लपक्ष तिथि पञ्चमी बासर चन्द्र प्रकाश॥
परमपूज्य आचार्य चरण श्रीअमृतवाग्भव
बिरची शुभ संक्रान्तिपञ्चदशिका यह अभिनव॥
शुभ संक्रान्ति सुभक्त जननकों हो सुखकारी
करहि तुष्ट अरु पुष्ट विभो! यह विश्व मँझारी॥१६

शुभ वैशाख शुक्ला पंचमी चन्द्रवार विक्रम संवत् २००३ को श्री १०८ मान् आचार्य अमृतवाग्भवजी द्वारा विरचित यह पन्द्रह श्लोकों वाली संक्रान्तिकी स्तुति संक्रान्ति भक्तोंको तुष्ट और पुष्ट करे॥ १६॥

* श्रीः *

महामहिम आचार्य
श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीता

श्रीसंक्रान्तिपञ्चदशी

[गद्यपद्याऽनुवादसहिता]



राष्ट्राणामखिलपुमर्थहेतुभूतां
जन्तूनां पुरुहितकारिणीमचिन्त्याम् ॥
विद्वांसो ! निखिलजगत्सुशान्तिधात्रीं
संक्रान्तिं भजत निरन्तरं भवानीम् ॥१॥

भजहु सदा संक्रान्तिरूप भगवती भवानी
यही राष्ट्रके हेतु चतुर्विध फलकी दानी ॥
सर्वभूतहितकारि चराचर कँह कल्यानी
शान्तिमूल आधार राष्ट्रनकी सुखखानी ॥१॥

संक्रान्तिशब्द सं+क्रान्तिसे बना है। क्रान्तिका अर्थ है किसी परिवर्तनकी अभिलाषासे हलचलका प्रादुर्भाव। इसके साथ 'सं' +का संयोग सम्यक् अथवा आर्यप्रतिपादितका बोधक है। अतः संक्रान्तिका अर्थ होता है वैध अथवा आर्यानुमोदित क्रान्ति। स्पन्दनहीन जीवन असम्भव है, इसे माननेमें किसी भी बुद्धिमान्‌को आपत्ति नहीं हो सकती। किन्तु वह स्पन्दन (हल चल) यदि सम्यक् अथवा आर्यानुमोदित न हो तो सन्मार्ग पर अग्रेसर करने वाली नहीं हो सकती। अतः यह स्पष्ट है कि संसार आज क्रान्ति क्रान्तिका चीत्कार कर रहा है, किन्तु उसे समझना चाहिये कि राष्ट्रहित केवल क्रान्तिके द्वारा नहीं, अपितु संक्रान्तिके द्वारा ही साध्य हो सकता है। संक्रान्तिके बिना मनुष्य धर्म अर्थ काम मोक्ष कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। संक्रान्ति देवी ही समस्त भुवनोंकी मूलाधार है। यही सर्वभूतहितकारिणी है। अतः हे विद्वानों ! ऐसा समझ कर सदैव क्रान्तिका नहीं संक्रान्तिरूपिणी भगवती भवानीका भजन करो ॥१॥

आर्याणां सकलजगत्पुरोहितानां
विप्राणां हृदयगुहासु गूढगूढाम् ॥
स्वच्छन्दां परशिवरूपिणीं पुमांसः !
संक्रान्तिं भजत निरन्तरं जवेन ॥२॥

भजहु सदा सहवेग सतत संक्रान्ति भवानी
निर्मल पूर्ण स्वतंत्र विभूरूपिणि कल्यानी ॥
जगतपुरोहित आर्य विप्र हिय गूढ़ गुहामें
रख सयत्न जिहिं गोय निरन्तर सतहिय ध्यावें ॥२॥

यह बात निर्विवाद है कि संसारमें आर्य लोग जगद्गुरु हैं, और जन्म संस्कार तथा विद्यामें सर्वश्रेष्ठ हैं। इसीलिये समस्त संसारका सम्पूर्ण रूपसे सबसे पहले हित करनेके कारण पुरोहित पद पर एकछत्र साम्राज्य इन्हींका हो सकता है। यह संक्रान्ति अनिगूढ़रूपसे सदैव उन्हीं विश्ववन्द्य आर्योंकी हृदयगुहामें छुपी रहती है। इसके ऊपर किसी का नियन्त्रण नहीं। यह सर्वतन्त्रस्वतन्त्र और अति निर्मला है। ध्यान रहे कि 'क्रान्ति' समल हो सकती है, किन्तु संक्रान्ति में तो मलिनताका आभास हो ही नहीं सकता। कारण कि इसका निवास ही ऐसे परम पावन थलमें है, कि जहां किसी भी प्रकारका मालिन्य असम्भव है। फलतः संक्रान्ति परशिव रूपिणी है। अतः हे पुरुषों ! यदि आप सच्चे विमर्शके हेतु लालायित हों तो अति वेगके साथ भगवती संक्रान्तिका भजन करो ॥२॥

सर्गादौ प्रकटितनैजयज्ञरूपां
कल्याणीं भुवनहिताय कामधेनुम् ॥
वात्सल्यात् सुरनरतिर्यगात्मभूतां
संक्रान्तिं हृदि सुजनाः! सदा वृणुध्वम् ॥३॥

सृष्टि आदिमें यज्ञरूप निज छटा प्रकासी
है कल्याण स्वरूप विश्वहित कामदुहा सी ॥
सुरनर तिर्यगआत्मभूत संक्रान्ति भवानी
भजहु निरन्तर इहि पुरुषार्थफलदायक जानी ॥३॥

इस संक्रान्ति भवानीने सृष्टिके आरम्भमें अपने आपको यज्ञ रूपसे प्रकट किया। यज्ञका अर्थ होता है—"आवश्यक वस्तुको यथास्थान यथोचित रूपसे पहुंचाना" इस प्रकारके समस्त कर्म यज्ञ हैं। जिस वस्तुकी जहां आवश्यकता नहीं उसका वहां पहुंचाना ही यज्ञका नाश है। भगवान् कृष्णने गीता में कहा है—[यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः] इस पद्यसे यह स्पष्ट हो जाता है कि उचित कर्म ही सच्चा यज्ञ है। यही है संक्रान्तिका आदि रूप। श्रीमद्भगवद्गीतामें इसी यज्ञरूपिणी संक्रान्तिका उल्लेख तृतीय अध्यायके दशम श्लोकमें—[सहयज्ञाः प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेषवोऽस्त्विष्टकामधुक्] इस रूपमें किया गया है। अतः यह सर्वप्रथम यज्ञरूपमें प्रकट हुई भगवती संक्रान्ति ही विश्व हितके लिये कामधेनु और सुर नरों में ही नहीं पशु पक्षियोंमें भी आत्मभूत है। अतः हे सज्जनो! इस परम कल्याणरूपिणी संक्रान्तिको ही सदा हृदय से अपनाओ ॥ ३ ॥

धीः श्रीः स्त्री सततमिहास्ति तस्य हस्ते
यद्भूते ननु सकला स्वतन्त्रताऽस्ति ॥
स्वायत्ते भवति च सा स्वराष्ट्र एव
संक्रान्तिं तदधिगमाय भावयन्तु ॥४॥

धी श्री दारा तिहुँ स्वतन्त्रके हाथ रहावैं
हो जो राष्ट्र स्वतन्त्र तहाँ के नर इहि पावैं ॥
याही सों स्वातन्त्र्यप्राप्ति निज ध्येय बनावौ
सन्तत मन वच कर्म मातु संक्रान्ति हि ध्यावौ ॥४॥

यह निर्विवाद है कि बुद्धि लक्ष्मी और स्त्री सदैव उसीके अधिकारमें रह सकती है, जिसे पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो। वह स्वतन्त्रता हमें अपने स्वतन्त्रराष्ट्रमें ही प्राप्त हो सकती है। कारण कि प्रथम तो जिस वस्तुको पराया समझा जाता है उसमें यथार्थ ममत्व ही नहीं हो सकता। और यदि येन केन प्रकारेण ममत्व भी हुआ तो उसमें वह आत्मीयता का भाव नहीं आता, जो वास्तवमें अपनेके हित उदित होता है। स्वराष्ट्रके साथ आत्मीयता उत्पन्न करनेके हेतु प्रथम स्वातन्त्र्य अति आवश्यकीय है। क्योंकि जहां आत्मीयता नहीं वहां विमर्श और कल्याण आकाश-कुसुम ही है। फलतः विमर्श और कल्याणकी जननी है आत्मीयता और आत्मीयता स्वातन्त्र्यके बिना प्राप्त नहीं हो सकती; भगवती संक्रान्ति उसी स्वातन्त्र्यकी जन्मदात्री है। ऐसा समझ कर सदैव संक्रान्तिकी उपासना करनी चाहिए ॥ ४ ॥

विश्वेषां विनयविदो विदां वरिष्ठाः
पाप्मानं परवशतां परामृशन्तः ॥
आमूलं तदुपशमाय पापहन्त्रीं
संक्रान्तिं सुरसरितं सभाजयन्तु ॥५॥

विद्वद्वर वर विनयशील मनमें यह जानैं
पारतन्त्र्य है महापाप ध्रुव सत्य प्रमानैं ॥
मूलोच्छेदक तासु सकल अघओघ नशावनि
करिहैं श्री संक्रान्ति गङ्ग स्वागत मन भावनि ॥५॥

पारतन्त्र्यसे परे संसारमें कोई महापातक नहीं है। परतन्त्रता ही लोकमें जितने भी महापाप हैं सबकी जन्मदात्री है। जिस प्रकार भगवती भागीरथी त्रिविध ताप पापसंहारिणी है, ठीक उसी प्रकार भागीरथी रूपिणी संक्रान्ति

पारतन्त्र्यको समूल नष्ट करने वाली है, ऐसा जान कर बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ एवं विनय सम्पन्न लोग सदैव गङ्गारूपिणी संक्रान्तिका स्वागत करें ॥५॥

जागर्तिं जनयति वीरवृन्दवन्द्या-
मन्यायं विदलयितुं समूलघातम् ॥
प्राणेषु प्रकटयति प्रचण्डशक्तिं
संक्रान्तिं भजत सदैव तां भवानीम् ॥६॥

वन्दित वीरसमूह जागृतिकी है जन
अन्यायादि समूल मातु संक्रान्ती ह
प्राणन माँहि प्रचण्ड शक्तिकी है सञ्चारिनि
भजहु अतः संक्रान्ति भवानी जनमनहारिनि ॥६॥

संक्रान्ति (वैध आर्य क्रान्ति) ही वीरवृन्दवन्दनीय जागृतिकी जननी है। जब चारों ओर संसारमें अन्याय प्रसार होता है तभी आर्यहृदयस्थित माँ सक्रान्ति उस प्रसरित अन्यायको समूल नष्ट करनेके हेतु समाजके नेताओं एवं समाजके हृदयमें, प्राणोंमें एक प्रचण्ड शक्तिका प्रादुर्भाव करती हुई जागृतिको जन्म देती है, और उसी संक्रान्तिजा जागृतिके द्वारा उस अन्यायका अन्त होकर न्यायकी व्यवस्था होती है, ऐसा जान कर उस संक्रान्ति रूपिणी भगवती भवानीका भजन करो ॥६॥

वीराणां ननु हृदयानि धारयन्तीं
दुष्टानां दरदलितानि दारयन्तीम् ॥
भिन्दन्तीं भयभरितानि कातराणां
संक्रान्तिं प्रणमत मानवाः ! पराम्बाम् ॥७॥

प्रणवहुं जन संक्रान्ति जगतकी मातु भवानी
वीरनके हिय माँहि करहि जो धैर्य प्रदानी ॥
भययुत कायर हृदय कर रही छिन्न भिन्न है
कष्ट दे रही हृदय खलन भय जिन्हन खिन्न है॥७॥

वीरोंके हृदयमें अविचल स्रोत प्रवाहित करने वाली और अवसर आने पर उन्हें अविचल धैर्य प्रदान करने वाली संक्रान्ति ही है। दुष्टोंके भयसे भयातुर हृदयोंके भयको भगाने वाली कायरोंके हृदयोंकी कायरताको छिन्न-भिन्न करने वाली भी यही संक्रान्ति है। अतः हे मनुष्यों ! जगन्माता संक्रान्तिको सदा सच्चे हृदयसे नमस्कार करो ॥७॥

शूराणां रणमरणेन चामराणां
धीराणां जनशरणाय सादराणाम् ॥
वीराणां रणवरणे विभाकराणां
संक्रान्तिं कलयत कामकल्पवल्लीम् ॥८॥

कलियुगमें है कल्पलता संक्रान्ति भवानी
रण मरणासों शूर लहैं सुरता सुखदानी ॥
धीर प्राण रक्षामें सादर सतत रहावैं
वीर युद्ध अपनाय सूर्यसम प्रभा दिखावैं ॥ ८॥

इसी विश्ववन्द्या माँ संक्रान्तिकी प्रेरणासे शूर लोग युद्ध यज्ञमें प्राणोंकी आहुति प्रदान कर देवत्व प्राप्त कर लेते हैं। वीर लोग संग्रामको प्राप्त होकर अमित तेजस्वी और यशस्वी हो भास्करकी भाँति चमकते हैं। धीर पुरुष संसारके रक्षणके हेतु निरन्तर सादर रहते हैं। सँक्रान्ति ही इन सबोंकी कामनाओंको पूर्ण करनेके हेतु कल्पलता है। अतः उसी सँक्रान्ति भगवतीको सदैव विकसित करनेमें प्रयत्न शील बनें ॥८॥

ध्वंसाय प्रभवति सर्वसाध्वसानां
क्षेमाय प्रभवति सर्वसम्पदानाम् ॥
योगाय प्रभवति सर्वकामनानां
संक्रान्तिं भजत हिताय तां पुमांसः ! ॥९॥

निज हित कौं हे पुरुष ! भजो संक्रान्ति भवानी
जो है सर्व समर्थ सकल भवभयन भजानी ॥
रक्षक जो है सर्व सम्पदाकी सुखकारी
यासों सकल पदार्थप्राप्तिके हों अधिकारी ॥९॥

भगवती सँक्रान्ति समस्त भव भयोंका शमन करनेमें समर्थ है । मानव हृदयाकाशमें इसके उदित होते ही सम्पूर्ण भय इस प्रकार तिरोहित हो जाते हैं जैसे भगवान् भुवन-भास्करके उदय होते ही गहन तम अन्धकार पल मात्र भी नहीं ठहर पाता । सँसारमें सभी कामनाओंकी पूर्ति और सर्व सम्पदाओंकी रक्षा भी इसीके द्वारा हो सकती है । अतः हे पुरुषो ! सब प्रकारसे निज हितार्थ सँक्रान्ति देवीका ही भजन करो । ९॥

साधूनां ननु परिपालनाय लोके
दुष्टानां खलु दमनाय दुर्मदानाम् ॥
नाशार्थं कलिकलुषाढ्यदुर्जनानां
संक्रान्तिं सुकृतिवरा भजन्तु दुर्गाम् ॥१०॥

साधुलोकमें सुजन त्राण अरु दुष्टदमन हित
कलिपातकन समृद्ध दुष्ट जन नष्ट भ्रष्ट हित
सत चितसों नित भजहि सकल जग धन्ध बिहाई
शुभ संक्रान्तिस्वरूप भगवति दुर्गामाई ॥१०॥

संक्रान्ति सत्पुरुषोंकी रक्षाके लिए अक्षय कवच है । दुष्टोंका दमन करनेके लिए अजेय अस्त्र है, और कलिकाल के पातकोंसे समृद्ध हुए दुर्जनोंको नष्ट-भ्रष्ट करनेके लिए साक्षात् महिषासुरमर्दिनी असुरनिकन्दिनी मां दुर्गा स्वरूप है । अतः सत्कर्म प्रेमी सत्पुरुषों ! सदैव संक्रान्तिरूपिणी भगवतीदुर्गाका भजन करो ॥१०॥

दारिद्र्यं दलयति दुःखदानदक्षं
दौर्भाग्यं दहति दृढं च दौर्मनस्यम् ॥
दौश्चित्त्यं शमयति दुष्टदुर्हृदोत्थं
संक्रान्तिं प्रणयत तां परावरज्ञाः ! ॥११॥

दुर्मनस्क दुर्भाग्य भस्म पलमें करती है
दुःखदानमें दक्ष प्रबल दारिद हरती है ॥
दुष्टजनित दौश्चित्त्य शमन संक्रान्ति करावै
अतः परावरविज्ञ प्रेमयुत इहिं अपनावै ॥११॥

संसारमें जितने प्रकारके दुःख हैं उन सबको उत्पन्न करने में दरिद्रता ही एक मात्र मूल कारण है । भला ऐसा कौन सा दुःख होगा जो दरिद्रको न सताए । संक्रान्तिके सम्मुख वह दारिद्र्य टिक ही नहीं सकता । दुर्मनस्कता और दुर्भाग्य इसके सम्मुख भागे-भागे फिरते हैं । दुष्टोंके हृदयोंसे उदित हुई दुश्चित्तताको यह शमन करती है । इसलिये हे परावरज्ञ ! महानुभावों ! इसी संक्रान्तिसे प्रेम करिये और इसीको विकसित करिये ॥११॥

दुर्भिक्षं दृढदलदृप्तदस्युदत्तं
देशेषु प्रतिपलघस्मरं प्रसारि ॥
दृष्ट्वाऽपि व्यथितमनाः सदायंजुष्टां
संक्रान्तिं जगति भजेत को न विद्वान् ॥१२॥

दर्पयुक्त दृढदली आततायिनके द्वारा
सकलदेशमें होत प्रबल दुर्भिक्षप्रसारा ॥
लखि अस को विद्वान् जासु हिय व्यथा न मानै
आर्य पूज्य संक्रान्ति भजहिं नहिं जो अस जाने ॥१२॥

अनार्य आततायी लोग दृढ़ दल बना-बना कर संसारमें ऐसे कुकृत्य करते हैं, जिनके फलस्वरूप लोकमें प्रतिदिन दरिद्र ही नहीं फैलता अपितु प्रति पल अधिकाधिक प्रसारित हो प्राणि मात्रको अपनी विशाल उदर गुहामें रखने का प्रबल प्रयत्न करता है। उस प्रबल प्रचण्ड विश्वविध्वंसकारी दुर्भिक्षको देखकर कौन ऐसा सहृदय विद्वान् होगा जिसका विशाल हृदय पीड़ित न हो और उस पीड़ासे व्यथित हो जो उस महान् दुर्भिक्षको समूल शमन करने वाली आर्योंकी परमप्रिय संक्रान्तिका भजन न करें। ॥ १२ ॥

पाखण्डं प्रसृमरमज्ञलोकचित्त-
ध्वान्तोर्णं मृदुमतिमुण्डकैः प्रकीर्णम् ॥
आमूलं विरमयितुं पदार्थविज्ञाः
संक्रान्तिं परममुपायमाश्रयन्ते ॥ १३॥

मूर्ख प्रवंचन कारिन सों नित होत प्रसारा
अज्ञनके हिय व्याप्त प्रबल पाखण्ड अपारा।
मूलोच्छेदन करन तासु विद्वज्जन जानी
आश्रय श्रद्धायुक्त लहैं संक्रान्ति भवानी ॥१३॥

प्रवंचन शील मनुष्योंके द्वारा प्रसारित पाखण्ड अज्ञ लोगोंके हृदयों पर अपना प्रभाव स्थापित कर लेता है। उसीके परिणामस्वरूप लोकमें अनेकों प्रकारके नैतिक एवं धार्मिक विप्लवोंका प्रादुर्भाव हुआ करता है और वह संसारको हानिकर ही सिद्ध होते हैं। माँ सँक्रान्ति ऐसे अज्ञ न् पाखण्डोंको समूल नष्ट करने वाली हैं। अतः विद्वान् लोग ऐसे पाखण्डोंको शमन करनेमें सर्वश्रेष्ठ उपाय संक्रान्तिका ही आश्रय ग्रहण करते हैं ॥ १३ ॥

सन्नीतिप्रथनपरम्पराविमर्श
प्रज्ञानप्रखरधियां सतां धुरीणाः ॥
संसारं सुखयितुमेतमारभन्ते
संक्रान्तिं कलिमलखण्डनीं वरेण्याम् ॥१४॥

प्रखरबुद्धि सत्पुरुष श्रेष्ठ सन्नीतिप्रचारन
अति पुनीत प्रज्ञान विमर्शहि विश्वप्रसारन ॥
करँहि सदा आरम्भ मातु संक्रान्ति भवानी
कारण कलिमल प्रबल यही है सकल नशानी ॥१४

संसारमें केवल संक्रान्ति ही सर्व प्रकारके कलिमलोंको नष्ट करनेमें समर्थ है। इसी लिये सत्पुरुषोंमें श्रेष्ठ विमर्श प्रज्ञानमें तीव्र बुद्धि वाले शुभ कल्याणकारी नीतिके पुनः-पुनः प्रचारार्थ भगवती संक्रान्ति का ही आश्रय ग्रहण करते हैं ॥ १४ ॥

स्वातन्त्र्यं कुमतिदुरापमार्यजुष्टं
शान्त्यर्थं जगति विहाय नाऽस्त्युपायः ॥
लोकानां हृदयवतां जनास्तदर्थं
संक्रान्तिं शरणमुपामिमां व्रजन्तु ॥१५॥

थापन जगमें शान्ति सुहृद् जनसों सम्मानित
दुर्बुद्धिन दुष्प्राप्य आर्यप्रिय सेवित जानित ॥
अस स्वतंत्रता लहन न दूसर और उपाई
उमारूपि संक्रान्ति शरण लहिये जन धाई ॥१५॥

संसारमें शान्ति स्थापन करनेके हेतु सहृदय तथा सुबुद्धि लोगों द्वारा सम्मानित और दुर्बुद्धियोंको दुष्प्राप्य आर्यप्रिय स्वातंत्र्य केवल संक्रान्तिके द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। इसलिये स्वातन्त्र्यप्रिय सहृदय महानुभाव इस उमारूपिणी संक्रान्ति देवीकी ही शरण जायें, तभी राष्ट्र कल्याण सम्भव है ॥ १५ ॥ (शेष पृष्ठ ११ पर)

स्वतन्त्रताका संरक्षण

[लेखकः—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री M. A., M. O. L.]

अंग्रेजी राज्यमें कांग्रेसके अतिरिक्त और भी अनेक संस्थाएं कांग्रेसके साथ मिलकर स्वतन्त्रताके युद्धमें भाग लेती रहीं। उनमेंसे अनेक हिन्दु संस्थाओंके सदस्य पारस्परिक मत-भेदको एक ओर रखकर कांग्रेसका साथ देते रहे। अब जबकि अंग्रेजी शक्तिका यहांसे निर्वासन हो गया तो कुछ संस्थाओंने कांग्रेसका विरोध करना आरम्भ किया। पिछले सहस्र वर्षोंमें हमारा राष्ट्र अवनतिकी ओर ही जाता रहा। राष्ट्रमें हिन्दु जनताका आधिक्य है। यदि हिन्दु उन्नत हों तो राष्ट्र भी उन्नत हो सकता है। वस्तुतः राष्ट्र और राष्ट्रके निवासी दो भिन्न पदार्थ नहीं, दोनों एक हैं। हमारी अवनतिके दो कारण थे। सबसे पहला और बड़ा कारण हमारी परतन्त्रता था। उस परतन्त्रताकी बेड़ियोंको हमने भगवान्‌की कृपासे तोड़ डाला। हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की। अब उस स्वतन्त्रताकी रक्षाके उपाय हमें सोचने हैं। इस समय शासन पर लांछन लगाने वाले बहुत हैं। कोई दोष लगाते हैं कि शासन बहुत शीघ्र साम्यवादको चालू क्यों नहीं करता। दूसरे शासन पर नपुंसकताका दोष लगा रहे हैं। कुछ लोग भाषाओंके आधार पर प्रांतों के विभाजनकी चिन्तामें लगे हैं। कुछ लोगोंके हृदयमें पाकिस्तानको अपने अपराधों का दण्ड देनेकी चिन्ता लगी है। मैं सभी हिन्दु संस्थाओंसे प्रार्थना करता हूँ कि वे परतन्त्रताके रोगके निदानको पहले ढूँढे, और सबसे पहले उसका उपाय सोचे, हम परतन्त्र क्यों बने। दसवीं शताब्दी में हम वीरतामें, बुद्धिमें, विद्यामें, धनमें किसीसे पीछे नहीं थे। तीनों राष्ट्रशक्तियाँ हमारे पास थीं। परन्तु त्रुटि एक थी कि हमारे विशाल राष्ट्रमें कोई शक्तिशाली केन्द्रीय शासन नहीं था। इसी कारण सर्वशक्तिसम्पन्न होते हुए भी हम परतन्त्रताके वशीभूत बन गये। इसलिए हिन्दु-संस्थाओं का यही कर्तव्य होना चाहिए कि केन्द्रीय शासन को शक्तिशाली बनानेमें सहयोग दें। और कोई राजनैतिक कर्तव्य उनके लिए उचित नहीं। हो सकता है कि राजनैतिक दृष्टिकोणमें उनका वर्तमान शासनसे मतभेद हो, परन्तु इस तुच्छ बातके लिए उन्हें शासनको निर्बल बनाने का कोई प्रयत्न नहीं करना चाहिए। क्योंकि ऐसा करनेसे एक सहस्र वर्षके पश्चात् पाई हुई स्वतंत्रताके पुनः खोनेका भय है। जिन नेताओंके नेतृत्वमें हमने स्वतन्त्रता को प्राप्त किया उन्हीं के नेतृत्वमें हम इस प्रिय स्वतन्त्रताकी रक्षा भी कर सकते हैं। हमारे शासनका भी यही कर्तव्य होना चाहिए कि इस समय छोटे-छोटी बातोंकी ओर अधिक ध्यान न दें। जिस प्रकार हो उसी प्रकारसे राष्ट्र शक्तिका संचय करे। सबसे पहले राष्ट्रकालीकी उपासना आवश्यक है। हमारे पास एक विशाल सेना और असंख्य सेना-साधन होने चाहिएँ। पार्थिव सेनाके अतिरिक्त एक विशाल आकाश सेना और समुद्र सेना अत्यन्त आवश्यक है। इसके अनन्तर शासनका दूसरा काम होना चाहिए—राष्ट्र लक्ष्मीकी उपासना शासनको धन वृद्धिका प्रयत्न करना चाहिए। शासन दरिद्र और ऋणी नहीं होना चाहिए। व्ययसे बहुत अधिक आय होनी चाहिए। राष्ट्र कोष सदा भरा रहना चाहिए इसके उपाय शासनको सोचने चाहिएँ। शासनका तीसरा कार्य राष्ट्र सरस्वतीकी उपासना है। राष्ट्रके छोटेसे लेकर बड़े संचालक तक सभी कर्मचारी बुद्धिमान् और विद्यावान् होने चाहिएँ। शासन के कर्णधारोंको देखना चाहिए कि राष्ट्रके सभी अधिकारी बुद्धिमानोंकी ही खोज में हैं, अथवा सिफारिशी टट्टुओंकी।

केवल इतना ही नहीं शासनको राष्ट्रके सभी नवयुवकों को तीन शक्तियोंकी उपासना सिखानेके क्रम आरम्भ करने चाहिएँ। पाठशाला और विद्यालयोंमें सैनिक शिक्षा और स्वास्थ्यरक्षाकी आयोजनाएँ अभीसे चालू हो जानी चाहिएँ। राष्ट्रके प्रत्येक व्यक्तिको धनाढ्य बनानेकी आयोजनाएँ भी चलाई जानी चाहिएँ। नई और वास्तविक शिक्षाका कोई आयोजन शीघ्र सन्नद्ध हो जाना चाहिए और उसके संचालनके प्रबन्धके उपाय भी सोचे जाने

चाहिएँ। ये तीन मुख्य उपाय हैं जिनसे राष्ट्र समृद्ध हो सकता है। इन उपायोंसे ही हम स्वातन्त्र्यकी रक्षा कर सकते हैं। इन तीनों उपायोंको चालू करनेका भार शासन पर है, यह शासनका ही कर्तव्य है। लोगों और लोगोंकी संस्थाओंका कर्तव्य इस बातमें केवल इतना ही है कि इस शुभ कार्यमें शासनका हाथ बटाएँ, कोई अड़चन उपस्थित न करें। शासनको चाहिए कि इन तीन उपायोंके अतिरिक्त सामाजिक और धार्मिक समस्याओंमें इस समय अपने आपको न फँसाए। हिन्दुविवाह, उत्तराधिकार, मन्दिरप्रवेश, प्रान्तोंका पुनर्विभाजन, नये शासनविधानको चलाना, इत्यादि ऐसे कार्य हैं जिनको हम अभी कमसे कम पांच वर्ष तक न छूएं तो कोई भी हानि नहीं। राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपिका प्रश्न भी इस समय इतने गौरवका नहीं। इस विषय पर अभी शासनको या लोगोंकी संस्थाओंको अपनी शक्तिको क्षीण नहीं करना चाहिए। इस समय राष्ट्रशक्तिकी ही पूजाका समय है। पांच वर्ष तक नवीन ढङ्गकी शिक्षा चालू हो जाए, उसके अनन्तर देखा जा सकता है कि किस भाषामें और किस लिपिमें राष्ट्रव्यापकता अधिक आ रही है। ये सभी काम धीरे-धीरे हो सकते हैं। इस कारण हिन्दु संस्थाओंको इन कार्योंके लिए शासन पर दबाव नहीं डालना चाहिए। इस समय राष्ट्रशक्ति-निर्माणका जो भार शासनके सिर पर है, उसको हलका करना हमारा कर्तव्य है भारी बनाना नहीं।

हमारी अवनतिका दूसरा कारण है हमारे सामाजिक दोष। यह काम इस समय मुख्यतया हिन्दु संस्थाओंका है। हमारा समाज सैंकड़ों वर्षोंकी दासताके कारण सहस्रों दोषोंका घर बना हुआ है। इन दोषोंको दूर करना हिन्दु महासभा, राष्ट्रिय स्वयंसेवक-संघ, आर्यसमाज, सनातनधर्म-सभा और हिन्दी या संस्कृतकी सभाओं आदि प्रसिद्ध संस्थाओंका कर्तव्य है। यह काम इस समय मुख्यतया लोगों की संस्थाओंका है शासनका नहीं। हां शासनका कर्तव्य है कि इन संस्थाओंको इस काम में सहायता करे। ये दोष असंख्य हैं। हिन्दू-समाजमें इस समय धर्मका प्रचार कोई नहीं करता। आधुनिक नवयुवकोंमें से दश प्रतिशत भी यह नहीं जानते कि हिन्दु किसे कहना चाहिए। सैंकड़ोंमें कोई एक होगा जिसने भगवद्गीताका अर्थ पढ़ा हो। सहस्रोंमें कोई ऐसा होगा जो संस्कृत भाषा को जानता हो। जब तक हिन्दु संस्कृत-भाषाको न जाने तब तक उसका हिन्दुत्वका अभिमान एक अनधिकार चेष्टासी है। हिन्दु युवकोंका चरित्र-निर्माण कितना शिथिल है यह सभी जानते हैं। हिन्दुओंमें शम, दम, आदि सात्विक सम्पदाएं कितनी बढ़ रही हैं यह किसी से छिपा नहीं। हममें धर्मका तत्त्व कितना है और उसका आडम्बर और दम्भ कितना है यह कहने की आवश्यकता ही नहीं, यह तो रही धर्मकी बात। अब अर्थ को लीजिए। दरिद्रसे श्रीमान् पर्यन्त धनका कितना दुरुपयोग करते हैं। धनकी तीन गतियां होती हैं, दान, भोग और नाश। यदि हम दान करते तो कोई हमारा भाई भूखा नहीं मरता। अनाथ बालकों और विधवाओंकी वह दशा न होती जो हम देख रहे हैं। प्रत्येक हिन्दुको वास्तविक धर्मकी शिक्षा बिना आयासके मिल सकती। धन हमारे पास बहुत है पर हम उसका दान नहीं करते। भोग भी यदि करते हैं तो उचित रीतिसे नहीं। अपने खाने पीने पर और बाल बच्चोंको खिलाने पिलाने पर इतना व्यय नहीं करते जितना कि ठाट बाट, बाबूपन और आडम्बर पर। घी दूध पर इतना व्यय नहीं करते जितना पान सिग्रैट पर। इस कारण जिसे हम भोग मान रहे हैं वह भोग नहीं वह तो रोग है। देखिए बीसों वर्षोंकी कमाई एक विवाहमें स्वाहा हो जाती है। यह नाश नहीं तो क्या है। अपना रक्त सुखा-सुखा कर सोना चान्दी इकट्ठा करके लड़कियोंका विवाह करते हैं। वह सोना चान्दी उनको किस काम आता है। केवल जीवन भर उसकी रक्षा करनी पड़ती है और मर कर फिर पुत्रियों या पौत्रियोंको दिया जाता है। यह धनका नाश नहीं तो क्या है। काम तो अर्थके ही आश्रित होता है। जब अर्थकी व्यवस्था अच्छी न हो तो कामकी कैसे हो सकती है। सभी कामनाएं हृदयमें ही शान्त हो जाती हैं। सामाजिक बन्धनोंका इतना भार हृदय पर आ पड़ता

है कि शुभ कामनाएं फिर भी उठा नहीं सकतीं। चरित्रहीनताके कारण और असमय में तथा अनुचित रीतिसे दाम्पत्य कामका सेवन करनेसे वह वासना भी शान्त नहीं होती, उससे कभी सन्तोष नहीं होता। जहां धर्म अर्थ और कामको भी विकासका अवसर नहीं मिलता वहां मोक्षका नाम ही कौन ले।

इसके अतिरिक्त, स्त्रियोंकी दुर्दशा, विधवाओंकी आहें, छूतछातका आडम्बर, पारस्परिक फूट, भ्रातृभाव का न होना, बढ़ते हुए प्रान्तीयताके विचार ऐसे दोष हैं कि यदि इनका उपाय न किया जाए तो सारे राष्ट्र को मिट्टीमें मिला सकते हैं। इस कारण अपनी हिन्दु संस्थाओंसे यही प्रार्थना है कि राजनतिक समस्याओं को अपने शासनके सिर पर छोड़ कर अपनी शक्ति थोड़ी सामाजिक समस्याओंकी ओर लगाएं। विशेष करके राष्ट्रियस्वयं सेवक-संघ एक ऐसी सस्था है, जो ग्राम-ग्राम और नगर-नगरमें व्यापक है। यदि यह संस्था अपने मस्तिष्कको राजनतिकी ओरसे हटा कर सामाजिक समस्याओंकी ओर लगाए तो सचमुच हिन्दु जाति और भारत राष्ट्रका उद्धार कर सकती हैं। यह हो सकता है कि संघके स्वयंसेवक सामाजिक कार्योंमें सुशिक्षित न हों, परन्तु संघका जितना विस्तार है उसका विचार करते हुए यह बहुत ही सरल काम प्रतीत होता है। जैसे संघने स्वयं-सेवकोंको राजनैतिक कार्यमें शिक्षा दी है वैसे ही सामाजिक कार्यमें भी दे सकता है। इस कार्यमें शासन से भी संघको सहायता मिल सकती है। इस विषयमें संघके बड़े-बड़े केन्द्रीय नेताओं और अधिकारियोंसे प्रार्थना है कि ठण्डे मस्तिष्कसे विचार करके देशके विभाजन दुःख को छोड़े। जो होना था वह हो गया। अब इस प्रकारकी नीतिसे उसका कोई भी प्रतीकार नहीं हो सकता। यदि वे देश को पुनः एक बनाना चाहते हैं तो यह ईर्ष्या और विद्वेष से हो नहीं सकता। उसके लिए भी हमें आवश्यक होगा कि हम फिर सच्चे हिन्दु बनें; जैसे कि हम उस समय थे जिस समय हमारे समाजने शक और हूण जैसी बबर जातियोंको पचा लिया। तात्पर्य यह है कि देशको पुनः एक बनानेके लिए भी सामाजिक दोषोंका उपाय अत्यन्त आवश्यक है। जब तक हमारा समाज एक सुगन्धित कमलिनी न बने तब तक इसमें काले भ्रमर कैसे आ सकते हैं। कमलिनामें भ्रमर लीन होकर तन्मय बन जाता है। इसलिए संघके अधिकारी वर्गसे पुनः सविनय प्रार्थना है कि अपनी नीति और कार्यक्रमको समय के अनुसार चलाएँ और राष्ट्रकी सच्ची सेवा करें।

—

उपनयन-रहस्य

[ले०—श्री पं० दीनानाथजी शर्मा शास्त्री सारस्वत, विद्यावागीश विद्यानिधि विद्याभूषण]

[गताङ्क से आगे]

दाहिने कान पर यज्ञोपवीत रखने का रहस्य

शौचादिके समय यज्ञोपवीत दाहिने कान पर रक्खा जाता है, इस पर कुछ प्रमाण दिये जाते हैं। "निवीती दक्षिणे कर्णे यज्ञोपवीतं कृत्वा.......मूत्र पुरीषे विसृजेत्' (वैखानस धर्म प्रश्न २।६।१ शौच विधौ) यज्ञोपवीतं शिरसि दक्षिण कर्णे वा कृत्वा" (बोधायन गृह्यशेष सूत्र ४।६।१) इसी प्रकार 'कात्यायनपरिशिष्टके शौच-सूत्रमें भी कहा है। 'कर्णस्थब्रह्मसूत्र उदङ्मुखः। कुर्यान्मूत्रपुरीषे तु' (याज्ञवाल्क्यस्मृति आचाराध्याय ब्रह्मचारी प्रकरण, १६ वाँ पद्य) 'पवित्रं दक्षिणे कर्णे कृत्वा विण्मूत्रमुत्सृजेत्' (मिताक्षरा)।

कर्णस्थब्रह्मसूत्रो मूत्रपुरीषं विसृजति

(आग्निवेश्य गृह्यसूत्र २।६।८)

शौचके समय यज्ञोपवीत सूत्रको दाहिने कान पर रखने में कारण यह है कि—

"ऊर्ध्वं नाभेर्मेध्यतरः पुरुषः परिकीर्तितः"

[मनु० १।६२]

अर्थात् पुरुष नाभिसे ऊपर पवित्र है, नाभिके नीचे अपवित्र है। इस प्रमाणसे नाभिका निचला भाग मलमूत्र

का धारक होने से विशेषतः शौचके समय अपवित्र होता है। इसलिए उस समय पवित्र यज्ञोपवीतको वहाँ नहीं रखना पड़ता, किन्तु—

'तस्मान्मेध्यतमं त्वस्य मुखमुक्तं स्वयंभुवा'
[मनु १।६२]

इस प्रमाणसे अत्यन्त पवित्र तथा ज्ञानका भण्डार होनेसे बौधायनके अनुसार शिर पर अथवा बोधायन, याज्ञवल्क्य आदिके अनुसार उसे दाहिने कान पर रक्खा जाता है।

दाहिने कानकी पवित्रता उसमें दीक्षाके समय आचार्य द्वारा गुरुमन्त्रोपदेश करनेसे तथा देवता निवासके कारण सूचित होती है। शाङ्खायनने कहा है—

आदित्या वसवो रुद्रा वायुरग्निश्च धर्मराट्।
विप्रस्य दक्षिणे कर्णे नित्यं तिष्ठन्ति देवताः॥

आचारमयूख' में भी कहा है—

अग्निरापश्च वेदाश्च सोमसूर्यानिलास्तथा।
एते सर्वेऽपि विप्राणां श्रोत्रे तिष्ठन्ति दक्षिणे।

पराशरस्मृति' में भी कहा है—

प्रभासादीनि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा।
विप्रस्य दक्षिणे कर्णे वसन्ति मनुरब्रवीत्
(७।३६—४०)

मरुतः सोम इन्द्राग्नी मित्रावरुणौ तथैव च।
एते सर्वे च विप्रस्य श्रोत्रे तिष्ठन्ति दक्षिणे।
(गोभिलगृह्यसंग्रह २।६०)

इन पद्योंमें विप्रशब्द द्विजोंका उपलक्षक है 'प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति' यह न्याय हुआ करता है। दाहिने कानके पवित्र होनेसे ही—

क्षुते निष्ठीवने चैव दन्तोच्छिष्टे तथाऽनृते।
पतितानां च सम्भाषे दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत्'
(गृह्यसंग्रह २।८६)

अवस्य आदिके अवसर पर दाहिने कानको छूना कहा है। इसलिए अपराधी लोग भी अपनी शुद्धिके लिए दाहिने कानको पकड़ते वा छूते हैं।

कइयोंका मत शौचादिके अवसर पर बाएं कानमें भी यज्ञोपवीत धारण करने में है। जैसे कि अङ्गिराका निम्न वचन है—

मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे पुरीषे वामकर्णके।
उपवीतं सदा धार्यं मैथुने तूपवीतिवत्।
कृत्वा यज्ञोपवीतं तु पृष्ठतः कण्ठलम्बितम्।
विण्मूत्रे तु गृही कुर्याद् वामकर्णे समाहितः।

यदि तब कान पर यज्ञोपवीत रखनेमें भूल जाय, तो 'सायणीय' में कहा है—

मलमूत्रं त्यजेद् विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृक्।
उपवीतं तदुत्सृज्य धार्यमन्यद् नवं तदा

तब उसकी अशुद्धि के कारण उसका त्याग कहा गया है।

अन्य लौकिक लाभ उससे यह है कि-कानोंकी नसका गुप्त इन्द्रिय एवं अण्डकोष से सम्बन्ध है। मूत्रोत्सर्ग आदि के समय सूक्ष्म वीर्य स्रावकी आशङ्का रहती है। वीर्यका मुख्य केन्द्र मस्तिष्क है। वैसे तो वीर्य सर्व शरीरमें व्यापक होने से प्रत्येक किसी भी छिद्रसे बह सकता है; पर उसका मुख्य द्वार मलमूत्रद्वार ही है। शौचके समय वीर्य मस्तिष्क से चलित होकर दाहिने कानकी लोहिनिका नाड़ीके द्वारा आता हुआ मलमूत्रके साथ सूक्ष्मरूपसे गिरता है। वैद्य लोग भी मूत्रके द्वारा ही वीर्यस्रावकी परीक्षा करते हैं। इसी कारण दाहिने कानको यज्ञोपवीतसूत्रसे लपेटा जाता है, जिससे वीर्यस्रावसे रक्षा हो; इसीलिए ही मैथुनमें यज्ञोपवीतका कण्ठीकरण कहा है, जिससे शुक्रका विरोध न हो। उस समय सूक्ष्मतया अण्डवृद्धि भी हो सकती है। तब उससे सम्बन्ध रखने वाली कानकी नसको यज्ञोपवीत द्वारा दबानेसे वह आशङ्का नहीं रहती। जिस स्थानमें कान पर यज्ञोपवीत रक्खा जाता है; वहां पर एक पुरुषने छिद्र कराया हुआ था, हमने उससे इसका कारण पूछा, उसने उत्तर दिया कि-ऊंचे स्थानसे नीचे कूदनेके कारण मेरे अण्डकोषोंमें विषमता हो गई थी, तब डाक्टरने कान के उक्तस्थलमें छिद्र करके उस नसको ठीक कर दिया। इसी कारण कई लोग उस भागमें भी सुवर्णकुण्डल धारण करते हैं। इससे प्रत्यक्ष भी इसमें प्रमाण बना। इधर तब कान में यज्ञोपवीत होनेसे हाथ धोना तथा कुल्ला करना विस्मृत नहीं हो जाता। उस समय जलकी असुविधा होनेसे पीछे

जल मिलने पर कान पर यज्ञोपवीत न होनेसे हाथ धोना भूल जाता है। उस समय अन्य मित्रादि उसके कान पर यज्ञोपवीत देख कर उसके हाथको अशुद्ध मानकर उससे हाथ नहीं मिलाते; नहीं तो मित्रगण आते ही हाथ मिलाना प्रारम्भ कर देते हैं। उस समय कान पर यज्ञोपवीत होनेसे हाथकी शुद्धि तथा कुल्ला करनेसे तात्कालिक दूषित परमाणुओंका नाश होता है। उस समय हाथकी शुद्धिसे गुप्त इन्द्रियकी अस्पृश्यता भी हमारे वा अन्यके दिमागमें बैठ जाती है। इससे पुरुष हस्तशुद्धिके डरसे व्यर्थ गुप्त इन्द्रिय का स्पर्श भी न करेगा; उसके स्पर्शसे कुविचारकी आशङ्का बनी रहती है। वृथा स्पर्श न करनेसे कुविचारोंसे रक्षा भी हो सकती है।

कई विद्वान् मलमूत्रादिके समय कान पर यज्ञोपवीत लपेटनेमें एक सुन्दर उपपत्ति भी दिया करते हैं; वह भी ध्यान देने योग्य है—'यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं' इस मन्त्रमें यज्ञोपवीतकी पवित्रता स्पष्ट है। परन्तु जैसे पवित्र अग्नि भी श्मशानादिस्थानमें स्थित हुई व्यवहार्य नहीं होती; वैसे उपवीतसूत्र भी अपवित्र अवस्थामें उसके सम्बन्धसे निकले विद्युत्प्रवाहसे अपवित्र हो सकता है। यज्ञोपवीत पवित्रावस्थामें तो ब्रह्मसूत्र है, पर अपवित्र होने पर कपासका सूत्र मात्र ही होता है। मूत्र पुरीषके उत्सर्गसमयमें सारे शरीर की वैद्युतिकशक्ति दूषित हो जाती है। इस दशामें जैसे मदिराके पात्रमें रखे पवित्र गङ्गाजल की तथा हींग आदिके संसर्गसे होमियोपैथिक दवाईकी और अस्पृश्यके संसर्गसे देवमूर्तिकी शक्ति दूषित हो जाती है; वैसे ही अपवित्र दशामें पवित्र यज्ञोपवीतकी रक्षा न करने पर वह अव्यवहार्य हो जाता है, क्योंकि वह उस समय ब्रह्मसूत्र नहीं रहता। इस कारण जब तक गायत्रीमन्त्रसे अभिमन्त्रित अन्य यज्ञोपवीत धारण न किया जाय; तब तक ब्रह्म (वैदिक) कर्मका उस पहले के अपवित्रीभूत यज्ञोपवीतसे करने का अधिकार नहीं होता। परन्तु मलमूत्रके उत्सर्गके समय शारीरिक दूषित विद्युत् तथा यज्ञोपवीतकी दिव्य शक्तिकी रक्षाके लिए क्या उपाय हो? इस विषयमें ऋषिमुनियोंने वह उपाय ढूंढ निकाला। वह यह है कि—उस समय यज्ञोपवीतका दाहिने कानके साथ सम्बन्ध कर देने पर वह अपवित्र नहीं होता, क्योंकि किसी ऐसे पवित्र तत्त्वके साथ जोड़नेसे जिसकी विद्युत् कभी भी दूषित न होती हो; उससे सम्बद्ध वस्तुमें भी पवित्र विद्युद्धाराके प्रवाहसे वह अपवित्र अवस्थामें भी पवित्र रहता है। इस प्रकारका कौन सा तत्त्व है, जो कभी भी अपवित्र नहीं होता; जिसके साथ सम्बन्ध कर देने पर अपवित्र अवस्थामें भी यज्ञोपवीतकी पवित्रता त्रिकालमें पवित्र रहने वाले तत्त्वके पवित्र विद्युत्प्रवाहके साथ सम्बन्धवश दूषित न होवे?

इस पर यह जानना चाहिए कि—प्रकृतिने अपनी सृष्टि का सौन्दर्य प्रधानतया पांच तत्त्वोंसे अलङ्कृत किया है। वे आकाश-वायु-तेज-जल पृथ्वी नाम वाले पांच तत्त्व सम्पूर्ण विश्वमण्डलके सब पदार्थोंमें ओत-प्रोत हैं। इनमें ऐसा कौन सा तत्त्व है जो कदापि दूषित न हो? पृथिवी देशकालानुसार दूषित हो जाती है जैसे कि—श्मशानभूमि। जल भी स्थान भेद एवं अवस्थाभेदसे दूषित हो जाता है। अन्य जलोंकी बात छोड़ दीजिये, पवित्र गङ्गाजल भी अन्य जलके संसर्गसे, अथवा मद्यके पात्रमें रखनेसे दूषित हो जाता है। तेजका भेद अग्नि भी अशुद्ध हो जाया करती है। चिताग्नि, तथा मुख श्वास से जलाई हुई अग्नि अपवित्र मानी जाती है। वायु भी पुरीषालय, वेश्यालय, मदिरालय आदियोंकी दूषित मानी जाती है। अतः उस दूषित वायुमण्डलमें रहनेसे अनेक व्यक्ति विविध रोगाक्रान्त भी हो जाते हैं। उक्त विवेचनासे सिद्ध हुआ कि पृथिवी, जल, अग्नि, वायु ये चार तत्त्व सदा पवित्र नहीं रहते। अपवित्र देश-कालमें इनकी पवित्रता नष्ट हो जाती है।

अब अवशिष्ट रहा आकाशतत्त्व। यह अपवित्रसे अपवित्र अवस्थामें रहकर भी दूषित नहीं होता। उसकी विद्युद्धारा कदापि दूषित नहीं होती। किसी भी शास्त्रमें यह नहीं लिखा कि अमुक स्थानका आकाश भी दूषित हो जाता है। आकाश जल वृद्धि आदिसे गीला वा ठण्डा, तेज वा लू से गर्म, मिट्टी वा धुएँ से मलिन, वायु वा तूफानसे कम्पित नहीं होता। मलालय वा मद्यालयका भी आकाश दूषित नहीं होता। इस कारण पवित्र यज्ञोपवीतकी भी पवित्रता मूत्र पुरीषोत्सर्गकी अशुचि अवस्थामें भी दूषित

न हो, इसके लिए उसका सम्बन्ध सदा पवित्र आकाशके साथ कर देना चाहिए, जिससे आकाश तत्त्वमें सदा पवित्र ठहरा हुआ वैद्युतिक प्रवाह यज्ञोपवीतके सर्वांशमें व्याप्त हो जाय। जिस प्रकार विद्युद्-भवनके साथ सम्बन्ध जुड़ने से विद्युत्-प्रवाह सर्वत्र दौड़ता है, वैसे ही आकाशके साथ जोड़े हुए यज्ञोपवीतकी भी पवित्रता नष्ट नहीं होती, इसमें ब्रह्म-सूत्र ही रहता है।

यज्ञोपवीतका बाह्याकाशमें लटकाना असम्भव है। इधर शरीरसे पृथक् करने पर भी यज्ञोपवीत अशुद्ध हो जाता है, इस कारण आकाश तत्त्वसे बनाया शरीरमें जो अङ्ग वा इन्द्रिय हो; मूत्र पुरीषके समय उसीके साथ यज्ञोपवीतका सम्बन्ध कर देना चाहिए। आकाश, वायु, अग्नि जल, पृथिवी इन पांच तत्त्वोंके गुण क्रमशः शब्द, स्पर्श रूप, रस, गन्ध हैं। आकाश तत्त्वसे उत्पन्न कर्णेन्द्रिय ही आकाशके गुण, शब्दको ग्रहण करती है, अन्य इन्द्रिय नहीं। तब शब्द ग्रहणके कारण कर्णेन्द्रिय ही आकाशकी भाँति सदैव पवित्र है, इस कारण शास्त्रमें दाहिने कानकी पवित्रता प्रसिद्ध है। उसके साथ सम्बन्ध कर देने से यज्ञोपवीत मलमूत्रोत्सर्गकी अवस्थामें भी पवित्र रहता है। इसलिए आचार्यगण मन्त्रको भी दाहिने कानमें ही सुनाते हैं। इस कारण अपानवायु हो जाने पर शरीरके प्रतिनिधि-भूत दाथसे दाहिने कानको छुआ जाता है, जिससे शरीर शुद्ध हो जाय। 'पराशरस्मृति'में भी लिखा है—

'क्षुते निष्ठीवने चैव दन्तोच्छिष्टे तथाऽनृते।
पतितानां च सम्भाषे दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत्॥'
(७।३८)

इस प्रकार अपराधी भी दक्षिण कानको छूता है, जिस से उसकी शुद्धि हो जाय। हमारी ओरकी स्त्रियाँ भी अन्त्यजादि-स्पर्श द्वारा अपने बालकके अशुद्ध हो जाने पर स्नान की असामर्थ्यमें अपने दाहिने कानके सुवर्णसे छुए हुए जल को जो फेंकती हैं, उसमें कारण कान तथा सोनेका पवित्रता का है। इसी कारण द्विज लोग लघुशङ्का व दीर्घशङ्काके अवसर पर कान पर यज्ञोपवीतको रखते हैं।

अब एक ही प्रश्न अवशिष्ट है कि—यज्ञोपवीतसूत्रको दाहिने कानमें ही क्यों रखा जाता है? उसका उत्तर यह है कि—बाएँ अङ्गसे दाहिना अङ्ग सर्वथा पवित्र माना गया है। शरीरके वामाङ्गमें स्त्री-शक्ति तथा दक्षिणाङ्गमें पुरुष शक्ति मानी जाती है। जिस स्त्रीजातिको वेदाध्ययन एवं यज्ञोपवीतका अधिकार ही नहीं, तब स्त्री शक्तिसे समाविष्ट वामाङ्गमें यज्ञोपवीतको रखनेका अधिकार ही कैसे हो? जिस स्त्री-शक्तिमें अपवित्रताकी स्थिति स्वाभाविक है, उसके साथ संसर्गमें पवित्रवस्तुकी पवित्रता कैसे सुरक्षित हो सकती है! इसलिए ऋषि-मुनियोंने दक्षिण-कर्णमें ही यज्ञोपवीत टांग कर मलमूत्रके उत्सर्गकी आज्ञा दी है। यही यज्ञोपवीतका दाहिने कान पर रखनेका वैज्ञानिक रहस्य है। मलमूत्रोत्सर्ग की समाप्तिमें कायशुद्धि हो जाने पर हस्तप्रक्षालनपूर्वक मार्जन द्वारा सम्यक् शरीरशुद्धि हो जानेपर तब यज्ञोपवीतको दाहिने कानसे उतारना ठीक ही है।

इधर शरीरके भीतरी भागसे पीठसे जाती हुई, कन्धेसे होकर छातीके मार्गसे, नाभिप्रदेशसे लेकर कमर तक एक प्राकृतिक रेखा है, जो वह्निके समान, वा विद्युत्के आकार की है। वह इन्द्रियोंमें उष्णता उत्पन्न कर मनुष्यको काम-क्रोधादिसे युक्त करती है, उसकी धनुषकी आकृति होती है। इस रेखाका स्वभाव लाजवन्ती बूटाके समान होता है। वह स्पर्शमात्रसे कुम्हला जाता है। यज्ञोपवीत उस रेखाके ऊपर ठहरता है। इस कारण यज्ञोपवीती व्यक्ति अयज्ञोपवीतियों के तुल्य हिंसक वा क्रोधी नहीं होते। जो लोग यज्ञोपवीतको प्रतिदिन नहीं धोते (अर्थात् प्रतिदिन स्नान नहीं करते) वे भी क्रोधी हो सकते हैं। इस कारण मलत्यागके समय यज्ञोपवीत कानमें रखा जाता है—जिससे जागरित हुई वह विद्युद्-रेखा मलाशयमें उष्णता करके मलको विशुद्धतासे उतार दे। इस प्रकार वह रेखा यज्ञोपवीतके भारके सम्बन्धसे हीन होने पर शरीरमें उष्णता उत्पन्न कर उष्णतामूलक काम-क्रोधादियोंको उत्पन्न करती है।

इस प्रकार उपनयनसंस्कारका महत्त्व सिद्ध हो गया। संस्कारसे जैसे चमत्कार होता है, वैसे जन्मसे नहीं। रेशम संस्कारसे ही पहिनने योग्य होता है तथा कोमल भी। खान से निकला सोना संस्कारसे ही चमकता है। स्वच्छ मणि भी शानके संस्कारकी अपेक्षा रखती ही है। इस अर्थमें तो सभी संस्कार प्रयोजनीय हैं, पर उपनयन तो विशिष्ट संस्कार

है। उसीसे ही उसके अधिकारियोंकी शुद्धि हो सकती है। यज्ञोपवीतको देवकार्यमें बाएं कन्धेपर रखा जाता है, मृतक पितृकार्यमें दाहिने कन्धे पर रखा जाता है। ऋषिकृत्यमें निवीतिरूपसे (कण्ठीकी भाँति) धारण किया जाता है। यह गृह्यसूत्र-स्मृति आदिमें स्पष्ट है। 'मनुस्मृति'में यज्ञोपवीती, प्राचीनावीती, निवीतीका लक्षण इस प्रकार है—

उद्धृते दक्षिणे पाणावुपवीत्युच्यते द्विजः।
सव्ये प्राचीन आवीती निवीती कण्ठसज्जने ॥
(२।६३)

सामान्यतया उपवीत सदा बाएं कन्धेमें ही रक्खा जाता है। इसमें एक और भी प्रयोजन सूचित होता है। शरीर का दाहिना भाग पुरुषका होता है; और बायाँ स्त्रीका। पुरुष पुरुषरूप होता है, स्त्री प्रकृतिरूप। पुरुष स्वतन्त्र होता है, प्रकृति पुरुषके अधीन होती है। बाएं कन्धे पर सदा सूत्र रखनेसे दाहिनेमें उसके सर्वदा न रखनेसे सूचित होता है कि—स्त्री सदा परतन्त्र रहती है और पुरुष स्वतन्त्र, स्त्रीको पुरुषके अधीन होना चाहिए, पुरुषको प्रकृतिके अधीन नहीं होना चाहिए। यज्ञोपवीतको कभी भी शरीरसे पृथक् नहीं करना चाहिए।

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च।
विशिखो व्युपवीती च यत्करोति न तत्कृतम् ॥

यह 'कात्यायनस्मृति'का (१।४) वचन है।

'विना यज्ञोपवीतेन द्विजातिर्यद्युपस्पृशेत्।
प्राजापत्यं प्रकुर्वीत निष्कृतिर्नान्यथा भवेत् ॥
(लघुहारीत० २१)

श्री स्वा० दयानन्दजीने यज्ञोपवीतको विद्याका चिन्ह माना है (स० प्र० ११ पृ० २४४) यह बात ठीक नहीं। ऐसा मानने पर वे स्वयं अविद्वान् सिद्ध हो जायेंगे; क्योंकि उनका यज्ञोपवीत नहीं था। 'न्यायदर्शन' (१।२।१३) में छलनिरूपणमें 'व्रात्य' (उपनयनादि रहित) को भी ब्राह्मण माना है। अतः वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्योंका द्विजत्व-सम्पादक तो हो सकता है, विद्वत्ता सम्पादक, वा हिन्दुत्व-सम्पादक नहीं। खेद है कि—आजकल पुरुष समाजसे यज्ञोपवीत पहिनने का विचार हटता जा रहा है। बड़े नेता कहे जाने वाले भी उसे पहिननेसे पराङ्मुख हैं। अन्य बाबू लोग नेकटाई प्रेमसे लगाते हैं, जो ईसाकी फाँसीका चिह्न है। हैटके चमड़ेको बड़े गौरवसे धारण करते हैं; पतलूनके चमड़ेके पट्टे को भी बड़े गर्वसे पहनते हैं; थानेदार टी० टी० आदि जनेऊके सदृश चमड़ेके पट्टेको बड़ी प्रतिष्ठा समझ कर पहनते हैं; पर वे यज्ञोपवीतका धारण भार समझते हैं; खेद !!! स्वा० दयानन्दजी ने भी वैसे व्यक्तियोंको ठीक डांटा है कि—"जब पतलून आदि वस्त्र पहिनते हो, और तमगों की इच्छा करते हो; तो क्या यज्ञोपवीतादिका कुछ बड़ा भार हो गया ? (सत्यार्थप्रकाश ११ समु० २४४ पृ०)। 'यज्ञोपवीत और शिखाको छोड़ मुसलमान ईसाइयोंके सदृश बन बैठना व्यर्थ है (स० प्र० पृ० २४४)

आजकल स्त्री, शूद्र, अन्त्यज आदि भी यज्ञोपवीत पहनने में उत्कण्ठित दिखाई देते हैं; पर उनका उसमें अधिकार नहीं; इस विषय पर फिर कभी लिखा जायगा। इस उपनयनका नाम 'यज्ञोपवीत' प्रसिद्ध है। यज्ञमें अधिकार द्विजका होता है, जैसे कि—'अयं स होता द्विजन्मा' (ऋ० १।१४९।६) है 'यज्ञोपवीत' यह नाम इसलिए कि—यह यज्ञका वस्त्र है। शूद्र, स्त्री यज्ञोपवीतके अनधिकारी होने से ही यज्ञ तथा यज्ञ विषय वाले वेदमें अनधिकृत हैं। जो लोग स्त्री शूद्रोंको यह कह कर उत्तेजित करते हैं कि—'सनातनधर्मियोंने तुम्हें उपवीतका अधिकार न देकर तुम्हारा अपमान किया है,, उन्हें यह तो देखना चाहिए कि—वही सनातनधर्म संन्यासियोंको यज्ञोपवीत नहीं देता; क्या इससे उनका अपमान होता है ? नहीं—नहीं !! बल्कि संन्यासी तो सर्वनमस्करणीय माने गए हैं। अतः वादियोंकी उत्तेजनात्मक नीति ठीक नहीं। यहाँ तो अधिकार अनधिकारमें शास्त्रकी ही मान्यता होती है। तीन आश्रम, तीन वर्णके पुरुषोंमें ही उपवीतका अधिकार होता है, तभी यज्ञोपवीतकी भी तीन तन्तुएं होती हैं। इस प्रकार उपनयन मुख्य संस्कार तथा रहस्यपूर्ण सिद्ध हुआ। इस विषय में यदि अन्य कुछ किसीको पूछना हो तो मेरे नाम 'प्रिन्सिपल श्रीरामदल संस्कृत महाविद्यालय, बड़ा दरीबा, देहली,, इस पतेसे पत्र द्वारा पूछ सकते हैं।



❀ राहु केतु एवं धूमकेतु वेदसम्मत है ❀

[लेखकः—श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत]

[धूमकेतुके सम्बन्धमें एक सुविस्तृत लेख विद्याभूषण धर्ममणि श्री बालस्वामीजीका अभी-अभी हमारे पास आया है। लेख बहुत सुन्दर है फिर भी वह बहुत लम्बा होनेके कारण इस अङ्कमें प्रकाशित नहीं किया गया है, आगामी वर्षमें क्रमशः उसे प्रकाशित किया जायेगा। पाठक प्रतीक्षा करें —सम्पादक]

कुछ एक पाश्चात्यशिक्षाशिक्षित व्यक्ति राहु केतु एवं धूमकेतुको अवैदिक तथा पुराणकल्पित ग्रह बताते हुए उनके फलाफलको माननेसे नकार कर दिया करते हैं। वे लोग वेद तथा श्री स्वा० दयानन्दजीपर कुछ श्रद्धा रखते हुए दिखाई पड़ते हैं; हम भी उनके सन्तोषार्थं इस विषयमें वेद तथा श्री स्वा० दयानन्दजीके कुछ प्रमाण रखते हैं। 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकगण इधर अवहित हों।

'अथर्ववेद' में 'शं नो दिविचरा ग्रहाः' (शौ० सं० १९।९।७) मन्त्र में आकाशचारी ग्रहोंसे कल्याणकी प्रार्थना की गई है। इससे ग्रहोंका शुभाशुभ फल 'वैदिक' सिद्ध हुआ।

'अथर्ववेद' के 'शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा। शं नो मृत्युर्धूमकेतुः' (१९।९।१०) इस मन्त्रमें राहु ग्रह और धूमकेतुका होना तथा उससे कल्याण की प्रार्थना की गई है। इस प्रकार जहां पर राहु तथा धूमकेतु वैदिक सिद्ध हुए; वहां पर उनका शुभाशुभ फल भी वैदिक सिद्ध हुआ। उक्त मन्त्रमें 'धूमकेतु' का विशेषण 'मृत्युः' दिया गया है; इससे यह भी सिद्ध होता है कि—धूमकेतु मृत्युजनक भी हो जाता है। तभी तो सन् १५११ में जब यूरोपमें धूमकेतु दिखाई पड़ा; उसके फलस्वरूप वहां पर दागवाला ज्वर फैला, उसके पश्चात् प्लेग फैला। जिससे बहुत मृत्युएं हुईं। इसी प्रकार १६८२ तथा १७५८में भी वहीं धूमकेतु दिखाई दिया; जिसके फलस्वरूप समस्त यूरोपमें महामारी फैलनेसे बहुत सी मृत्युएं हुईं। जब इस प्रकार इस विषयमें वेद तथा प्रत्यक्ष का अनुग्रह हुआ; तब धूमकेतुके फलका अपलाप कैसे किया जा सकता है? इसी कारण श्री स्वा० दयानन्दजीने भी अपने 'उणादिकोष'के १७४ सूत्रकी व्याख्यामें 'धूमकेतुः—उत्पातः' (पृ० १८) इस प्रकार 'धूमकेतु'को 'उत्पात' (उपद्रवजनक) माना है।

'यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाऽविध्यदासुरः' (शा० सं० ५।४०।६) 'ऋग्वेद'के इस मन्त्रमें असुर 'स्वर्भानु' द्वारा 'सूर्य-ग्रहण' दिखलाया है। स्वर्भानु-राहुको कहते हैं। इस प्रकार 'राहु भी वैदिक ग्रह सिद्ध' हुआ। 'स्वर्भानु' राहु है—इस विषयमें 'अमरकोष'—का प्रमाण देखिए 'तमस्तु राहुः स्वर्भानुः' (१।३।२६) यदि इस प्रमाणमें अर्वाचीन शिक्षितोंको कुछ शङ्का हो; तो वे अपने माननीय श्रीस्वामी दयानन्दजीकी भी साक्षी देखें— 'उणादिकोष' ३३२ सूत्रकी टीकामें स्वा० दयानन्दजीने लिखा है—'स्वर्भानु-राहुः'–(पृ० ५५) इसकी साक्षी 'शमादित्यश्च राहुणा' (१९।९।१०) यह 'अथर्ववेद'का मन्त्र भी दे रहा है। यहां पर 'राहु'ग्रस्त 'सूर्य'का कल्याणकारी होना प्रार्थित किया गया है। 'ऋग्वेद'में 'स्वर्भानु' तथा 'सूर्य' यह शब्द थे; 'अथर्ववेद'के मन्त्रमें उनके पर्यायवाचक 'राहु' तथा 'आदित्य' आये हैं। 'उणादिकोष'के 'हमनिजान..... रहिभ्यो उण्' (१।३) इस सूत्रमें श्रीस्वामी दयानन्दजीने 'राहुः—ग्रहविशेषः' (पृष्ठ २) यह लिखकर राहुको ग्रहविशेष मान लिया है।

'राहोश्छाया स्मृतः केतुः' इस शास्त्रके प्रमाणसे 'राहु' से 'केतु' ग्रहका ग्रहण भी हो जाता है। तभी अपने 'उणादिकोष' (१।७४ सूत्र)की व्याख्यामें श्रीस्वामी दयानन्दजीने भी लिखा है— 'केतुः-ग्रहः' (पृ० १८)। 'मनुस्मृति' (१।३८) में भी केतुओंकी सृष्टि कही है, इस पर कुल्लूकभट्टने लिखा है— 'केतवः-शिखावन्ति ज्योतींषि उत्पातरूपाणि'। इस प्रकार राहु, केतु एवं धूमकेतु वैदिक ग्रह सिद्ध हुए, तथा उनका शुभाशुभ फल भी वैदिक सिद्ध

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र—

सं० २००६ की ग्रहपारिषद का विचार

देश-देशान्तरोंकी प्रत्येक परिस्थितियोंका भविष्य दर्शन

[लेखकः—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग']

पुरा यत्र स्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरितां
विपर्यासं यातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम् ।
बहोर्दृष्टं कालादपरमिवमन्ये तदखिलं
निवेशः शैलानां तदिति खलु बुद्धिं द्रढयति ॥

[महाकवि भवभूति]

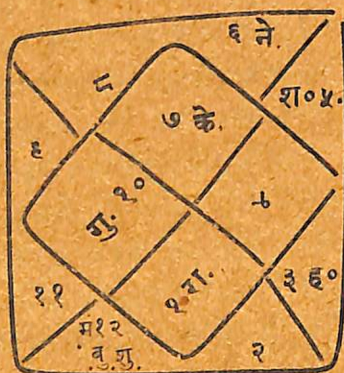
[जहां पहले जलका प्रवाह बह रहा था वहाँ नदियोंका केवल बालुकामय प्रदेश हो गया है । जहाँ खूब घने जंगल थे वहाँ विरले विरले वृक्ष हैं और जहाँ विरल कहीं कहीं कोई कोई वृक्ष दिखाई देता था वहाँ अब घने जंगल हो गये हैं । बहुत काल बीत चुका है जो कुछ मैं अब देख रहा हूँ वह अब दूसरा ही प्रतीत हो रहा है, किन्तु इन पहाड़ोंकी स्थिति वैसी ही बनी हुई है जैसी कि मैंने बहुत समय पहले देखी थी, इसीके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि यह वही स्थान है ।]

आजसे दो वर्ष पहले संसारकी स्थिति क्या थी और आज देखिये क्या हो गई है । लाखों हिन्दु नर नारी अपने अपने नगरोंको गाँवोंको घरोंको छोड़कर सैंकड़ो कोस दूर जा बसे हैं, जिस चन्द्रभागा (चिनाव) को हम एक वैदिक प्राचीन तीर्थ मानकर वैशाख संक्रान्ति पर वजीराबादके पास स्नानके लिए जाते थे, आज वहां हमारा जाना असम्भव कोटिमें गिना जाता है । दो वर्ष पहले क्या कोई कह सकता था कि ऐसा होगा ? किन्तु हुआ और ऐसा हुआ कि पर्याप्त समय तक लोग कहेंगे कि 'न भूतो न भविष्यति' सहस्रों ग्राम, सैंकड़ों नगर और लाखों घर नष्ट भ्रष्ट हो गये, लाखों नर नारी मर गये, उन-उन स्थानों पर कोई जाकर ठीक ठीक यह वही स्थान है और यह वही घर हैं ऐसा भी नहीं कह सकेगा । यह सब भगवान् काल महाराजकी ही कृपा है । यह उनका खेल हमें कितना ही भयानक प्रतीत होता हो, किन्तु उनके लिए तो अपनी प्राण-प्रिया 'काली' शक्तिके साथ एक मनोरञ्जक खेलका ही प्रकार है । हम दुःख मानें अथवा सुख, किन्तु हमारे मानने न माननेसे कालके खेलमें कोई अन्तर नहीं पड़ता । इसी प्रसङ्गमें महामहिम श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज प्रणीत 'श्रीचारुसन्देश'के दो श्लोक हमें स्मरण आये जिनको यहाँ देनेका लोभ संवरण हम न कर सके—

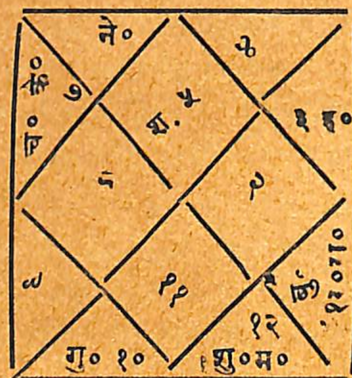
भोगा केचिल्ललित ललिता घोरघोराश्च केचित्
सर्वे कालात्त्वणपरिणता नाशमेव व्रजन्ति ।
वित्तं विद्या वपुरनुपमं वास्तवं वस्तु नैतत्
किञ्चित्तस्माद्विरम विरसाद्वासनावारिधेस्त्वम् ॥
स्थाने स्थाने ललितकलनं निर्गमं सङ्गमं वा
नद्याः स्रोतो रचयति यथा वालुकानां कणानाम् ।
कामं वामो विधिरपि तथा लालितीं लालयन्स्वां
लोकाऽऽश्लेषं घटयति मुहुः स्वात्मनः प्रीणनाय ॥

इन दो वर्षोंके भीतर हमें कितने ही प्रियजनोंका दुःख सहना पड़ा। विश्ववन्द्य बापूको हमारे
देखते ही देखते कालने उठा लिया। जिन्ना जैसे भयानक प्राणियोंको भी उस कालने उदरसात् कर लिया।
हमें कितना ही कोई प्रिय हो अथवा अप्रिय, कालकी दृष्टिमें कोई विशेष नहीं, इसी लिए हमें प्राप्त सामग्री
का सदुपयोग कर लेना चाहिए। जो लोग क्षणिक भोग सामग्रीको प्राप्त कर इतराते हैं वे स्मरण रक्खें कि
कालके गालसे वे बच नहीं सकते और लोकान्तरमें इन्हें दुःख सामग्री ही अधिक प्राप्त होगी। इस लोकमें
भी दुरुपयोग करने वालोंका पर्याप्त अपयश प्रस्तुत होगा। भविष्यत्का सुधार भूतके आधार पर ही प्रायः
किया जाता है। भूतकालकी घटनाओंको देखकर ही विद्वान् लोग कार्यकारणभाव स्थिर करते हैं, अनन्तर
दुःख रूपी कार्यको रोकने के लिए उसकी कारण सामग्री—काम क्रोध लोभ आदि—को अपने पास फटकने
नहीं देते। ऐसा होने पर भी कालकी महिमा अत्यधिक प्रबल होनेके कारण बड़े बड़े विद्वान् भी मूढ़ोंके
कार्य कर बैठते हैं और वे स्वयं दुःख भोगते ही हैं, साथ ही उनके नेतृत्वमें रहने वाले लोगों
को भी कष्ट भोगने पड़ते हैं। दैवज्ञ अपनी विद्या बुद्धिके बल पर कालके सूचक ग्रहोंके चार
और उनके विचार यथामति समझकर कालके भविष्यत् खेलोंका सूचन करते हैं। हम पहले
'श्रीस्वाध्याय' के सातवें वर्षके हेमन्ताङ्कमें भी लिख चुके हैं कि शासक कालशक्तिके ही अवयवविशेष हुआ
करते हैं, उनमेंसे प्रधान प्रधान पुरुषोंकी जन्मकुण्डलियाँ और वर्षके गोचर ग्रह तथा वर्ष लग्न जगल्लग्न
कुण्डलियोंकी ग्रहस्थिति द्वारा सं० २००६ का शुभाशुभ परिणाम जो ज्ञात हुआ वह नीचे दे रहे हैं—

वर्षलग्नम्



जगल्लग्नम्



सं० २००६ की ग्रहपरिषद्के दश अधिकारियोंमेंसे ६ अधिकार शुभ तथा ४ क्रूरग्रहोंको प्राप्त हुए हैं। इस वर्ष के सर्वाधिकारी या सम्राट् बुध हैं और प्रधानमन्त्रीका पद भी स्वयं इन्होंने ही सम्हाला है। तथा ये स्वयं निर्बली (नीचराशिस्थ) अस्थिरमानस नपुंसक ग्रह हैं और वर्ष लग्नसे छठे पड़े हैं। वर्षारम्भमें पंचग्रह और वैशाख कृष्णामावास्याको प्रातः षड्ग्रहयोग, गुरुका अतिचार गतिसे तीन राशियोंमें (धनुः मकर कुम्भमें) भ्रमण, मार्गशीर्षमें शनि-मङ्गलका युद्ध, माघ मासमें पुनः पंचग्रही योग एवं शनिके साथ कई ग्रहोंका वक्र गतिसे चलना, तथा वर्षलग्न,जगल्लग्न कुण्डलियोंकी ग्रहस्थिति पर सम्यक्तया विचार करनेसे यह वर्ष भी संसारके लिए पूर्ण शान्ति एवं सुखप्रद नहीं कहा जा सकता। संसार में राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति होगी। कई आश्चर्यजनक अकल्पित घटनाएँ घटेंगी। दुर्भिक्ष, रोग, भूकम्प, जलप्रलय, अग्निकाण्ड, तूफानादिसे कई प्रांत क्षति-ग्रस्त होंगे। विश्वकी महाशक्तियोंके सामने अनेक विषम समस्याएँ उत्पन्न होंगी। लग्नेश, धनेश, सप्तमेश नवमेश, दशमेश और लाभेश शुक्र, मङ्गल, बुध, चन्द्र, सूर्य ये पांचों ग्रह छठे भावमें चले गये हैं, अतः समस्त संसारकी राजनैतिक और आर्थिक स्थिति संकटापन्नावस्थामें बनी रहेगी। छोटे बड़े राष्ट्रों और प्राणिमात्र में पारस्परिक स्नेह, सद्भावना तथा विश्वासका अभाव रहेगा। आर्यजनता और सज्जन प्रकृतिके लोगों पर विशेष आपत्तियां आयेंगी। खाद्यपदार्थ और वस्त्रादि आवश्यक पदार्थोंकी सुलभता न होगी। पंचग्रह तथा षड्ग्रह योगके प्रभावसे मध्य एशिया, तुर्की, पुर्तगाल, फ्रांस, इटली, स्याम, मलाया, हिंदचीन, चीन, बर्मा, मध्यपूर्व, हिन्देशियामें राजनैतिक, सामाजिक तथा साम्प्रदायिक उत्तेजनासे अशांति बढ़कर यत्र-तत्र श्रेणीसंघर्ष, युद्ध, उत्पातादि भयङ्कर घटनाएँ आरम्भ होंगी। संक्रामक रोग फैलेंगे, अग्निकाण्ड होंगे, आंधी बवण्डर और समुद्री तूफान आवेंगे, जहाजी दुर्घटनाएं होंगी। वैशाखमें भयंकर अग्निकांड व रेलवे दुर्घटना होगी। सैनिक व्यय बढ़ेगा, औद्योगिक और राजनैतिक समस्याएं जटिल होंगी। वर्षारम्भ और वर्षान्त (माघ) में दो बार पंचग्रह योग होनेसे इस वर्ष में "पचग्रहाः घ्नन्ति समस्तभूपान्" के अनुसार राज्यतन्त्र समाप्त प्राय होगा। चतुर्थेश पंचमेश शनि लाभ में सिंहराशिका होकर स्वक्षेत्र कुम्भ राशिसे पूर्ण दृष्टि-सम्बन्ध बना रहा है। उधर तथाकथित साम्यवादका (कम्यूनिज्मका) मूलस्रोत रूसी (रशियन) भूभाग कुम्भ राशिके प्रभावमें है, अतः सिंहके शनिमें संसारभरमें रूसी साम्यवाद वा कम्यूनिज्मका भय बढ़ता जाएगा। शनिके कारण निम्नश्रेणी मध्यमवर्ग श्रमजीवी एवं पीड़ित जनता साम्यवादियोंके (कम्युनिष्टोंके) सम्पर्कमें आकर विनाशक कार्यवाहियोंके लिए उतारू होंगी। गुप्त षड्यन्त्र, चोरी डाके, अपहरण और भयंकर हत्याकाण्ड होंगे।

रूस-अमेरिका, भारत-पाकिस्तान और एंग्लो-मिश्री सम्बन्ध बहुत अधिक तनेंगे। मलाया, स्याम, हिन्देशिया बर्मा, अफ्रीका और फिलस्तानमें विद्रोह भड़क कर भयानक क्रांतिकारी कार्यवाहियां होंगी। आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रव अधिक होंगे। आकाशीय उत्पात, कहीं परमाणु वा ज्वालामुखी विस्फोट, अतिवर्षण, अवर्षण एवं रोग युद्धादि द्वारा जनधनका विनाश होगा। पंचग्रहयोग तथा षडग्रह योग (गोलयोग) का फल प्राचीन ग्रन्थोंमें इस प्रकार लिखा है—

शशिसूर्यं समायोगे पंचग्रह समन्विते।
महारोगभयं राष्ट्रं राजयुद्धं भविष्यति॥
अतिवृष्टिरनावृष्टिः परचक्रभयं तथा।
जायते जननाशश्च मन्त्रिणो मरणं भवेत्॥
उत्पातादि भयं सर्वं संकरादि जनक्षयः।
भूकम्पादिमहोत्पातो नाना दुःखसमाकुलम्॥
ग्रहाणां यन्मासे ननु भवति षण्णां निवसति
तदा गोलो योगः प्रलयपदमिन्द्रोऽपि लभते।
नृपाणां नाशः स्याज्ज्वलति वसुधा शुष्यति नदी
भवेल्लोको रङ्कः परिहरति पुत्रं च जननी॥
रविराहुकुजाश्चैव शशिशुक्रबुधास्तथा।
मार्गेण गम्यते लोकैर्भयभीता च मेदिनी॥

षड्ग्रहयोग (गोलयोग) में संसारमें कोई अप्रिय घटना (भयङ्कर अग्निकाण्ड, ज्वालामुखीस्फोट, भूकम्प,

हत्याकाण्ड, यान-दुर्घटना आदि) घटित होती है। वैसे तो इस योगका प्रभाव पर्याप्त समय तक रहता है। परन्तु विशेषकर वैशाख कृष्णामावास्या ता० २८ अप्रैल के दिन इस वर्ष प्रधान पुरुषोंका किसी कार्य विशेषके लिए यात्रा नहीं करनी चाहिए और न नया कार्य प्रारम्भ करना ही उचित है। मेष वृषभ कन्या और मकर राशिवाले राष्ट्र तथा पुरुषोंके लिए यह योग अरिष्टप्रद है, अतः इन्हें विशेष सतर्क रहनेकी आवश्यकता है।

तात्पर्य यह है कि इस वर्षका प्रारम्भ पारस्परिक सन्देह, असुरक्षा, आर्थिक-संकट, मुद्रास्फीति, खाद्यपदार्थ-दुर्लभता और साधारण गड़बड़ीसे ही होगा। वर्षके पूर्वार्द्धमें श्रमिकजगत्में असन्तोष बढ़ेगा, राजनैतिक सम्मेलनों और अधिकारियोंके आश्वासनोंमें सन्देहपूर्ण वातावरण बना रहेगा।

भारतवर्ष

जगदम्बाकी असीम अनुकम्पा और अनेकों महापुरुषोंके त्याग तपस्या एवं बलिदानोंसे गतवर्ष भारतको स्वतन्त्रता तो प्राप्त हो गई है; परन्तु जितनी कठिनाईसे स्वातन्त्र्य लक्ष्मीके दर्शन होते हैं उतनी ही या उससे भी कहीं अधिक कठिनाइयाँ उस प्राप्त स्वातन्त्र्य-लक्ष्मीको सुरक्षित (स्थिर) रखनेमें आती है। स्वतन्त्रभारतकी जन्मकुण्डलीका निरीक्षण करनेसे प्रतीत होता है कि हमारा राष्ट्र अभी बालारिष्ट योगमें चल रहा है। "इसके आरम्भिक तीन वर्ष (सन् १९५०-तक) विशेष कठिनाईके हैं" यह हम १५ अगस्त १९४७के दैनिक पत्रों और 'श्रीस्वाध्याय' त्रैमासिक पत्र वर्ष ७ अङ्क १ में सविस्तररूपमें लिख चुके थे, अस्तु। इस वर्षकी ग्रह-स्थितिको देखते हुए हमें प्रतीत होता है कि भारतके गुप्तशत्रु इसकी प्रगतिमें बाधा डालनेके लिए सभी उपायोंका अवलम्बन करेंगे। अतः भारतके शासनसूत्र-सञ्चालक प्रधान पुरुषोंको जागरूक रहकर सदसद्विवेकबुद्धिसे पूर्ण सतर्क एवं सावधान रहनेकी आवश्यकता है। यद्यपि वर्षलग्न-कुण्डलीमें भारत तथा राजधानी दिल्लीकी राशियाँ गुरुसे युत दृष्ट हैं और प्रधान मन्त्री श्रीनेहरूजीका जन्मलग्न तथा राशि दशम (राज्य) भवनमें गुरुसे दृष्ट है, अतः इस वर्ष भारतकी वर्तमान राष्ट्रिय सरकार सभी प्रकारकी आपत्तियोंका सबल हाथोंसे प्रतिकार करती हुई भारतको उन्नतिकी ओर अग्रसर करेगी, इसमें सन्देह नहीं। तथापि इस वर्षमें विशेषकर वर्षारम्भसे श्रावण (जुलाई) मास तक और फिर मार्गशीर्ष (दिसम्बर ४९) से आगेका समय भारतीय राजनीतिमें सङ्कटका द्योतक है। नेताओंके भरसक प्रयत्न करने पर भी स्वतन्त्रभारतका भावी चुनाव (इलेक्शन) इस वर्षमें नहीं होगा। वर्षारम्भमें (पूर्वार्धमें) केन्द्रीय और प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलोंमें उलटफेर होगा। कुछ मन्त्री अपने विभागकी विषमस्थिति और जनताके असन्तोषसे पदत्यागके लिए विवश होंगे। अनेक प्रकार की आन्तरिक उलझनें उत्पन्न होकर अप्रिय प्रसङ्ग उपस्थित होंगे। दलबन्दी, श्रेणीसंघर्ष, अव्यवस्था और स्वार्थपरताका बोलबाला रहेगा। अधिकांश अधिकारीवर्ग अपने उत्तरदायित्वको न समझकर शक्तिका सदुपयोग न कर सकेंगे; अतः प्रजामें असन्तोष बढ़ेगा। श्रमिक वर्ग और राज्यकर्मचारियोंमें असन्तोष बढ़कर कई कारखानों तथा राजकीय विभागोंमें एकाधिकबार गतिरोध (हड़तालादि) का भय उपस्थित होगा। कुछ लोग अन्न वस्त्र एवं आश्रयस्थानके अभावमें और कुछ साम्प्रदायिकताके शिकार बनकर अपना तथा राष्ट्रका अहित करेंगे। वर्षलग्नकुण्डली में छठे पञ्चग्रह योग और अष्टममें दिल्लीका शासन है, तथा जगल्लग्नमें अष्टममें मङ्गल शुक्र और छठे गुरु है, अतः केन्द्रीय एवं प्रांतीय शासनके किन्हीं दो ख्यातिप्राप्त उच्चाधिकारियोंके निधन वा आकस्मिक आपत्तिमें फँसनेका योग बन रहा है। आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात (दुर्भिक्ष रोग अतिवृष्टि अनावृष्टि तूफान अग्निकांड आदि) से भी क्षति होगी। मार्गशीर्षमें (दिसम्बरमें) सिंह राशिमें शनि मङ्गलका युद्ध संसारके लिए अनिष्ट कर है। मङ्गल शनि युद्ध, दुर्भिक्ष, चोरी, डाके, रक्तपात, मारधाड़, भयङ्कर हत्याकाण्ड और नानाविध उत्पातकारक क्रूरग्रह माने जाते हैं। 'युद्धदौ शनिमाहेयौ' संहिता ग्रन्थोंमें सिंहके शनिका फल भी बहुत अनिष्ट लिखा है, यथा—

भूम्यां नाशश्चतुष्पाद् हयगजवृषभैर्युद्धदुर्भिक्षरोगैः।
पीड्यन्ते सवदेशा उदधिपुरपथे दुर्गदेशेषु भङ्गः॥

सिंह राशिगत शनिके फलका सप्रमाण विशेष विवेचन

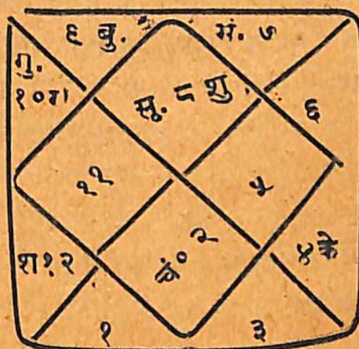
हम सं० २००५ आषाढ़ मासके 'श्रीस्वाध्याय' के ग्रीष्माङ्क में (पृष्ठ ६५ से ६६ तक) लिख चुके हैं, वहाँ देखना चाहिए। सुप्रसिद्ध अङ्गरेज ज्योतिषी श्री जाडकिलने शनि मङ्गलकी युतिका फल इस प्रकार लिखा है—

"राजाओं या गवर्नमेण्ट पर आक्रमण, वैमनस्य, कभी-कभी युद्धकी भीति, किसी महान् व्यक्तिकी हत्या या मृत्यु, हड़तालोंका होना और आँधियोंका आना।"

यहां स्वतन्त्र भारतका स्थिर जन्मलग्न गुरुसे दृष्ट है अतः हमें आशा है कि जो कुछ भी आकस्मिक घटनाएँ घटित होंगी उनका सफलता पूर्वक सामना करने के लिये शासकोंको गुरुकी ओरसे पूरा बल मिलता रहेगा।

राष्ट्रके कर्णधार

गवर्नरजनरल श्री राजगोपालाचार्य—



ता० ६ दिसम्बर १६४८ से आपको ७१ वां वर्ष चल रहा है। वैशाखमें आपकी राशिसे व्ययमें षड्ग्रही योग हो रहा है, अतः वैशाखसे ही भारतकी केन्द्रीय एवं प्रान्तीय समस्याएँ आपके लिए चिन्ताका कारण बनेंगी। अन्तर्राष्ट्रिय समस्याओंका भी भारत पर प्रभाव होगा। ७१ वें वर्षमें आप अपने प्रभाव एवं नीति कुशलतासे भारतको समुन्नत बनानेका पूर्ण प्रयास करेंगे, किन्तु स्वास्थ्य विशेष समाधान कारक न रह सकेगा। दिसम्बर १६४६से प्रारम्भ होने वाला ७२ वां वर्ष आपको स्वास्थ्यके लिए विशेष चिन्ताका सूचक है। वहां आपको स्वास्थ्य अथवा अन्य कारणविशेषसे विश्राम लेना पड़ेगा।

प्रधानमन्त्री श्री नेहरूजी—



श्री नेहरूजीकी जन्मकुण्डलीका पर्यवेक्षण करनेसे विदित होता है कि आप न केवल भारत ही अपितु समस्त संसारकी महान् विभूतियोंमेंसे एक हैं।

मिथुनसे धनुः राशि पर्यन्त ७ घरोंमें प्रत्येक भावमें ग्रह आ जानेसे एकावली नामक प्रबल राजयोग बना है। 'एकावल्यां महाराजः" कर्क लग्नमें पञ्चमेश राज्येश होनेके कारण मङ्गल प्रबल राजयोगकारक बनता है। यह मङ्गल श्रीनेहरूजीके पराक्रमस्थानमें बलवान् है। इसकी महादशा विगत सं० २००३ सन् १६४६से प्रारम्भ हुई है। यह ७ वर्षके लिए सन् १६५२ ईस्वी तक रहेगी। इस महादशामें ही श्रीनेहरूजी को जीवनमें सर्वाधिक सम्मान एवं प्रभावशाली नेतृत्व प्राप्त होनेका योग है। सम्पूर्ण एशियामें आपका वर्चस्व बढ़ेगा। भारत और दिल्लीकी राशियां तथा स्वतन्त्रभारतके जन्मलग्नसे आपकी जन्मराशि और लग्नका तृतीय एकादश मित्र सम्बन्ध है, अतः आपके द्वारा भारतका गौरव संसारमें बहुत बढ़ेगा। राहुसे केतु पर्यन्त सभी ग्रह आ गये हैं, अतः आपके जीवनमें संघर्ष बना रहेगा और विरोधीतत्त्वोंसे निरन्तर टकराते हुए भी आप अपने लक्ष्यमें सफल होते रहेंगे। आपकी जन्मकुण्डलीमें यह एक विशेष महत्त्वकी बात है कि राहु केतुके अतिरिक्त शनि पर्यन्त पञ्चधामैत्रीमें किसी भी ग्रहका कोई अधिशत्रु नहीं है और मङ्गल बुध शुक्रका तो कोई शत्रु भी नहीं, अतः हमें विश्वास है कि वर्तमान मङ्गलकी महादशामें १६५२ तक आप विरोधियों पर विजय प्राप्त करते हुए भारतको सभी प्रकारकी आपत्तियोंसे निकाल ले जानेमें समर्थ होंगे। इस समय मङ्गलमें शनिका अन्तर चल रहा

हैं। शनि सप्तमेश अष्टमेश होकर धनस्थानमें मङ्गलसे व्ययमें होनेके कारण शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यकी दृष्टिसे उत्तम नहीं है। परिश्रम अधिक करना पड़े और अनेक प्रकारकी बाह्य एवं आन्तरिक समस्याएं चिन्ताका कारण बनेंगी। गोचरमें भी शनि सिंहका ही चल रहा है, अतः सिंहके शनि और विशेषकर शनिके अन्तर सं०२००६ के कार्तिक तक पण्डितजीको स्वास्थ्य एवं सुरक्षाकी ओरसे विशेष सावधान रहनेकी आवश्यकता है। इसी अवधिमें (सिंहके शनिमें) एकाधिकबार राष्ट्रकी विषमस्थिति एवं सहयोगियोंके कार्योंसे आपके मनपर बुरा प्रभाव पड़ेगा, फलतः कभी-कभी इस महान् उत्तरदायित्व पूर्णपदसे विरत होनेकी भावना भी उदित होगी।

इस वर्षके वर्षलग्नसे आपका जन्मलग्न और राशि दशम (राज्य) भावमें है और आपके नवम भावमें पञ्च-ग्रह योग एवं दशममें षडग्रह योग बन रहा हैं, अतः इस वर्ष आपके शासनमें भारत पर्याप्त प्रगति करेगा। वर्षके पूर्वार्धमें ही पश्चिमकी लम्बी विदेशयात्रा होगी। विदेशों से भारतके राजनैतिक व्यापारिक सम्बन्ध सुदृढ़ होंगे। नव-मेश गुरु मकरमें रह कर भाद्रपद तक लग्न चन्द्रसे दृष्टि सम्बन्ध बनायेगा, यही आपकी विदेशकी लम्बी यात्रामें, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठामें, शासन-सञ्चालन और स्वास्थ्यमें बल साहसका सञ्चार करने वाला सिद्ध होगा। इसी अवधिमें परिवारमें कोई मांगलिक शुभकार्य भी होगा। जगल्लग्न से आपके जन्मलग्न और राशिका द्विर्द्वादश योग बन रहा है, अतः आपके पूर्णप्रयत्न करने पर भी भारतकी आर्थिक स्थिति और अधिकारियोंकी दूषित मनोवृत्ति सुधर नहीं सकेगी, इस कारण प्रजामें असन्तोष बढ़ेगा। इस वर्षके अन्तमें कुम्भका गुरु आपके जन्मलग्नमें भाग्येश होकर अष्टम जाएगा और सप्तमेश अष्टमेश शनिसे प्रतियोग करेगा उस समय आपको किसी अत्यन्त प्रिय सहयोगीका वियोग, यान-दुर्घटना वा स्वास्थ्यमें निर्बलता एवं विरोधी वाता-वरणका सामना करना पड़ेगा। किन्तु महादशा बलवान् कारक ग्रह मङ्गलकी है, अतः हमें आशा है कि आप आप-त्तिरूपी अग्निमेंसे सुवर्णकी भांति चमकते हुए संसारके सामने निकलकर अपने राष्ट्रका अभ्युत्थान करनेका प्रयत्न करेंगे। भगवान् विश्वकी इस विभूतिको शतायुः करे यही हमारी कामना है।

श्री सरदार पटेल—

श्री नेहरुजी की भाँति सरदारका ठीक शुद्ध जन्मेष्टकाल हमें प्राप्त नहीं हुआ। बम्बईके कुछ सहयोगी दैवज्ञोंने आपके जन्म-लग्नका जो निश्चय किया वह निम्न है—



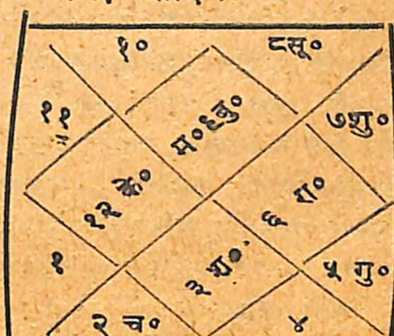
श्रीसरदारका जन्मलग्न भी कर्क ही है, लग्नेश चन्द्रमा उच्चस्थ लाभमें और सप्तम उच्चका मङ्गल स्वक्षेत्री शनिके साथ सरदारको महान् साहसी, तेजस्वी, राष्ट्रनिर्माता, लौह-पुरुष बना रहा है। कर्कलग्नके राजयोगोंमें उत्पन्न ये दोनों महापुरुष (नेहरु-पटेल) स्वतन्त्रभारतके भाग्य-विधाता हैं, इसमें सन्देह नहीं। आपकी नीति-पटुतासे स्वतन्त्र-भारत की अनेक समस्याएँ सुलझती प्रतीत होंगी। विरोधी भी आपकी कार्यकुशलताका लोहा मानेंगे।

शनि सप्तमेश अष्टमेश (मारकेश) होकर इस समय गोचरमें शनिसे अष्टम, राशिसे चतुर्थ और लग्नसे द्वितीय गया है, यह सिंहका शनि श्री सरदारके स्वास्थ्यके लिए चिन्तासे खाली नहीं है। इस वर्षमें वायुविकार, उदरव्याधि, शोथ, शैथिल्य वा हार्टब्रेलका दौरा होनेकी सम्भावना है। वैशाखसे भाद्रपद तक और आगामी ७५ वाँ वर्ष श्रीसरदार पटेलके स्वास्थ्य एवं सुख शान्तिके लिए उत्तम नहीं है, सावधान रहें। राजनीतिमें सहयोगियोंके आन्तरिक मतभेद से भी आपको असन्तोष होगा। परन्तु चन्द्रमा और शनि आपका बलवान् है अतः आशा है कि यह लौहपुरुष सभी प्रकारके प्रहारोंको सहन करता हुआ राष्ट्रके अभ्युत्थानमें सतत प्रयत्नशील रहेगा।

हमारे विचारसे श्रीसरदारका सिंह लग्न होना

चाहिए। इसमें कुछ कारण है। जब तक श्री पटेलसाहबका ठीक शुद्ध इष्टकाल हमें प्राप्त नहीं होता तब तक हम विशेष स्पष्ट रूपमें कुछ नहीं कह सकते।

श्री डा० राजेन्द्र प्रसादजी



कुण्डलीकी ग्रहस्थिति स्पष्ट बता रही है कि श्री राजेन्द्र-बाबू निर्मल मानस, निर्लिप्त नर-श्रेष्ठ हैं। मङ्गल बुध चन्द्र गुरु शुक्रके कारण वे अजातशत्रु सर्वजनप्रिय व्यापक प्रति-भासम्पन्न सहृदय सज्जन हैं। सं० २००२ से आपकी लग्न-स्थ राज्येश बुधकी महादशा प्रारम्भ हुई है, यही बुध आप के जीवनमें सर्वाधिक सम्मान कारक है और मारकेश शनिसे पूर्ण दृष्टि-सम्बन्ध होनेके कारण मारक भी बुध ही बन रहा है। सं० २००४ के ज्येष्ठसे २वर्ष १० मासके लिए सं० (२००७ के मार्गशीर्ष तक) शुक्रका अन्तर चल रहा है। शुक्र रोगेश है और रोगस्थानमें चन्द्रमा है। अतः इस अवधिमें आपका स्वास्थ्य पूर्णरूपेण ठीक न रहेगा। कई बार श्वास और वायु-विकारसे पीड़ित होना पड़ेगा। और इसी अवधिमें एकाध बार साधारण यान दुर्घटना (एक्सीडेण्ट) से भी आप बचेंगे। शुक्र बलवान् (स्वक्षेत्रमें) है अतः विशेष भयका कारण नहीं, उचित उपचारादिसे स्वास्थ्य लाभ होता रहेगा। चन्द्रमाके कारण मोती केल्शियम और व्ययेश भौमके कारण प्रवाल तथा व्ययस्थ सूर्यके कारण सुवर्णका सेवन वा धारण आपके स्वास्थ्यके लिए विशेष हितावह सिद्ध होगा। सं० २००७ तक आप भारतकी राजनीतिसे पूर्ण रूपेण संन्यास नहीं ले सकेंगे। इस वर्षके पूर्वार्धमें ही आपको राष्ट्रहितार्थ किसी कार्य विशेषमें संलग्न होना पड़ेगा। इस वर्ष वैशाखसे श्रावण तक आपको देशकी समस्याओंको सुलझानेमें पर्याप्त शारीरिक एवं मानसिक कष्ट सहन करना पड़ेगा। मार्गशीर्ष (दिसम्बर १९४९) से प्रवेश होने वाले ६६ वें वर्षमें आपको श्वास व्याधिकी तीव्रता और स्वास्थ्यमें विशेष निर्बलता होनेका योग है, वहाँ सावधान रहें।

श्री डा० पट्टाभि सीतारमैया—

इस वर्ष कांग्रेसके सङ्गठन रचनात्मक कार्य और संस्थाकी आन्तरिक शुद्धिके लिए आपके प्रयत्न विशेष रूपसे होंगे। सहयोगियोंके कार्यसे आपको कुछ आन्तरिक असन्तोष बढ़ेगा और वर्षके उत्तरार्धमें कई प्रान्तोंमें कॉंग्रेस कार्यकर्ताओंके पारस्परिक मतभेद एवं अनुशासन-हीनताके कारण आप कुछ उदासीन मनोवृत्ति धारण करेंगे। परिस्थितिवश आप अपने प्रभावसे कॉंग्रेसको सर्वजनप्रिय संस्था बनानेमें असमर्थ रहेंगे।

श्री जयप्रकाश नारायण—

समाजवादी दलमें वर्चस्व बढ़ेगा। श्रमिकवर्गकी अनेक जटिल समस्याएँ आपके द्वारा सुलझेंगी। राजनैतिक गति-रोधको दूर करनेके लिए आपके सतत प्रयत्न होंगे। वर्षके उत्तरार्धमें विशिष्ट सम्मान प्राप्त होगा। गोचरसे अष्टम शनि अधिक भ्रमण, स्वास्थ्य हानि, मानसिक कष्ट और कभी-कभी सहयोगियोंकी ओरसे विषमस्थिति उत्पन्न कराने वाला है।

भारतीय कॉंग्रेस

यह वर्ष भी कॉंग्रेसकी आंतरिक परस्थितियोंके लिए कठिनाइयोंसे भरा हुआ ही है। विरोधी तत्त्व पनपेंगे। कुछ स्वार्थलिप्सु लोग अधिकार प्राप्तिके लिए अनुचित उपायों का अवलम्बन करके जनताको उभारनेका अवाञ्छनीय प्रयत्न करेंगे। शनिका सम्बन्ध मजदूर तथा दलित वर्ग से है, अतः इनका उत्कर्ष होगा और इन्हींके द्वारा उत्पात भी खड़े होंगे। सामाजिक अनुशासन भङ्ग होनेके कारण शासन व्यवस्थामें बहुत कठिनाइयां होंगी। कांग्रेसको साढ़े साती प्रारम्भ हो चुकी है, यह अधिकांश कांग्रेसजनों में दुर्बलता, पदलोलुपता, स्वार्थपरता, द्वेष और चरित्र हीनताको प्रश्रय देने वाली है, अतः कांग्रेसके उच्च-अधि-कारियों और शासकोंको आत्म-निरीक्षणपूर्वक इस ओर

से सदा सतर्क रहना चाहिए। सिंहके शनिमें ही आन्तरिक अनैक्य और बाह्य भय भी उपस्थित होंगे, परन्तु ये सब घटनाएँ सामयिक उचित कार्यवाही और रक्षा योजना को अभेद्य बनाकर रोकी जा सकती हैं।

काश्मीर

काश्मीरकी समस्या इस वर्ष पूर्णरूपेण नहीं सुलझ सकेगी। काश्मीरमें जनमत न्यायसंगतरूपमें होनेका योग नहीं है। कुछ वैधानिक जटिल समस्याओंके कारण जनमत स्थगित हो जायेगा। यदि हठात् इस वर्ष परिस्थितियोंके चक्करमें फँसकर जनमतका अभिनय किया गया तो उसका परिणाम श्रेयस्कर न होगा। काश्मीरी जनताको अभी आने वाली आपत्तियोंके लिए सन्नद्ध रहना चाहिए। वर्षके प्रारम्भमें काश्मीरकी समस्या सुलझती प्रतीत होगी, किन्तु आगे चलकर निकट भविष्यमें ही अन्यायियोंकी ओरसे भयानक गड़बड़ी, लूटमार रक्तपातकी सम्भावना है। इस वर्षके उत्तरार्धमें शेख अब्दुल्ला वा उनकी सरकार पर पाकिस्तानी जासूसोंका क्रांतिकारी घातक आक्रमण होकर भारत विरोधी दल निर्माण होनेकी सम्भावना है, सावधान रहें। जो सज्जन यह 'श्रीस्वाध्याय' पत्र निरन्तर पढ़ते हैं वे भली-भाँति जानते ही हैं कि एक वर्ष पहले ही हम काश्मीरकी समस्या अधिक गम्भीर बनने और विभाजनकी स्पष्ट सूचना दे चुके थे।

भारतके अन्यप्रान्त और राज्य संघ

बंगाल आसाम पंजाब बृहद् राजस्थान और महामालव की राजनैतिक आर्थिक और सामाजिक स्थिति विशेष चिन्ताजनक रहेगी। उक्त प्रान्तोंके मन्त्रिमण्डल जनताका पूर्ण विश्वास प्राप्त न कर सकेंगे। पूर्वी पंजाबमें (विशेषकर ग्राम्य जनता के लिए) चैत्रसे श्रावण तक, तथा वर्षान्तका समय पारस्परिक भय आतङ्क कारक है। इसमें कई जगह हत्याकाण्ड लूटमार चोरी डाके आदिकी दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। पूर्वी पञ्जाबकी नई राजधानी इस वर्षमें न बन सकेगी। राजस्थानमें यत्र-तत्र सामन्तशाही और तथाकथित प्रजातन्त्रका आन्तरिक संघर्ष उग्र रूपमें प्रकट होगा। रोग दुर्भिक्षादि उत्पात भी अधिक होंगे। बृहद् राजस्थानकी राजधानीका प्रश्न भी आन्तरिक असन्तोषका कारण बनेगा। एक राजप्रमुख और दो मन्त्रियोंके लिए अनिष्ट योग है, सावधान रहें। मन्त्रिमण्डलोंमें अवांछनीय परिवर्तन होगा। पश्चिमोत्तरीय राजस्थान पञ्जाब और सीमाप्रान्तोंकी राजनैतिक स्थिति डांवाडोल-सी रहेगी। युक्तप्रांतमें नवनिर्माण, शिक्षा-प्रसार, कृषिसुधार और उत्पादन वृद्धि आदिकी कई सफल योजनाएं कार्यरूपमें परिणत होंगी। नवनिर्मित हिमाचल प्रदेश उत्तरोत्तर उन्नतिकी ओर अग्रसर होगा। नगाधिराज हिमालयके सघनवनाच्छादित रत्नगर्भा वसुन्धरामें मूल्यवान् खनिज पदार्थोंके स्रोत प्राप्त होंगे, जिनसे समस्त भारतको पर्याप्त लाभ पहुँचेगा। परन्तु इसकी आर्थिक स्थिति सङ्कटापन्न ही रहेगी। पश्चिमी व पूर्वी भारत (सौराष्ट्र, राजस्थान, बिन्ध्यप्रदेश बिहार) में स्थानान्तरित लोगोंको बसानेके लिए अनुर्वर निर्जनभूमिको उपयोगी बनानेकी विशेष योजनाएं बनेंगी।

धार्मिक

वर्षलग्न जगल्लग्न-कुण्डलियोंमें धर्मेश बुध मङ्गल क्रमशः षष्ठाष्टम स्थानमें राज्येश तात्कालिक शत्रु चन्द्र शुक्रके साथ हैं, अतः इस वर्षमें राज्याधिकारियोंसे धार्मिक जगत्का तीव्र मतभेद रहेगा। गुरु भी नीच राशिगत है, अतः संसारमें अधर्म अनाचार एवं अन्यायकी वृद्धि होगी। केन्द्रमें होनेके कारण धार्मिक जागृति, सभा सम्मेलनोंके आन्दोलन तो खूब जोर-शोरसे चलेंगे और जनताका तात्कालिक सहयोग भी मिलेगा, किन्तु शासकों एवं धर्मभावना शून्य मानवोंकी मनोवृत्तिसे धर्मका वास्तविक अभ्युत्थान होने में अभी विलम्ब है। हिन्दू कोड-बिल का प्रबल विरोध होने पर भी इसके तथाकथित प्रजातन्त्री स्रष्टा अवधि आगे बढ़ाते-बढ़ाते कुछेक संशोधनोंके आवरण में हठात् एकबार तो समस्त हिन्दू-जनता पर लादनेका दुस्साहस कर ही बैठेंगे। तदनन्तर धार्मिक सङ्घशक्ति पूर्णरूपेण जागृत होकर इसके भयानक परिणामोंसे आर्योंकी रक्षा करेगी। आधिदैविक, आधिभौतिकादि त्रिविध-तापोंसे संतप्त प्रजा सत्य सनातनधर्मकी शरणमें आने लगेगी। हिन्दू जनता प्राचीन संस्कृति एवं शक्ति-सङ्गठनमें प्रयत्नशील होगी। अनुदार अकाली सिक्खोंकी ओरसे पूर्वी पञ्जाबमें

शान्ति-भङ्गका विफल प्रयत्न किया जायगा। परन्तु गत आषाढ़ माससे ही अकाली पार्टी और मास्टर तारासिंह शनिके अशुभ प्रभावमें आ गये हैं, अतः सिंहके शनिमें अकालीदल और मास्टर तारासिंह का प्रभुत्व पतनोन्मुख होता जाएगा। राष्ट्रवादी सिक्खोंका सरकारके साथ सहयोग रहेगा। वर्षलग्न जगल्लग्न कुण्डलियोंमें धर्मेश उच्चस्थ शुक्रके साथ है, अतः इस वर्ष धार्मिक क्षेत्रमें मातृशक्तिका महत्वपूर्ण स्थान रहेगा। कुछेक स्त्री-शक्ति नवीन रूपमें प्रकट होकर धार्मिक जगत्का पथ प्रदर्शन करेंगी। जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें स्त्रियोंका प्रभाव बढ़ेगा।

वर्षलग्न और जगल्लग्नके १२ भाव

(१) वर्षलग्नमें लग्नेश शुक्र सू० चं० मं० बु० के साथ छठे भावमें और जगल्लग्नमें शनि तथा लग्नेश सूर्य राहुके साथ नवम है, अतः इस वर्ष समस्त संसारका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम निर्मल न रहेगा। राज्येश के साथ योग और द्विर्द्वादश सम्बन्ध तथा प्रजासत्तात्मक चन्द्रमाका क्रूराक्रान्त होनेसे राजा प्रजामें स्नेह सद्भावना न रह कर पारस्परिक असन्तोष बढ़ेगा। शासनतन्त्रके कुछ विभागोंमें सुदृढ़ योजनाएँ बनेंगी और कई जगह कठोरतासे काम लिया जाएगा। तुला एवं सिंह लग्न होनेसे संसारमें भारतका सम्मान बढ़ेगा। (२) वर्ष लग्नमें धनेश मङ्गल व्ययेश बुधके साथ छठे और जगल्लग्नमें लग्नेश सूर्य राहु से पीड़ित एवं धनभाव मङ्गलसे दृष्ट है, अतः इस वर्ष भारतकी आर्थिक स्थिति सन्तोषप्रद न रहेगी। सरकारको आर्थिक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा। मङ्गलके कारण खनिज पदार्थ, उत्पादन, निर्माणकार्य एवं सुरक्षा तथा सैनिक सङ्गठनमें व्यय विशेष होगा। कुछ नये टैक्स लगाए जावेंगे। जनताका असन्तोष बढ़ेगा। वर्षका उत्तरार्ध अर्थमन्त्रीके लिए अरिष्ट प्रद है। वर्षके आरम्भमें अन्नादि खाद्य पदार्थोंकी स्थिति चिन्ताजनक रहेगी। परिस्थितिको अपने अनुकूल न पाकर सम्भवतः खाद्यमन्त्रीके पद-त्याग का प्रसङ्ग उपस्थित हो जाये तो आश्चर्य नहीं। जगल्लग्नका धनभाव गुरु शुक्रसे दृष्ट है अतः भारत भविष्यमें अपने ही उद्योगसे आर्थिक एवं खाद्यस्थितिको सुधार लेगा। (३) तृतीयेश गुरु केन्द्रमें (चतुर्थमें) है, अतः भारतका उद्योग व्यवसाय, यातायातके साधन, रेल, तार, डाक, मोटर विभाग, विश्वविद्यालय एवं विदेशी व्यापारमें महत्वपूर्ण सुधार होंगे। मोटर रेलवे इञ्जिन कागज और जहाज बनाने के बड़े-बड़े कारखाने यहाँ खोले जावेंगे। (४) चतुर्थभावमें गुरु और चतुर्थेश शनि लाभमें है, अतः खेती बाड़ी तथा भूमि सम्बन्धी कार्योंमें प्रगति होगी। राजधानी तथा कुछ प्रमुख नगरोंका विस्तार होगा। कृषि एवं उपज वृद्धिके लिए नई यान्त्रिक योजनाएं बनेंगी। किन्तु गुरु नीचस्थ है और जगल्लग्नमें चतुर्थेश मङ्गल अष्टम गया है, एतदर्थ इस वर्षमें भारतका कृषिउद्योग पूर्णरूपेण विकसित एवं समाधान कारक न हो सकेगा। कहीं अवर्षण, कहीं अतिवर्षण तो कहीं प्रकृति-प्रकोपसे फसलमें हानि होगी। गुरुके कारण गृहविभाग (होम डिपार्टमेंट) यशस्वी तो होगा, किन्तु जगल्लग्नमें चतुर्थेश मङ्गलका राज्येशके साथ अष्टममें जाना गृहमन्त्रीके लिए चिन्ताकारक है, अतः इस वर्षके आरम्भिक आठ मास तक उन्हें स्वास्थ्यकी ओरसे विशेष सतर्क रहना चाहिए। (५) वर्षलग्नमें गुरु केन्द्रमें और पञ्चमेश लाभमें है अतः विश्वविद्यालयोंकी शिक्षाप्रणालीमें पर्याप्त सुधार होगा। राष्ट्रभाषा हिन्दीका गौरव बढ़ेगा। विज्ञान एवं कला कौशलमें भी भारत पर्याप्त उन्नति करेगा। जगल्लग्नमें पञ्चमेश गुरु नीचस्थ छठे गया है यह शिक्षामन्त्री के लिए भी सन्तोषप्रद नहीं है, सावधान रहें। (६) छठे भावमें मीन राशिमें पञ्चग्रह योग भारतकी जलस्थल नभसेनाको यशस्वी बनाने वाला है। सैनिक सङ्गठन सुदृढ़ होगा। नीचस्थ गुरु गुप्तशत्रु उत्पन्न करता है। अनार्य गुप्तचर एवं विरोधीतत्त्व भारतको हानि पहुँचानेकी ताकमें रहेंगे। वर्षेश कुण्डलीमें षष्ठेश शनि लग्नमें और सेनानायक मङ्गल राज्येश शुक्रके साथ अष्टममें गया है यह रक्षामन्त्रीके लिए दूषित वातावरण बनाने वाला है। वर्षान्तमें उन्हें अग्निपरीक्षासे निकलना होगा, सावधान रहें। यही योग वर्षके उत्तरार्धमें संसारके किन्हीं दो अन्तर्राष्ट्रियख्यातिप्राप्त सेनापतियोंकी मृत्युका सूचक भी है। (७) सप्तमभावसे ज्ञात होता है कि विदेशोंसे भारतका सम्बन्ध मैत्री पूर्ण रहेगा। एशियामें भारतका प्रमुख स्थान

होगा। यूरोप और अमेरिका भी भारतीय विदेश नीतिसे प्रभावित होंगे। वाणिज्य व्यवसायमें उन्नति होगी। (८) अष्टमभावसे प्रतीत होता है कि रोग, दुर्भिक्ष उपद्रवादि द्वारा मृत्यु संख्या बढ़ेगी। संसारके किसी महान् राजनीतिज्ञकी आकस्मिक मृत्यु होगी। भारतमें भी किसी लोकप्रिय वयोवृद्ध नेता, वैज्ञानिक, विधानशास्त्री वा धार्मिक महापुरुषके वियोगसे दुःख होगा। (६) नवमभावसे ज्ञात होता है कि इस वर्षमें धार्मिक वा सामाजिक क्रांति होगी। धार्मिक आर्य प्रकृतिके लोगों पर आरम्भमें अनेक आपत्तियाँ आवेंगी, किन्तु वे साहस पूर्वक उनका प्रतीकार करेंगे। (१०) दोनों कुण्डलियोंमें राज्येश षष्ठाष्टमस्थ हैं, अतः यह वर्ष राज्यवादी सामन्तशाही लोगों और व्यक्तितन्त्रके लिए अनिष्टप्रद है। शासनतन्त्रके सामने नई २ विषम समस्याएं आती रहेंगी। किन्तु राज्यभाव गुरुसे पूर्ण दृष्ट है, अतः अन्तमें शासकोंकी सामयिक नीतिपटुतासे समस्याएं सुलझेंगी और राष्ट्रीय-सरकार विदेशोंमें गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त करेगी। कोई शक्ति सम्पन्न महापुरुष भारतको पथ प्रदर्शकके रूपमें प्राप्त होगा। (११) लाभ भावसे प्रतीत होता है कि इस वर्षके पूर्वार्धमें भारतीय आय या उत्पादन शक्ति सन्तोषजनक न रहेगी। उत्तरार्धमें स्थिति सुधरती प्रतीत होगी। (१२) बारहवें भावका सम्बन्ध विशेषतः व्यय बाधाएं, उत्पात, लड़ाई झगड़े तथा गुप्त शत्रुओंसे है। यहाँ व्ययेश बुध नीचका पञ्चग्रहीके चक्रमें है, तथा चन्द्रमा केतुके साथ है अतः म्लेच्छ या अनार्य सम्प्रदायवादी लोगों, तथाकथित साम्यवादियों (कम्यूनिस्टों) और गुप्त शत्रुओंसे भारतको भय रहेगा। उनकी ओरसे राष्ट्रिय प्रगतिमें बाधा डालनेकी अनेक कुटिल चालें चली जायेंगी, किन्तु व्ययभाव गुरुसे दृष्ट है अतः गुरुकी नीति निपुणताके कारण अन्तमें ऐसे सब दुष्प्रयत्न नष्ट होकर भारतको अपने ध्येयमें सफलता मिलेगी।

व्यापार

वर्षलग्नमें व्यापारेश चन्द्र छठे तथा जगत्लग्नसे व्यापारेश शुक्र अष्टम स्थानमें चतुर्थेश नवमेश मङ्गलसे युक्त हैं और दोनों लग्नोंमें क्रमशः के० श० हैं। इन योगों से व्यापारकी स्थितिमें इस वर्ष भी सुधारकी आशा नहीं उत्पादन वृद्धि का चारों ओरसे भरसक प्रयत्न होनेपर भी संसारमें अन्नवस्त्रादि जीवनोपयोगी वस्तुएँ सर्वसुलभ न होंगी। वर्षलग्नमें प्रजासत्ता कारक चन्द्रमा व्यापारेश होकर छठे चारग्रहोंके साथ निर्बल है, अतः इस वर्षमें व्यापारियोंका मन निर्मल न रहेगा। कालाबाजार अनुचित मुनाफाखोरी और अधिकारियोंकी घूसखोरीसे प्रजा त्रस्त रहेगी। दशम स्थानमें वृषभराशि राष्ट्रियसरकारकी लग्नराशि होनेसे इस वर्ष बड़ी-बड़ी फैक्टरियां, रेलवे, मोटर, वायुयान, और जलयानोंके कारखानोंको सरकारी प्रोत्साहन मिलेगा और कुछ नये कारखाने भी खुलेंगे। अन्न (गेहूँ चावल दालें) वस्त्र, गुड़ शक्कर, घृत, दुग्ध, वस्त्र, तिलहन और सोना चांदीका मूल्य युद्धपूर्वस्थितिमें नहीं आ सकेगा। वैदेशी वस्तुएँ, मशीनरीका सामान, विलास सामग्री, स्टेशनरी और औषधियोंके मूल्य प्रायः बहुत घटेंगे। मंगलके कारण राशनिंग प्रणाली इस वर्षमें पूर्णरूपेण समाप्त न होगी। कुछेक खाद्य पदार्थों पर पुनः कण्ट्रोल होकर खुले व्यापार या कालेबाजार पर प्रतिबन्ध लगेगा। पहली फसलके पकने तथा राजकीय नियन्त्रणके कारण वर्षके आरम्भिक भागमें अन्न वस्त्रादि पदार्थोंके भाव कुछ सस्ते होते दिखाई देंगे। परन्तु आगे मार्गशीर्षमें शनि मंगल युद्ध, पौषमें गुरु शुक्र युद्ध, माघमें गुरुके अतिचारमें शनि वक्री और फाल्गुनमें ५ ग्रह वक्री हो रहे हैं, ये संसार भरके लिए चिन्ताजनक स्थिति एवं च दुर्भिक्षादिका भय उत्पन्न करने वाले हैं। कई प्रांतोंमें भीषण दुर्भिक्ष, अन्नधान्यकी महंगता एवं बाहरी देशोंसे आयात न्यून होनेसे भारतको भी संकटग्रस्त होना पड़ेगा।

यदा क्रूरागता वक्रे ह्यतिचारे तु सौम्यकाः।
पीड़ा व्याधिभयं तत्र दुर्भिक्षं राज्यविग्रहः॥
अतिचारगते जीवे वक्रीभूते शनैश्चरे।
हा! हा! भुवं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले॥
अब्दमध्ये यदा जीवः क्रमाद्राशित्रयं स्पृशेत्।
तदा सुभटकोटिभिः प्रेतपूर्णा वसुन्धरा॥

इस वर्ष रुई चांदी सोना अन्न धान्य और तिलहनके व्यापारियोंको बहुत सावधान रहना चाहिए। समय पर अनुभवी दैवज्ञों से सलाह लेकर अपनी ग्रहस्थितिके अनुकूल व्यापार करना श्रेयस्कर होगा। रूईकी उपज और

आयात इस वर्ष कम होनेसे कार्तिकसे आगे भाव ऊपर जायेंगे। वैशाख ज्येष्ठके आरम्भ (कृष्णपक्ष) में और श्रावण शुक्ल भाद्रपद कृष्ण, माघ शुक्ल और फाल्गुन कृष्ण पक्षमें रुई आदि वस्तुओंके भाव मंदीमें चलेंगे। उक्त अवधिमें रूईमें २०) से ५०) तक मंदी आ जाना सम्भव है। तिल तैल अलसी सरसों एरण्डा लोहा चना हल्दी चांदी सोना आदि पदार्थ मार्गशीर्षसे ३ मास तक तेज रहेंगे। घृत शक्कर गुड़ादि रस पदार्थ आषाढ़ तक तेज रह कर श्रावणसे चार मास तक मंदे हो, बाद तेज होंगे।

भारतका वायुमण्डल वर्षा आदि—

इस वर्ष प्रायः समस्त संसारका वायुमण्डल दूषित-सा रहेगा। प्रकृतिप्रकोप अधिक होगा। भारतमें भी कहीं-कहीं ऋतु वैपरीत्य (गर्मीमें सर्दी, सर्दीमें गर्मी और असामयिक वृष्टि) दिखाई देगी। चैत्र वैशाखमें वायु बहुत चलेगी, कहीं कहीं बादल बूंदा बांदी भी होगी। वैशाखसे आषाढ़ तक अनेक प्रांतोंमें आंधियां आवेंगी। प्रमुख नगरोंमें पानी की बहुत तंगी रहेगी। अग्निकाण्ड होंगे। आषाढ़ श्रावण में वर्षाकी खेंच रहेगी। श्रावण भाद्रपदमें कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टि होगी। आश्विनमें अनावश्यक वृष्टि से हानि होगी। कार्तिकमें वायु अधिक चले, कहीं अग्नि-काण्ड वा विस्फोटसे जन-धनका विनाश होनेकी सम्भावना है। मार्गशीर्षमें समुद्री तूफानोंसे जलयानोंको हानि होगी। पौष माघ मासमें उत्तरीय भारत पर्वतीय प्रदेशोंमें शीत अधिक पड़ेगी। कहीं-कहीं ओले तथा शीतसे फसलमें हानि होगी। फाल्गुन मासमें रोगोत्पातादि होंगे।

पाकिस्तान

यद्यपि हम भारतके उस वैदिक नदियोंसे सुशोभित आर्यसंस्कृति-प्रधान ऐतिहासिक भूभाग (पश्चिमी पंजाब और सिन्ध) को 'पाकिस्तान' इस कृत्रिम नामसे सम्बोधित करना नहीं चाहते, तथापि देशके दुर्भाग्यसे इस समय वह प्रदेश अनार्योंके अधिकारमें है और हमारे कुछ नेताओं ने उसे 'पाकिस्तान' नामसे माना है। अतः बाध्य होकर हमें भी इसी नाम (पाकिस्तान) का उल्लेख करना पड़ रहा है। जो सज्जन पाकिस्तानमें अपना सर्वस्व समाप्त कर यहां आये हुए हैं, वे पुनः अपने घर जानेको उतावलीमें हैं। कुछ सहयोगी ज्योतिर्विदोंने भी सं० २००६।७ में पाकिस्तान समाप्ति और वहांके सब स्थानान्तरित लोगोंको अपने-अपने घर पहुँचनेकी भविष्यवाणी भी की है। किन्तु, हम उनकी इस विचारधारासे सहमत नहीं। पाकिस्तान पुनः भारतमें मिलेगा तो अवश्य, परन्तु सं० २०१० से पूर्व भारतीय जनता वहां सुख शांतिसे नहीं रह सकेगी। सं० २०२० वि० तक न केवल पाकिस्तान ही अपितु समस्त यवनराज्य पतनोन्मुख हो जायेंगे। भारतीय आर्यसंस्कृतिका अभ्युत्थान सं० २०१५ से होने लगेगा। सं० २०२० वि० में भारत अपने पूर्व गौरवको प्राप्त करके सुखी एवं समृद्ध हो सकेगा। यह हम १५ अगस्त के समाचारपत्रों और गत वर्ष 'श्रीस्वाध्याय' में भी स्पष्ट लिख चुके थे कि "भारतके साथ पाकिस्तानका सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण न रह कर संघर्षमय बना रहेगा। इस वर्ष वैशाख, भाद्रपद और मार्गशीर्षसे आगे भारतके साथ पाकिस्तान की दूषित भावनाएं उत्तरोत्तर बढ़ती जायेंगी। इस वर्ष पाकिस्तानमें पारस्परिक मतभेद, युद्ध, रोग दुर्भिक्षादि दैवीप्रकोपसे भयंकर विनाश होगा! सरकारकी स्थिति अत्यन्त गम्भीर होगी। मुसलमानोंकी नवीन पार्टियाँ संगठित होकर सरकारको उलटनेकी क्रान्तिकारक चेष्टा करेंगी। सीमान्तके कबायली पठान और लालकुर्ती दल वाले सशस्त्र विद्रोह करेंगे। नवाबी स्वप्नके महत्त्वाकांक्षी मियां लोग विदेशी सत्ताओंके एजेण्ट हो पारस्परिक मत-भेदोंमें फँसकर भारतसे टकराते हुए निर्बल बन पाकिस्तान के पतनका बीजारोपण करेंगे। मन्त्रिमण्डलमें परिवर्तन होगा। गवर्नरजनरल ख्वाजा निजामुद्दीन और सीमाप्रान्त के प्रधानमन्त्री अब्दुलक्यूमके लिए यह वर्ष शुभ नहीं है, सावधान रहें। किसी प्रमुखराजनीतिज्ञ और सेनापति की मृत्यु होगी। पूर्वी पाकिस्तानमें आधिदैविक उत्पात, कम्यूनिष्ट आतङ्क और अराजकतासे भयानक विनाश होगा।

इंगलैण्ड—वर्षारम्भमें इंगलैण्डके व्ययस्थान मीनराशि में पंचग्रहयोग और वैशाखमें जन्मराशीश पर षड्ग्रहयोग हो रहा है, अतः यह वर्ष इंगलैण्डके लिए शुभ नहीं है। किन्हीं दो प्रसिद्ध पुरुषोंकी मृत्यु होगी। अग्निकांड और दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। वर्तमान मजदूर

गवर्नमेण्ट और अनुदार दल में तथा उपनिवेशों और अधीनदेशोंमें पारस्परिक संघर्ष बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति आशाजनक न होगी। प्रतिगामी शक्तियोंका प्रभाव बढ़ेगा। सोवियत रूसके प्रति बृटेनका रुख अधिक कड़ा होगा। जर्मनी और मध्यपूर्वकी घटनाएं चिन्ताका कारण बनेंगी। वर्षारम्भमें इंगलैण्डके राजा षष्ठ जार्जका स्वास्थ्य संतोषजनक न रहेगा।

रूस—श्री स्टालिनको मंगलकी महादशामें शुक्र का अन्तर है। शनि जन्मराशिसे छठे और लग्नसे ११ वें जा रहा है, यह रूसकी प्रतिष्ठा और रूस की महत्वाकांक्षाके लिए तो अनुकूल है, परन्तु स्वास्थ्यके लिए विशेष उत्तम नहीं। सिंह के शनिमें रूसके अन्दर अधिक उदार नई तरुण पीढ़ी का शासन प्रारम्भ होगा। यूरोपियन प्रभाव क्षेत्रमें राजनैतिक हत्यायें होंगी। जनता में आन्तरिक असन्तोष एवं अशान्ति बढ़ेगी। रूस अपने आदर्श और विचारधाराका दबाव दक्षिणकी ओर विशेष बढ़ाएगा। पश्चिमी राष्ट्रोंसे सम्बन्ध तने रहेंगे। तुर्कीके साथ कई बार अशान्तिकारक घटना का प्रसंग आयेगा।

फ्रान्स और इटली—जब तक शनि सिंहराशि में रहेगा तब तक फ्रांस और इटलीमें राजनैतिक शांति नहीं होगी। फ्रांस स्थायी गवर्नमेण्टकी स्थापना के लिए वर्षभर संघर्ष करता ही रहेगा। एकके बाद दूसरी विपत्ति आनेसे विद्रोह क्रांतिका सामना करना होगा। अनुदार नीतिको अपनाने और स्वार्थान्ध मंत्रियोंकी नीतिके कारण राष्ट्रिय सुरक्षासंकटापन्न हो सकती है। इटलीमें राज नीतिक और प्राकृतिक उलट फेरसे अशान्ति रहेगी।

जर्मनी—जर्मनीमें गुप्त आन्दोलन बढ़ेगा। पहलेके मित्र राष्ट्रोंमें मतभेद होनेसे जर्मनीकी प्रजा को लाभ होगा। वर्षके उत्तरार्धमें जर्मनी अपना बल बढ़ाने का प्रयत्न करेगा। नवीन सैनिक संगठन होगा। स्पेनमें इस वर्ष गम्भीर अशान्ति और गृह अनैक्य जैसी स्थिति रहेगी। फ्राङ्कोंके लिए यह वर्ष अनेक प्रकारकी उलझनोंसे भरा हुआ है।

मिश्र और फिलस्तीन—मिश्रके लिए भी यह वर्ष शुभ नहीं है। विपत्ति और गरीबी सम्पूर्ण बाल-कन राष्ट्र में छाई रहेगी। ग्रीसमें घटित घटनाएँ अनेक बार विश्वव्यापी युद्ध को निकट लाती हुई प्रतीत होंगी। मिश्रका सम्बन्ध बृटेनसे अधिक तन जायगा। अरब राज्यकी एकतामें बाधा पड़ेगी। इजराइल राष्ट्र शक्ति प्राप्त करेगा। फिलस्तीनकी मेष राशि हैं, वर्षारम्भमें पंचग्रह और षड्ग्रहयोग वहां भयंकर रक्तपात का सूचक है। फिलस्तीन अन्तर्राष्ट्रिय समस्याका विषय बना ही रहेगा। निकट पूर्वमें भयानक संक्रामक रोग फैलेगा।

जापान, बर्मा, हिन्देशिया—जब तक शनि सिंह राशिमें रहेगा तब तक जापान, बर्मा, हिन्देशिया, मलाया और हिन्दचीनमें अशान्ति एवं अराजकताके चिन्ह बने रहेंगे। जापानमें प्राकृतिकप्रकोप, ज्वालामुखी स्फोट, भूकम्प, बाढ़ आदि से हानि होगी। सन्धिकी शर्तें उग्र होंगी। हिन्देशिया, बर्मा मलाया, सिंगापुर, जावा, सुमात्रादि द्वीपसमूहोंमें कम्यूनिस्टोंका आतङ्क बढ़कर गृहयुद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। इससे धन जनकी क्षति ही अधिक होगी, लाभ किसी को कुछ न होगा। दक्षिण पूर्वी एशियाके अन्यान्य भागोंमें कम्यूनिष्ट लोग शान्ति भङ्गका प्रयत्न करेंगे। जापान सम्राट हिरोहितो का स्वास्थ्य ठीक न रहेगा।

चीन—मार्शल च्यांगकाईशेकको गत आषाढ़ मास से शनिकी साढ़साती प्रारम्भ हो चुकी है। वर्षारम्भमें मीन राशिमें पंचग्रह योग चीन और च्यांगके लिए दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति उत्पन्न करने वाले हैं। भाद्रपद मासमें शनि सूर्यकी युतिके समय और मार्गशीर्ष में शनि मंगल युद्ध के समय च्यांगकी प्रतिष्ठा और जीवन संकटमें पड़ने वाला है। वर्षारम्भमें ही (सम्भवतः चैत्र में) च्यांगका पतन हो जाये और भाद्रपद तक प्रायः समस्त चीन कम्यूनिष्ट प्रभाव क्षेत्रमें चला जाये तो कोई आश्चर्य नहीं।

अमेरिका—वर्षके आरम्भमें अमेरिकाकी मिथुन राशि पर मंगलकी दृष्टि है, राशीश बुध छठे घरमें नीच का होकर सू. चं. मं. शु. के साथ पड़ा है। तथा वर्षान्त में सिंहराशिमें मंगल शनि युद्धके परिणामसे इस वर्ष अमेरिका में राजनैतिक विरोधियोंकी महत्वाकांक्षाएँ बढेंगी, बड़े-बड़े उद्योगोंमें, धार्मिक समूहों और राजनैतिक

[शेष ६२ पृष्ठ पर]

त्रैमासिक राशिफल

[लेखक—श्री पं० दामोदर शर्मा ज्योतिषी गैनियाल]

सौर वैशाख मास

(ता० १३ अप्रैल से १३ मई तक)

मेष—व्यापारमें लाभ, शारीरिक सुख, भाग्य वृद्धि, किसी अन्य कार्यमें धनका व्यय हो।

वृषभ—संतान तथा स्त्रीका सुख, शारीरिक कष्ट वा मानसिक चिन्ता, साधारण धनका व्यय हो।

मिथुन—राज्य पक्षसे उन्नति, शरीरमें वायु संबंधी विकार, व्यापारसे लाभ, भाग्य वृद्धि।

कर्क—राजकीय कार्योंमें विजय, सन्तान सुख, व्यापारसे लाभ, शारीरिक सुख, भाग्योदय हो।

सिंह—व्यापारसे लाभ, शत्रुओं की वृद्धि, शरीरमें पित्तजनित व्यथा, तथा स्त्री सुख रहे।

कन्या—राज्यपक्षमें उन्नति, मानसिक चिन्ता, स्त्री सुख, रक्त सम्बन्धी विकारसे शारीरिक कष्ट, व्यापारसे मध्यम लाभ।

तुला—माताको कष्ट, शत्रु पक्षका ह्रास, स्त्री चिंता, विषम भोजनमें अरुचि हो।

वृश्चिक—मातृ स्त्री तथा सन्तति सुख, चित्तप्रसन्न, किन्तु शारीरिक व्यथा, भाइयोंको कष्ट हो।

धनुः—शारीरिक सुख, चित्त प्रसन्न, स्त्री सुख की न्यूनता, भ्रातृ विरोध, सन्ततिका सुख।

मकर—शारीरिक सुख, चित्त प्रसन्न, धन लाभ न्यून्य, व्यापारमें अच्छा लाभ न हो, तथा मानसिक व्यथा बनी रहे।

कुम्भ—मांगलिक कार्य में धनका व्यय भोजनमें अरुचि, स्त्री तथा सन्तति सुख हो।

मीन—शरीरमें पित्तजनित व्यथा, व्यापारमें लाभ, भाग्योदय, अन्य फल सामान्य

सौर ज्येष्ठ मास

(१४ मई से १३ जून तक)

मेष—धन व्यय अधिक, स्त्रीकी चिन्ता, मानसिक व्यथा, राज्य पक्षमें विजय, व्यापारमें लाभ।

वृषभ—व्यापारसे साधारण लाभ, यात्रामें हानि, शरीरमें वायु सम्बन्धी विकार, कार्य व्यवसाय की अधिक चिन्ता होगी।

मिथुन—धार्मिक कार्यमें धन व्यय, तीर्थयात्रा, शारीरिक सुख, प्रतिष्ठा वृद्धि, लाभ अच्छा।

कर्क—अधर्ममें प्रवृत्ति, व्यापारमें न्यूनता, मनमें चिन्ता, लाभ थोड़ा।

सिंह—भाइयोंसे विरोध, शत्रुका नाश, शरीरमें वायु सम्बन्धी विकारकी वृद्धि, अनेक चिन्ताएँ।

कन्या—राज्य पक्षसे भय, व्यापारमें लाभ मध्यम, संतान कष्ट, मनमें चिन्ता।

तुला—किसी कार्यमें व्यर्थ व्यय, लाभ उत्तम, शत्रु का नाश, मित्रोंकी चिन्ता।

वृश्चिक—धार्मिक कार्यमें व्यय, स्त्री सुख, शारीरिक कष्ट, लाभ न्यून।

धनुः—धार्मिक कार्यमें अरुचि, लाभ सामान्य, शरीर में रक्त सम्बन्धी विकार, शत्रुभय बना रहे।

मकर—यात्रामें कष्ट, अन्य चिन्ताओंकी वृद्धि, राज्य पक्ष तथा व्यापारसे लाभ।

कुम्भ—व्यय अधिक हो, कार्य व्यवसाय मध्यम रहे, लाभ थोड़ा, स्त्रीकी चिन्ता अधिक रहे।

मीन—फोड़ा या चोट का भय, शरीर में वायुकी वृद्धिसे दुःख, शत्रुनाश, सन्ततिकी चिन्ता।

सौर आषाढ़ मास

(ता० १४ जून से १२ जुलाई तक)

मेष—सन्तति कष्ट, स्वजनोंसे विरोध, मनमें चिन्ता अधिक रहे। व्यापारसे मध्यम लाभ।

वृषभ—राज्य पक्षमें विजय, व्यापारसे लाभ, संतान को दुःख, यात्रासे कष्ट।

मिथुन—सन्तान सुख, मित्रोंसे मिलाप, काय व्यवसाय उत्तम, शुभ कार्यमें धनका व्यय हो।

कर्क—धनका अधिक व्यय, निकृष्ट कार्योंमें प्रवृत्ति, शिर तथा नेत्रोंमें पीड़ा, मन मलीन।

सिंह—यात्रामें कष्ट, धनका अधिक व्यय, व्यापार में सामान्य गड़बड़, शत्रु भय, मानसिक चिन्ता।

कन्या—मित्र बान्धवोंसे विरोध, वादविवादमें हानि, शरीरमें पीड़ा, घरकी अनेक चिन्ताएँ।

तुला—राज्य पक्षसे उन्नति, मान वृद्धि, व्यापारमें लाभ उत्तम, शत्रु नाश, सन्ततिको कष्ट।

वृश्चिक—लाभ उत्तम, पुत्र स्त्री गृह सम्बन्धी कार्य के लिए धन व्यय, शारीरिक सुखकी चिन्ता रहे।

धनु—लाभ उत्तम परन्तु साथ ही व्यय भी अधिक हो। कार्य में विघ्न मनमें बेचैनी बनी रहेगी।

मकर—व्यापार व्यवसायमें अनेक विघ्न वा हानि हो, शरीर सुख मध्यम, मित्र बान्धव विरोधी होंगे।

कुम्भ—यात्रामें हानि, स्त्री चिन्ता, बान्धव विरोध, वृथा वादविवाद तथा दुःस्वप्न भी हों।

मीन—व्यापारमें लाभ, शत्रु नाश, राज्य पक्षमें उन्नति, शुभकार्यमें धनका व्यय, यात्रामें कष्ट।

स्वतन्त्र भारत और उद्योग प्रणाली

[लेखकः—श्री जगदीशनारायणसिंहजी साहित्यरत्न]



किसी भी देशका उत्थान उसके आर्थिक विकास पर अवलम्बित होता है। अपने देशकी आर्थिक स्थितिकी जब हम विश्वके अन्य राष्ट्रोंके साथ तुलना करते हैं तो अपनेको बहुत ही पिछड़ा हुआ पाते हैं। किन्तु इससे हमें अपनी भावी समुन्नतिके लिए उदास और निराश न होना चाहिए। हमारे देशमें उत्पादनके साधन प्रचुर मात्रामें विद्यमान हैं, प्राकृतिक साधनों—मैंगनीज, कच्चा लोहा, कोयला तथा जूट आदि—का देशमें भण्डार-सा भरा पड़ा है। सस्ते श्रमका भी अभाव नहीं है। यदि अभाव है तो केवल पूंजी संगठन और व्यवस्थाका। इन अभावोंकी पूर्ति करके देशमें उत्पादनकी अभिवृद्धि की जा सकती है। उत्पादनकी वृद्धिमें ही देशकी आर्थिक समुन्नति निहित रहती है।

कृषि और उद्योग उत्पादनके ये ही दो प्रमुख आधार हैं। प्राचीन कालमें हमारा देश इन द्विविध उत्पादन आधारोंको सुदृढ़ करके अपने वैभवको बढ़ानेमें कहाँ तक सफल रहा, इसके इतिहास पृष्ठ साक्षी हैं। कृषिके साथ-साथ कला-कौशल और उद्योगकी समुन्नतिने ही इस देशको विश्वका सिरमौर होने का गौरव प्रदान किया था! आज भी हमारे देशमें अनेक प्रकारके उद्योग-धन्धे प्रचलित हैं। किन्तु उनकी वर्तमान दशाको देखते हुए ढाकेकी मलमलकी प्रशंसा कपोल-कल्पना-सी ही ज्ञात होती है। यन्त्रोंके इस युगमें अपनी साधारण उद्योग प्रणालीका आश्रय ग्रहण कर अपना पूर्व गौरव प्राप्त करना बहुत ही कठिन है। इसके मूलकारण हमारी उद्योग प्रणालीके निम्न लिखित दोष ही कहे जा सकते हैं:—

(१) कारीगरों में साधारण शिक्षाका अभाव।
(२) उपयुक्त यन्त्रोंके प्रयोगका अभाव।
(३) उद्योगके समुचित आरम्भका अभाव।
(४) कारीगरोंमें पारस्परिक सहयोग का अभाव।
(५) पूंजीकी न्यूनता जिससे सस्ते व्याजमें ऋण न मिलनेका अभाव।
(६) कारीगरों और ग्राहकोंमें घनिष्टताका अभाव।
(७) व्यवस्थित बाजारोंका अभाव।
(८) औद्योगिक शिक्षाके प्रचारका अभाव।

कुछ लोग इस बातका दृढ़ता पूर्वक समर्थन करते हैं कि आवश्यक सुधारों द्वारा अपने प्रचलित घरेलू उद्योगोंकी उन्नति करके देश का यथेष्ट आर्थिक विकास किया जा सकता है। किन्तु अन्य लोग देश के आर्थिक उत्थानके लिए विस्तृत उत्पादन-प्रणाली को अपनानेके पक्षमें हैं। वस्तुतः यह विषय बड़ा ही विवादग्रस्त है।

इसमें सन्देह नहीं कि अधिकांशमें विस्तृत उद्योग प्रणाली साधारण प्रणालीसे उपयुक्त और श्रेयस्कर है। किन्तु इससे कुछ हानियां भी हैं, जिनके नैतिक और सामाजिक केवल दो ही प्रमुख दृष्टिकोण हैं—एक ही स्थानमें अत्यधिक लोगोंके एकत्र होनेसे नैतिक और शारीरिक दोनों ही प्रकारके स्वास्थ्यको धक्का लगेगा। जहाँ घरेलू उद्योगमें अधिकाधिक संख्या में लोग स्वतन्त्र हैं, विस्तृत उत्पादन-प्रणालीमें उस स्वतन्त्रताको मिटाकर थोड़ेसे लोग सुखी हो सकेंगे।

एक ओर लोगोंको भय है कि पाश्चात्य पदार्थ-विज्ञान हमारे प्राकृतिक-साधनोंका विनाश कर

हमारे आध्यात्मिक आदर्शोंको लुप्त कर देगा।

दूसरी ओर लोगोंको यह विश्वास है कि भावी सन्तानको एक औद्योगिक क्रान्तिके मध्यसे अपना मार्ग तय करना होगा। एक ओर लोग देश को समृद्धिशाली देखनेके इच्छुक हैं। विस्तृत उत्पादन प्रणालीको अपनाकर देशके फलने फूलनेकी पूर्ण आशा करते हैं, दूसरी ओर यह आशंका है कि भयंकर क्रांतिसे देशमें दुःख और दारिद्र्यकी व्यापक वृद्धि होगी। वस्तुतः इंग्लैण्डकी औद्योगिक क्रान्ति तथा अन्य देशोंकी इस प्रकारकी घटनाओं से उत्पन्न बुराइयाँ भुलाई नहीं जा सकती। साथ ही साथ यह भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि पाश्चात्य देशोंमें प्रचुर सम्पत्तिके साथ ही दरिद्रता भी किसी न किसी रूपमें खड़ी है।

यह सब जानते हुए भी इस बातकी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि बिना लोगोंके नियन्त्रणके ही विस्तृत उत्पादन प्रणालीने अपना यह स्वरूप प्रकट किया है। यह किसीके रोके रुक नहीं सकती। अनेक बाधाओंका सामना करते हुए भी यह बढ़ने और विस्तृत होने के लिये बाध्य है। यदि देशवासी इससे लाभ न उठायेंगे तो अन्य देश वाले इस अवसरको छोड़ भी नहीं सकते। फलतः अपने देशमें विदेशी वस्तुओंकी एक बाढ़ सी आ जायगी। विदेशी शासनके अन्तर्गत रह कर हमारी मनोवृत्ति उनका सहर्ष स्वागत करनेके अनुकूल हो भी गई है। अतएव विस्तृत उत्पादन प्रणालीके निम्नाङ्कित उपयोगों को ध्यानमें रखते हुए हमें उसे अपने देशमें प्रचलित करनेमें लेशमात्र भी संकोच नहीं होना चाहिए—

(१) लोगों को अपनी योग्यतानुसार कार्य प्राप्त करनेका अवसर सुलभ होगा।

(२) नवीन प्रस्तुत यन्त्रों द्वारा उत्पादन की अभिवृद्धि होगी।

(३) प्रतियोगिता रूपमें घरेलू-उद्योगोंमें शीघ्रतापूर्वक सुधार होंगे।

(४) नवीन आविष्कारोंको प्रोत्साहन मिलेगा।

(५) कुशल और अनुभवी लोगों का कार्य-क्षेत्र विस्तृत हो जायगा।

(६) पदार्थोंका समुचित चुनाव होगा।

(७) भोग्य वस्तुएँ उत्पादनमें आधिक्य के कारण सस्ती होंगी।

(८) थोक-विक्रयकी सुविधासे विक्रय सम्बन्धी कठिनाइयाँ दूर हो जाँयगी।

(९) व्यर्थ समझ कर फेंक दी जाने वाली छोटी-छोटी वस्तुएं भी प्रयोगमें आने लगेंगी।

उपरोक्त अनेक लाभोंको दृष्टिमें रखते हुए हमें विस्तृत उत्पादन प्रणालीको अपने देशमें प्रचारित करनेका अवश्य ही प्रयत्न करना चाहिए। उसके साथ-साथ पूरक अथवा अनुपूरक रूपमें घरेलू उद्योगोंका भी पर्याप्त विकास हो सकता है।

जापान और स्विटज़रलैण्ड ये दो देश हमारे सामने उदाहरण रूपमें हैं। जापान अपने घरेलू उद्योगोंके विकास द्वारा ही विस्तृत उत्पादन-प्रणाली को अपनानेमें सफल हुआ है। स्विटज़रलैण्डमें आज भी वहांकी जनसंख्याका लगभग १/३ भाग अपने घरेलू उद्योगमें ही संलग्न हैं। हम मानते हैं कि ऐसे लोग धन-संग्रह करनेमें पूर्ण समर्थ नहीं हैं, तथापि सुखपूर्वक जीवन निर्वाह करनेमें इन्हें किसी प्रकारकी कठिनाई नहीं है। अन्ततः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि विस्तृत उत्पादन प्रणाली का आश्रय लेकर भी हमें अपने साधारण घरेलू उद्योगोंकी यथाशक्य रक्षा करनी होगी और उसके विकासके लिये पूर्ण प्रयत्नशील भी होना पड़ेगा।

———

सोना चाँदी गुड़ आदिकी तेजी-मन्दी

[लेखक--श्री यादवचन्द्र जी जैन ज्योतिर्विद्]



वैशाख मास (अप्रेल)

ता.	वार	बाजाररुख
१४	वृ.	चांदी, अन्न, सरसों तेज।
१५	शु.	चांदी तेज।
१६	शनि.	कुछ मन्दी से तेज।
१८	सोम	घटबढ़ बहुत हो।
१९	मं.	चांदी, अन्न, सरसों, गुड़ तेज।
२०	बुध.	चांदी मन्दी।
२१	बृह.	चांदी, सोना, गुड़, सरसों तेज।
२२	शु.	चांदी, गुड़, सरसों, अन्न तेज। (परन्तु चांदी, सरसों, में मन्दी भी सभव है)
२३	शनि.	चांदी तेज।
२५	सोम.	चांदी, सोना मन्दे, सरसों, अलसी, मूंग, उड़द, चना में घट बढ़ होवे तेज।
२६	मं.	घटबढ़ से रुख तेजी का।
२७	बुध.	चांदी, सोना, अन्न, गुड़, तेज।
२८	बृह.	प्रत्येक बस्तु तेज।
२९	शु.	चांदी मन्दी। उड़द, सरसों, गुड़, अन्न तेज हों।

मई

१	रवि.	गुड़, खांड, तेज।
२	सोम.	चांदी तेज।
३	मं.	चांदी, गुड़, चना मन्दे।
४	बुध.	चांदी तेज।
५	बृह.	चांदी, सरसों में तेजीका काम मतकरो कुछ तेजीके बाद मंदी
६	शु.	मन्दी कारक।
७	शनि.	सरसों में मन्दी चले, चांदी मंदी अन्न में तेजी चले।
८	रवि.	अन्न, सरसों, चांदी, सोना, गुड़ तेज।
९	सोम.	घट-बढ़से रुख तेजीका ही रहे।
१०	मं	चांदी, गुड़, तेज। रात को सरसों तेज।
११	बुध.	रुई, चांदी सोना, अलसी, सरसों तेज।
१२	बृह.	सोना, चांदी, सरसों, तेज। होकर मन्दे, गुड़ मन्दा।

सारांश—इस मास प्रत्येक वस्तुमें मन्दीके झटकों के साथ अच्छी तेजी रहेगी।

ज्येष्ठ मास (मई)

ता.	वार	बाजार रुख
१३	शु.	घट-बढ़ से रुख तेजीका।
१४	शनि	अन्न, सरसों, गुड़ चांदी तेज।
१६	सोम.	चांदी, सोना, सरसों, गुड़ मंदे।
१७	मं.	चांदी मंदी।
१८	बुध शाम	अन्न, सरसों, चांदी, उड़द मंदे।
२०	शु.	मंदी कारक।
२१	शनि.	मंदी से तेज।
२३	सोम.	चांदी, गुड़ सरसों में तेजी।
२४	मं. रातको	चांदी मंदी होके तेज, सरसों, गुड़, अन्न, तेज।
२	बुध	चांदी, गुड़, सरसों घट-बढ़। होके तेज।

२६	बृह.	सरसों, मूंग, मसूर, चांदी, गुड़ सब में तेजी आवे।
२७	शु.	चांदी तेज।
२८	शनि.	अन्न, चांदी, तेज।
२६	रवि.	सरसों, चांदी, गुड़, अन्नतेज।
३०	सोम.	चांदी १।) मन्दी होके तेज।
३१	मं.	अन्न रुई, गुड़, मूङ्ग, मसूर तेज, चांदी तेज।

जून

१	बुध.	भाव तेज खुलकर मंदी आवे।
२	बृह.	आजकी मंदीमें चांदी खरीदो।
३	शु.	बाजार रुख देखो।
४	शनि	चांदी मंदी, सोनेमें घट-बढ़ या तेजी।
५	रवि.	रातको गुड़, अन्न, सरसों, तेज
६	सोम.	चांदी कुछ मन्दी।
७	मं.	घटबढ़ होके तेज।
१०	शु.	चांदी, अन्न तेज।

सारांश—चांदी में ता० १६ से २० मई तक रुख मन्दी का रह कर बाद में रुख तेजी का रहे, तथा सरसों में बदी १ से सुदी ७ तक विशेष घट बढ़ हो रुख तेजी का रहे। बादमें तेजी के साथ मन्दी आवे गुड़में इस मास विशेष घट बढ़ रहे, रुख तेजी का रहे।

आषाढ़ मास (जून)

ता०	वार	बाजार रुख
११	शनि.	चांदी, सरसों तेज।
१३	सोम	रातको गुड़ तेज।
१४	मं.	चांदी तेज।
१५	बुध	चांदी मन्दी।
१६	बृह.	चांदी मन्दी से तेज।
१७	शु.	चांदी, सरसों मन्दी।
१८	शनि.	सरसों, गुड़, चांदी तेजी से मंदी।
२३	बृ.	मन्दीकारक।
२५	शनि	सरसों, चांदी मंदी, गुड़ तेज
२८	मं.	चांदी तेज होके मन्दी।
२६	बुध.	चांदी तेज।

जुलाई

२	शनि.	चांदी तेज।
६	बुध.	सरसों, चांदी तेज।
७	बृह.	चांदी तेज।
६	शनि.	चांदी, गुड़, तेज।

सारांश—चांदी ता० १४ जून तक तेज रह कर बाद मंदी। ता० ३० जूनके लगभग तक मंदी रहकर बाद में फिर तेजी आ जावे। तथा सरसों ता० १४ जून तक तेज रह कर बाद में मन्दी रहे।

★ सुदृढ़ शरीर ★



मैंने प्रणाम किया। महात्माजीने भी मेरी प्रणाम मुद्राको देखा। उनका दक्षिण हस्त उठा और उसने आशीर्वादप्रदर्शिनी मुद्राका साथ दिया। मैं उस समय अपने आपको कृतकृत्य मान रहा था। हृदयसमुद्रमें आनन्दके हिलोर नाच रहे थे।

अभी २३ वर्ष पूर्वकी ही बात है। आश्विनका महीना, निखरा हुआ नील आकाश सन्तोंके हृदयकी उपमा धारण कर रहा था। मलिन वासनाओंकी स्पर्धा करने वाले काले घन अब ढूँढने पर भी अपना मुँह नहीं दिखा रहे थे। भगवान् विष्णुकी देह कान्तिने विशुद्ध आकाशको सारूप्य मुक्ति इन्हीं दिनों प्रदान की थी। कहीं कहीं विशुद्ध सात्विक वासनाओं के समान शुभ्रमेघ अब भी चमक जाते थे। दीर्घजीवी महर्षियोंकी दाढ़ीके समान श्वेत मेघ क्षितिजका आश्रय ढूँढ रहे थे। वायुने ग्रीष्मकी मित्रता सर्वथा छोड़ दी थी। शरत् का सौहार्द उसके हृदयको धीरे-धीरे अपने वशीभूत कर रहा था। जलाशय भक्तोंके हृदयके समान निर्मल हो रहे थे। सत्ययुगके आने पर कलियुग जहाँका तहाँ सूख जाता है। शरत्के आगमनसे कीचड़ भी वैसे ही सूख रहा था। काशके फूलोंके ध्वज शरत् साम्राज्य की सूचना देनेके लिए जहां तहाँ फहरा रहे थे। पर्वत प्रान्त वैसे ही रमणीय और फिर शरद् ऋतु के स्वागतोत्सवमें रमणीयताकी चहल-पहल क्या ही पूछनी। विन्ध्याचलकी फैली हुई छोटी-छोटी पहाड़ियाँ वर्षाका स्नान करनेके अनन्तर शरत्-सामग्रीसे अपना शृङ्गार कर रही थी। हार-शृङ्गार के फूल बहुत ही सुहावने लग रहे थे, उनकी मीठी-मीठी सुगन्ध चारों दिशाओंको सुगन्धित कर रही थी। नवरात्रिके दिन, जगदम्बाकी पूजाके लिए फूल बटोरने वाले भक्तगण विन्ध्यकी वनस्थलियोंमें प्रातःकाल हीसे पहुँच जाते थे। स्थान-स्थान पर कलकल-निनाद करते हुए निर्झर बह रहे थे। मैं भी विन्ध्य-वासिनी देवीके दर्शनके लिए गया था। वहाँ से अष्टभुजा भगवतीके दर्शन करके मोतिया तलाव देखनेके लिए चल पड़ा। थोड़ी ही दूर मार्गमें ही एक वृद्ध महात्मा दिगम्बर वेषमें खड़े दिखाई दिये। हाथमें एक पतली-सी लकड़ी थी, उस लकड़ीसे धीरे-धीरे एक वृक्षको वे ठोक रहे थे। वस्त्रोंका सौभाग्य इतना कहाँ कि महात्माका संग उन्हें प्राप्त हो। वे जहाँ खड़े थे वहीं पास ही दो पक्की कुटियाएँ बनीं थीं। लोहेके डण्डोंकी जालीवाले किवाड़ उनमें लगे थे। उनमेंसे एक कुटियामें भगवान् श्रीकृष्णकी एक छोटी मनोहर मूर्त्ति रहती थी। बहुतसे सूखे निर्माल्यके फूल वहीं कोठरीमें पड़े थे। बाहर ताला लगा था। दूसरी कोठरीमें एक लम्बी चौड़ी लकड़ी की चौकी, सम्भवतः उसपर महात्मा सोते हों, यही उनका संग्रह परिग्रह।

महात्माजी अच्छे सुदृढ़ स्थूलकाय थे। कौतुहल-वश मैंने उनसे पूछा—

"महाराज! आपका यह शरीर अब तक इतना सुदृढ़ कैसे रहा?"

उन्होंने कहा—

"फीकीर नाइ।" (चिन्ता नहीं)

मैं चुप हो हाथ जोड़ वहांसे आगे मोतिया तालाव की ओर चला गया।

× × × ×

कलकत्तेके प्रधान न्यायालयमें एक वैश्यने एक ब्राह्मण पर अभियोग लगाया—"ब्राह्मणने तीन सौ रुपये मेरेसे उधार लिए थे, अब तक वह दे नहीं रहा।"

अर्थी वैश्य और प्रत्यर्थी कृष्ण मन्दिरका पुजारी ब्राह्मण। ब्राह्मणका कहना था—"मैंने सब रुपये दे दिये हैं और सेठ ने अपनी बहीमें लिख भी रक्खा है।"

सेठका कहना था कि—"मैंने सब बहियाँ देखी हैं, इसके रुपये कहीं भी लिखे नहीं हैं।"

निर्णयका दिन निश्चित हुआ। ब्राह्मणको पूछा गया कि—"तुमने किसके समक्ष रुपये दिये? साक्षी का नाम लिखाओ।"

ब्राह्मणने कहा—"भगवान् श्रीकृष्णके समक्ष, उनका नाम लिखो।"

"अरे भगवान्‌की बात छोड़ो, मनुष्यकी बात कहो।" न्यायाधीशने कहा।

"आपको साक्षीसे ही तो काम है। भगवान् मेरी साक्षी अवश्य देंगे। आप उनका नाम लिखिये।" ब्राह्मणने कहा।

नाम लिखा गया, न्यायाधीश हँस दिये। निश्चित दिन पर अर्थी और प्रत्यर्थी न्यायालयमें उपस्थित हुए। न्यायालय दर्शकोंसे उस दिन खचाखच भरा था। साक्षीका नाम लेकर बुलाया गया। साक्षी आ गया। साक्षीने कहा—"अमुक संख्या वाली बही में अमुक पृष्ठ पर सेठजीने रुपये अङ्कित किये हैं।"

बही न्यायालयमें लाई गई। ब्राह्मणकी विजय हुई। न्यायाधीश चकित रह गया। मोहनकी मोहनी मायाका विलक्षण चमत्कार। न्यायालयके सभी लोग चित्रके समान वहींके वहीं स्थिर रहे। साक्षी अन्तर्हित हो गया। साक्षी बड़े ही दर्शनीय शरीरका था। सांवला रंग, ढीली खुली धोती, ऊपर मुण्डी छाट कुरता, शिर पर काले घुंघराले बाल, पैरोंमें कर्र-कर्र करते जूते। बहुत ढूँढा। साक्षी कहीं नहीं मिला।

विचार और आश्चर्यमें मग्न न्यायाधीश न्यायालयसे घर आया। और घरसे रातों-रात चुपकेसे विन्ध्याचल। ५४-५५ वर्षकी वय हो चुकी थी। मोहनकी मोहनी मायाने सांसारिक पदार्थोंसे मन हटा दिया। मोह टूट गया।

"ब्राह्मणकी साक्षी देने वाला श्यामसुन्दर नन्द-नन्दन कैसा मायावी है? उसकी योगमाया नन्दनन्दिनि विन्ध्याचल वासिनी मुझ पर अवश्य कृपा करेगी। श्यामसुन्दरके दर्शन वही करायेगी।"

इस निश्चयसे वह न्यायाधीश अष्टभुजाके पास वृक्षके तलमें रहने लगा। कभी किसीने कुछ खिला दिया तो खा लिया और नहीं तो कुछ नहीं। इधर उसकी पत्नी और पुत्रोंने बहुत ढूँढा। दिन पर दिन, मास पर मास और वर्ष पर वर्ष बीतते गये।

एक समय विन्ध्यवासिनीके दर्शनकी अभिलाषा से वे लोग विन्ध्याचल गये थे। विन्ध्यवासिनी के दर्शन करके अष्टभुजाके दर्शनको गये, वहां सुना कि—

"एक बंगाली अवधूत इधर एक वृक्षके नीचे कई वर्षोंसे रह रहे हैं। उनके दर्शनमात्रसे लोगों के मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं।"

ये लोग भी दर्शन करने गये। दर्शन करते ही अवाक् रह गये। पत्नी पुत्रोंने अवधूतको पहचान लिया। अन्तिम निर्णय की बात चीत हो गई। पुत्रों ने अवधूतकी सेवाके लिए अधिकोष (बैंक) में रुपये रख दिये। वहीं दो पक्की कुटियाएँ भी बन गईं। एकमें श्यामसुन्दर श्रीकृष्णकी मनोहरमूर्ति और दूसरेमें बंगाली अवधूत। अवधूतजी कृष्णकी कुटिया मेंसे कभी-कभी निर्माल्य निकाल कर फेंक देते हैं। निर्माल्यमें रुपये पैसे भी बहुत रहते हैं। यात्री दर्शन करके जालीमेंसे भगवानके चरणोंमें लक्ष्मी को समर्पण करते हैं और अवधूतजी अपने जैसा ही निरन्तर उन्हें असङ्ग रखनेके लिए लक्ष्मीको बाहर निर्माल्यके साथ कर देते हैं।

आत्मानन्द विभोर रहना ही उनका पूजा, पाठ, खाना, पीना, तपस्या आदि सब कुछ है। अब उस

विचार से सुन्दरदास जी आगे चल पड़े।

आगे जाकर देखा, एक धोबी कपड़े धो रहा है और अपने लड़के को गन्दी गाली दे रहा है सुन्दर दास जी धोबी के पास आकर कहने लगे, "भाई! तू तो पिता है यह पुत्र है। तू इसको भलाबुरा क्यों कह रहा है। राम २ जप।" यह कहने की देरी थी कि धोबी कुछ अकड़ कर बोलने लगा—"यह मुफ्त खोरी की बातें मैं सुनना नहीं चाहता। आपको खीर पूड़ियां मिल जाती हैं। मैं अपने बेटे को कुछ भी कहूं आपको किसने बुलाया है। आप मुफ्त के चौधरी बने हैं।" महात्मा जी हंस पड़े। वे प्रमभरी दृष्टि से धोबी के पैर की उंगली से मस्तक तक देखने लगे और चल पड़े। २०,२५ पग आगे गये होंगे कि धोबी कपड़े छोड़कर भागा। महात्मा जी के चरणों में गिरकर फूट २ कर रोने लगा कहने लगा "महाराज! मैं बड़ा पापी हूं जो आपको कठोर शब्द कहता हूं। अब आपके दर्शन से मैं पवित्र हो चुका हूं। न कपड़े धोने का खयाल है न किसी से कुछ कहने का ध्यान है। अब तो उमंग उठ रही है कि मैं प्रभुनाम स्मरण करूं और सन्तजन के चरणों में रहकर भक्तों की सेवा में निरन्तर काल व्यतीत करूं। महात्मा जी हँस २ कर उसे धीरज देने लगे। कि "ओ धोबी! तू गृहस्थी कुटुम्बी वाला है। तेरे आश्रयमें परिवार पड़ा है। अब तुम जावो, अपने बाल बच्चों का पालन करो। सत् कर्म करो यही मेरा उपदेश है; तुम इसे धारण करलो।" धोबी ने कहा "महाराज! मुझे तो मालूम था कि सब बच्चों का पालन करने वाला मैं हूं और मेरे ही आश्रय में ये बच्चे हुए हैं। परन्तु आपके दर्शनों से मेरा हृदय शुद्ध हो चुका है मुझे पूर्ण पता लग गया है कि सब जगत् का पालक परमात्मा है और उसका पूर्ण निवास सन्तों के हृदय में है। मुझे आप निराश न करें। मैं तो आपके चरणों में रहकर सत्संग करना चाहत हूं। इससे सभी सत्संगी और ग्रामवासी आश्चर्य में पड़गये।

उस ग्राम के नर नारी महात्मा सुन्दरदासजी से प्रार्थना करने लगे, "हे प्रभो एक रात्रि इस ग्राम को भी पवित्र करो।" उस ग्राम में कुछ ही हिन्दू रहते थे, विशेष रूप से मुसल्कान रहते थे। महात्माजी के एक रात्रि के सत्संग द्वारा क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी के हृदयों में भगवद्भावना जाग उठी। मैंने स्वयं उस ग्राम में जाकर देखा कि मुसलमान भी किसी जानवर को मारना पाप समझते थे। हिन्दू तो पहले से ही अहिंसक थे। अनपढ़ आदमी भी घर २ में हरिकीर्तन किया करते थे।

उसी ग्राम में एक ब्राह्मण थे। वृद्धावस्था में उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ था परन्तु वह शुद्ध बोल नहीं सकता था। साधारण हूं हां "कर दिया करता था। पण्डित जी को पता था कि बालक गूंगा है। एक दिन पण्डत जी विचार करने लगे कि महात्मा सुंदर दास जी बहुत पहुँचे हुए तपस्वी ब्रह्म निष्ठ हैं हमारे गांव के बड़े २ दुष्ट पुरुषों को भी साधु बना दिया है हिंसकोंको अहिंसक और कुसंगियोंको सुसंगी बन दिया है परन्तु क्या मेरे बालक को बोलने की शक्ति नहीं आयेगी यह विचार कर बालक को साथ ले, हाथ में एक डली गुड़ और नारयल ले साथ चाल पड़े। बालक छः वर्ष का था। पण्डित जी घर से १० बजे चले थे। सायं ५ बजे अलीबेग के गुरुद्वारे में पहुंचे तब ५ से ६ बजे रात तक हरिकीर्तन प्रारम्भ होता था। म० सुन्दरदासजी कीर्तन में मग्न थे। पण्डित जी को हाल में जाने का कोई रास्ता न था। क्योंकि संक्रान्ति के कारण दूर से सत्संगी आये हुए थे। गुरुद्वारा पूर्ण भरा हुआ था। पण्डित जी बाहर डयोढ़ी के पास तूत के वृक्ष के नीचे बैठ गये। वहीं से बालक को प्रणाम कराया। अपना मस्तक झुकाकर गुरुद्वारे को प्रणाम किया। इस प्रकार वे बैठे हुए थे। मधुर २ कीर्तनध्वनि पंडित जी के कान में पड़ी तो पण्डितजी भी ध्यान मग्न होगये। महात्मा जी के विषय में तो क्या कहें वे तो अन्तर्यामी थे।

महात्मा सुन्दरदास जी

[लेखक —विद्याधर विद्यालंकार, पो. सोलन]

(गतांक से आगे)

कुछ काल के बाद महात्मा जी ने इस प्रान्त में हरिकीर्त्तन, धर्म चार तथा विद्याप्रचार करना आरंभ किया। उन को सदा यह विचार रहता था की प्राणीमात्र की सेवा ही सच्ची ईश्वर की पूजा है। मैं भी कई बार उनके चरणों में रह कर देखा है कि बिल्ली कुत्ते से लेकर साधु महात्मा तक सभी को वे अपना स्वरूप समझकर सेवा किया करते थे।

एकदिन भक्तों के साथ महात्मा जी सैर को निकले। मैं भी साथ में था थोड़ी दूर जा पर एक कुत्ता स्वामी जी पर कूद पड़ा और उनके पैर को काटने लगा। जब काटकरभागा तब स्वामी जी भक्तों से कहने लगे—"भाई यह कुत्ता भूखा है उसे भोजन से तृप्त करो। भूखे ही दूसरे जीवों की हिंसा करना चाहते हैं।" उनकी आज्ञा पाकर कोईभक्तदौड़ करभंडार से पूरी हलुआ आदि सब सामानपत्ता भर कर लाया और उन कुत्ते को दिया। उसदिनसे उस कुत्ते कोजब उत्तम भोजन का रस लगा तो वह गुरुद्वारेके पास आकर भंडारेका जूठा भोजन खाने लगा। थोड़े दिन पीछे वह हिंसकवृत्ति त्यागबैठा। उन महात्मा जी पर तो उसके काटने का कोई प्रभाव ही नहीं हुआ था। एक दिन श्रीसुन्दरदास जी भ्रमण करने तथा हरिकीर्त्तन के प्रचारके लिये चलपड़े। भक्तलोगभी आगे जाकर उनके संग होते गये। लोगों ने देखा नहर के किनारे पर गन्ने के खेत लगे हुए हैं। खेत सब हरेभरे हो रहे हैं। किसी भक्त ने दो चार गन्ने तोड़ लिये और रास्तेमें चूसने शुरू किये। पीछे से वहीं खेत वाला आरहा था। उसने भी देख लिया। वह दौड़कर आया और उन मनुष्यों को पकड़ कर खूबमारने लगा। यह बात सुन्दरदास जी के कान में पहुंची तो वे मौके पर आये। तोडे हुए गन्नों को देखा और मारने वाले से कहने लगे, —"भाई तुमने बहुत अच्छा किया। बहुत परिश्रम करके तुमने इनको पैदा किया था। रखवाली करना तुम्हारा कर्त्तव्य है। मालिकसे बिना पूछे किसी की वस्तुको छेड़ना अनुचित है। गल्ती की सजा खूब भोगी। अब तुम मुझे यह बतलाओ कि तुम्हें क्रोध क्यों आया?" वह बोला, "महाराज मैं बहुत परिश्रम से इसकी रक्षा करता हूं। यही एक खेत मेरे परिवार काआश्रय है। यदि इसी तरह लोग खाते जांये तो मेरे परिवारका निर्वाह कैसे होगा। अधिक पैसे वाला तो धर्म कर सकता है मेरा तो अपना निर्वाह हीनहीं होता है। यह सुन कर महात्माजीने उसके खेत की चारोंओरकी पांच पांच बीघे भूमि खरीद कर उसके नाम करादी और कहा, "अब तो तेरे को पूरा हो जायेगा।" किसान खुश हुआ और सदा के लिये महात्मा जी का पूरा भक्त हो गया। छः महीनेके बाद उसकी बुद्धि इतनी पवित्र होगयी कि बालबच्चे त्याग कर वह अपने गुरु श्रीसुन्दरदास जी के पास ही रहनेलगा। सच कहा है कि सन्तों के गुण ही विचित्र हैं। राजा दण्डदेकर भी दुष्टों की दुष्टता दूरनहींकर सकता पर साधुपुरुष सरलता के मार्गसे ही उसकी दुष्टता सदा के लिये दूर कर सदा के लिये साधुवना डालते हैं। तुलसीदास की रामायाण में लिखा है कि पार्वती जी शिव से कहने लगीं," सन्तों का महत्व क्यों है। सन्तों की कीर्ति को शास्त्र क्यों पुकारते हैं। इसका महत्व मैं जानना चाहती हूँ।" शिव जी ने कहा, "उपासना की यही बड़ाई। मन्द करत जो करत भलाई।" इसी

तथा अनिच्छा प्रकट करने पर भी ऐश्वर्य मदोन्मत्त राजाने उसे बलात् ले जानेके लिये भृत्योंको आज्ञा दी और वे रोती हुई न जाना चाहती हुई गाय ो बछड़े सहित ले गये। उस समय वासुदेवांश श्रीपरशु ामजी आश्रम पर उपस्थित नहीं थे। पश्चात् उन्हें जब यह पता चला कि हमारे पिताजीकी इच्छा के बिना बलात्कारसे हविर्धानी (गाय) लेगये हैं। तब उनकी क्षमा क्रोधमें बदल गई। एक सच्चे ब्राह्मण का अपमान असह्य हो उठा। तदन्य तेजोऽभिभवाद्धमन्ति" क्रोधाग्नि प्रचण्ड हो उठी। कुल्हाड़ा सँभाला और माहिष्मतीमें जाकर अलातचक्र की भांति घूमते हुए कुठारसे क्षणभरमें ही १७ अक्षोहिणी सेनाको मार, महा पराक्रमी सहस्र भुजाधारी अर्जुन को भी बात ही बातमें मारकर सवत्सा गाय वहां से ले अपने पिताजी को अर्पण की। इस प्रकार धर्म में बाधा करने वाले निरंकुशको दण्ड दिया। इसके कुछ समय पश्चात् बहुत से क्षत्रियोंकी सहायतासे अर्जुन के पुत्र एक क्षमाशील शत्रु पर भी कृपा करने वाले स्वधर्म निष्ठ तपःपरायण यज्ञशालाके हवनकुण्डमें संलग्न सच्चे ब्राह्मण श्रीजमदग्निजीको परशुरामजी की अनुपस्थिति में रेणुकाके बार-बार समझाने पर भी उस सच्चे ब्राह्मण का सर काट कर ले गये। अब यह दूसरा अपराध परशुराम जी से सहा न था। इसमें बहुत दुष्ट क्षत्रियोंका षड्यन्त्र था, इसलिये पृथ्वी भरके दुष्ट क्षत्रियों को २१ बार नाश की प्रतिज्ञा की और उनके रक्त से कई कुण्ड भर दिये। पृथ्वीका भार हलका हुआ। कुछ इने गिने सच्चे क्षत्रिय ही बच रहे।

श्रीपरशुरामजीके इस चरित्रसे हमें कई शिक्षाएँ मिलती हैं (१) धर्मनाशकको मारना पाप नहीं (२) उसके सहायकोंको भी धर्मरक्षाके लिए मारकर मर्यादा अक्षुण्ण रखना धर्म है (३) समयानुसार क्षमाको त्याग, क्रोध करना भी धर्म है। (४) धर्म पर होते हुए थोड़े भी आघातको मत सहन करो। (५) पिताकी आज्ञा पालन न करना। (६) धर्मरक्षाके लिए हिंसा भी अहिंसा है, इत्यादि अनेक शिक्षाएँ मिलती हैं। इन भावोंको सदाके लिए हृदयमें बनाए रखनेके लिए पूर्वजोंने ये त्यौहार पर्व निश्चित किए हैं, जिससे हम अपने कर्तव्योंको न भूलें श्री भगवान् परशुराम की जयन्तीका पवित्र दिवस वैशाख शुक्ल द्वितीयाको है। इसमें हमें उनका ध्यान पूजा आदि करनी चाहिए और उनसे यह आशीर्वाद प्राप्त करनेके लिए यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभो! आप हमें धर्म रक्षाकी भावना दें, हममें उसके लिए वह बल तेज यश, वीर्य प्राप्त हो जिससे हम धर्म ध्वंसकोंका नाश कर सकें। अपने जीवन जाति तथा देशको सच्चा धर्म-प्रेमी वा सेवक बना सकें।

श्री परशुरामजी चिरञ्जीवियोंमें एक हैं। यों तो सब महापुरुष अपने अपरिच्छिन्नरूपसे सदा हमारे साथ हैं, पर हमारे चरित्रनायक तो उसी रूपमें अभी तक संसार में विद्यमान हैं। हमारे सद्ग्रन्थ यह हमें बता रहे हैं। श्रीमद्भागवत (स्कंध ८ अध्याय १६ श्लोक २५।२६) में लिखा है—

जामदग्न्योऽपि भगवान् रामः कमललोचनः।
आगामिन्यन्तरे राजन् वर्तयिष्य तिवैबृनृत्
आस्तेऽद्यपिमहेन्द्राद्रौ न्यस्तदण्डःप्रशान्तधीः
उपगीयमानरितः सिद्ध गन्धर्व चारणैः

अर्थात् जमदग्निके पुत्र कमललोचन भगवान् राम दूसरे आने वाले मन्वन्तरमें पुनः प्रकट होकर धर्मका प्रचार करेंगे। वे आज तक भी महेन्द्राचल पर मनोवाक् कायका दमन करते हुए प्रशान्तचित्त हो तपस्या कर रहे हैं। सिद्ध चारण गन्धर्व आदि देव जातिएं जिनके पवित्र चरित्रका अनुदिन गान करती रहती हैं। उन चिरञ्जीवी धर्म प्राण ब्राह्मणकुलावतंस भगवान् के अंशावतार श्री परशुरामजी की जय हो।

सह्य नहीं है, इसीलिये धर्म रूप वा धर्मप्रिय परमात्माने इस समग्र संसारको मर्यादामें तथा स्व स्वरूपमें बनाए रखनेके लिये धर्म प्रधान दो मुख्य वर्ण ब्राह्मण और क्षत्रिय उत्पन्न किये। ब्राह्मण उसका हृदय, क्षत्रिय अङ्ग माने गये हैं। संसारमें धर्म बनाए रखना इन दोनों का कर्त्तव्य है, इन दोनोंकी पारस्परिक रक्षा से ही सदसदात्मक विश्व की रक्षा है। भगवान् की पालनात्मिका शक्ति दोनों में निवास करती है। तपोविद्यायोगयुक्त अलम्पट ब्राह्मण स्वयं धर्मनिष्ठ होकर धर्मके मर्मको विधानके रूपमें बताते हैं। उनके बताए मार्ग पर चलकर सूर्यकी भांति सबको प्रकाश मार्गमें ले जाकर दस्युओं से वर्णाश्रम निबन्धन भगवद्रचित मर्यादाओंको सुरक्षित रखना क्षत्रियों का कर्त्तव्य रहा है। क्षात्र शक्ति के सो जाने पर लोलुप निरङ्कुश पुरुषोंके कारण अधर्म बढ़ जाता और संसार दस्युओंसे ग्रस्त होकर सदाके लिये नष्ट हो जाता है। ऐसा अकाट्य सिद्धान्त है।

जब क्षत्रिय जाति मदोन्मत्त हो ब्राह्मण प्रदर्शित मार्गको तो क्या तपोविद्या क्षमा सम्पन्न पवित्र शुद्ध अक्रोधन ब्राह्मणोंको भी कुचलने पर उतारू हो जाती है उस समय धर्मको अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिये भगवान्की शक्ति ब्राह्मणोंमें महातेजस्वी और भयानक कोपन रूपको धारण करके निर्मर्याद क्षत्रियोंका अन्त करनेके लिये उत्पन्न हो पड़ती है। ठीक इसी सिद्धान्त पर भगवान् श्री परशुराम जी का अवतार हुआ था।

दुष्ट क्षत्रियकुलान्तक श्रीपरशुरामजी ब्राह्मण-कुल कमल-दिवाकर श्रीभृगुजीके वंशमें श्रीभगवान् विष्णु के अंशसे आविर्भूत हुए। तद्यथा—श्रीमद्भागवत ६।१४।१४—

यमाहुर्वासुदेवांशं हैहयानाँ कुलान्तकम्।
त्रिःसप्तकृत्वो य इमां चक्रे निःक्षत्रियां महीम्॥

भगवान् अवतार ले पालनात्मिका क्षत्रिय शक्ति को ठीक रखनेके लिये दुष्ट दुराचारी पृथ्वीभाररूप रजस्तमसावृत सत्त्वगुण रहित ब्रह्मद्विट् क्षत्रियोंका ही नाश किया था, न कि क्षत्रियमात्रका। अतः श्रीमद्भागवत के अग्रिम श्लोकमें (६।१४।१५ में) यह बात पूर्णरूपेण व्यक्त हो जाती है। तद्यथा—

दुष्टं क्षत्रं भुवोभारमब्रह्मण्यमनीनशत्।
रजस्तमोवृतमहन् फल्गुन्यपि कृतेऽहसि॥

भगवान् श्रीपरशुरामजीकी जीवनीसे हमें क्या-क्या शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं, इसलिये "मम त्वेतां वाणीं गुण कथन पुण्येन महता, पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता" इस न्यायसे वाणी तथा श्रवणेन्द्रिय पवित्र करने के लिये उनके दिङ्मात्र चरित्र लिखकर अपने लेखको समाप्त करूंगा।

त्रेतायुगकी बात है—कृतवीर्यके पुत्र हैहयवंशका अधिपति वीरवर अर्जुन श्रीदत्तात्रेयजीकी सेवाके फलस्वरूप सहस्र भुजाओं तथा शत्रुओंमें अपनी दुर्धर्षताको प्राप्त कर अपने अव्याहत तेज, इन्द्रियपाटव, वीर्य, यश, बल आदिसे अप्रतिद्वन्द्वी हो गया। उसकी गति वायुकी भांति चराचर जगतमें अव्याहत हो गई थी। जिसकी शक्तिका परिचय आप इसीसे प्राप्त कर सकते हैं कि उसने रावण जैसे परम पराक्रमीको भी खेल ही में बांधकर माहिष्मतीमें कुछ समय तक घर का खिलौना बना रखा था और फिर दया से उसे मुक्त कर दिया। वह मदोत्कट स्त्रीरत्नोंसे लिपटा हुआ वन विहार जलक्रीडा आदिमें समय यापन करता हुआ निरङ्कुश-सा हो गया था। उस निर्मर्यादके लिये अब कोई पूज्य, धर्म आदिका विचार न रहा था। एक दिन मृगया करते हुए वह श्रीजमदग्निजीके आश्रम पर पहुँचा। धर्मशील सच्चे ब्राह्मण जमदग्निने उसे अतिथि सत्कार के लिये निमंत्रित किया, उत्सुकतासे उसने भी आतिथ्य स्वीकार किया। आतिथ्यमें राजप्रसादमें भी अनास्वादित अलौकिक भक्ष्य भोज्य पेय लेह्य चोष्य आदि पदार्थों को खाकर चकित हो उठा। पूछने पर कामधेनु गाय के महत्त्व को जान उसके लेनेमें साभिलाष हो उठा। ऋषि के यज्ञका एकमात्र साधन उस गायको उनके प्रतिरोध

भगवान् श्रीपरशुरामकी जयन्ती

[लेखकः—श्री पं० शिवदत्तजी शास्त्री ज्योतिषी]

[इस वर्ष वैशाख शु० २ शनिवारको भगवान् श्रीपरशुरामजीका जन्मदिन आ रहा है। भगवान् ने श्रीपरशुराम अवतार धारणकर अधार्मिकोंको दण्ड देकर न्याय और धर्मकी स्थापना की थी। उनके समय से कई सौ वर्ष पहले से जो राष्ट्र के संरक्षक धर्मके व्यवस्थापक होनेका दम्भ भरते थे और लोकरक्षणके स्थानमें लोक पीड़न ही जिनका स्वभाव सा बन गया था। क्षत्रिय होकर भी जो शूद्रोंके कर्म करने लग पड़े थे, दानके स्थानमें जो अपहार परायण होगये थे—उनको एक नहीं, दो नहीं, इक्कीस बार दंड देकर पृथ्वीका बोझ हटाते हुए प्रत्येक व्यक्तिको सुख स्वातन्त्र्य शान्ति प्रदानकी थी। वर्तमान समय भी बड़ा कठिन बीत रहा है, यदि भगवान् श्रीपरशुरामके आदर्शको सामने रखकर लोग अपने २ वर्णाश्रमधर्मानुसार चलेंगे तो कोई भय करनेका कारण नहीं कि इस भारत राष्ट्रको अभारतीय अनार्य दुष्ट दृष्टिसे देख सकें। लोगोंको चाहिए कि इस दिन भगवान् श्रीपरशुरामके कार्यों से सर्वसाधारण जनताको कथा, व्याख्यान आदि से परिचित कराएँ। उनकी मूर्तिका अथवा तैलचित्रादिका उचित उचित स्थानों पर स्थापन करें। ब्राह्मणभोजन और उनके स्तोत्रका पाठ भी अत्यावश्यक है। उनके स्तोत्रका पाठ उनका आदर्श—धर्मकी स्थापना, पितृभक्ति, भ्रातृप्रेम, आततायियोंको दण्ड देना, पूर्ण त्यागमय सांसारिक पदार्थों से विरक्त रहते हुए पूर्ण तपोबल प्राप्त करना, नाना विद्याओं से सम्पन्न होना आदि—कार्य रूपमें परिणत करने की स्फूर्ति उत्पन्न करता है। सचित्र श्री परशुराम स्तोत्र (राष्ट्रभाषानुवाद सहित) मार्ग व्यय के लिए –) एकआनेका टिकट श्री स्वाध्याय सदन सोलन (शिमला) के पते पर भेजकर प्राप्त किया जा सकता है। —सम्पादक]



आर्य लोग अनादिकालसे चले आ रहे हैं, इन पर तथा इनकी संस्कृति पर बड़े बड़े आक्रमण तथा अत्याचारियोंके अत्याचार हुए, पर यह आर्य जाति आज तक भी अपनी संस्कृतिको लिये हुए निरन्तर बहुकालसे चली आ रही है और रहेगी। इसकी स्थिरताका एकमात्र कारण शास्त्रों पर विश्वास तथा पूर्वजोंके जीवन चरित्रों को प्रतिवर्ष उन उन दिनोंमें पर्वोंके रूपमें मनाना ही है। यह बात तथ्य ही है कि भावनाके नैरन्तर्यसे मनुष्योंमें तथा जातिमें उन महा व्यक्तियोंके ओजस्वी कर्त्तव्य उल्लसित होकर तदाकारताको धारण करते हुए मनुष्यमें अलौकिक शक्तिका सञ्चार तथा प्राचीन अवतारों, महर्षियों, महापुरुषोंके पवित्र विचित्र चरित्रों को प्रतिफलित कर देते हैं। जिससे जातिएँ पूर्व युगोंकी बातों को भी अपने सामने होती हुई सी देखकर आवेशमें आ अपने धैर्य के लिये, देश जातिकी आनके लिये मर मिटती हैं। भारत निवासियों का—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत !
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम् ॥

इस गीताके वचन पर दृढ़ विश्वास रहा है। भगवान् समय समय पर प्रति युगमें ऐसा करते चले आये हैं। इसी नियमानुसार भगवान्के अंशावतार श्रीपरशुराम जी पवित्र भृगुकुलमें प्रकट हुए। उनको धर्म हानि

आज भी मुट्ठी भर मिल सकती है, जिन्होंने भारतीय वीरांगनाओं की ऐतिहासिक परम्पराको अक्षुण्ण रखनेमें योग दिया है और जिन पर भारतको आज भी गर्व है। परन्तु आज अधिकांश ऐसी ही हैं जो बड़ी तत्परतासे एड़ीसे चोटी तक अपनेको सजानेके लिए नित्य नए अविष्कारों की खोजमें हैं। एक ओर वे संयम और पौष्टिक खाद्योंके अभावमें अपने सहज सौन्दर्यको खोती जा रही हैं, तो दूसरी ओर कृत्रिम साधनों द्वारा उसकी रक्षाका विफल प्रयास करनेमें व्यस्त हैं।

पढ़ी लिखी ही नहीं गाँवोंकी अपढ़ गँवार नारियाँ भी अपनी उपहारकी वस्तुओंमें नेलपालिस, महावर, लिपस्टिक पाउडर और स्नो ढूंढ़ने लगी हैं और खोजने लगी हैं कमर के नीचे तक लटकने वाला लटकन, पारदर्शी जार्जेटकी साड़ी और सुगन्धित इत्र फुलेल। प्रसन्नताकी बात है कि अलंकारोंका भूत पढ़ी लिखी स्त्रियोंसे उतरने लगा है, परन्तु अपढ़ गँवार स्त्रियोंको तो उसने इतना प्रभावित कर लिया है कि वे सोने, चांदी के अभावमें पीतल, लोहा और मिट्टी तकके अलंकारोंसे अपनेको अलंकृत देखना चाहती हैं। मेला ठेला और विवाहादि सामाजिक उत्सवोंके अवसरों पर तो कुछ पूंछिए मत, उनकी इस गुप्त अभिलाषाका नग्न नृत्य देखते ही बनता है। ऐसी घड़ियोंमें यदि उनके पास दुर्दैवसे आभूषण न हुए तो वे मचल उठती हैं अपनी दीनता पर और कोष डालती हैं अपने पतिदेवकी कमाईको। फिर भी चूकती नहीं, पास पड़ोससे ही सही, माँगकर आभूषणोंको लाने और उनसे नख सिख सज-धज कर अपना सखी सहेलियोंके बीच अलंकार प्रदर्शनके इस होड़में आगे रहनेसे। ऐसे अवसरों पर लूटपाट और चोरी डाकेकी अवाञ्छित घटनाएँ आए दिन घटती ही रहती हैं, फिर भी कोई विशेष प्रतिक्रिया नहीं दीखती।

प्राचीन पौराणिककालमें जितना स्त्रीके बाह्यालंकारों पर ध्यान रखा जाता था, उतना ही उसके आंतरिक अलंकारों पर भी। क्योंकि वस्तुतः बाहर और भीतर दोनों ओरसे सुन्दर वस्तु ही सुन्दर हो सकती है। नहीं तो वह मिट्टी या प्रस्तरकी सुन्दर जड़ मूर्ति अथवा खेतके धोखेकी भांति कोरा धोखा ही है। पद्मपुराणमें स्त्रियोंके बारह आभूषण बतलाए गए हैं। जिनमें सर्वप्रथम रूप और शीलको स्थान दिया गया है। फिर क्रमशः सत्य, सदाचरण, पुण्यकर्म, मधुर भाषण, बाहर भीतर की शुद्धि, पतिमें श्रद्धा, गुरुजनों की सेवा, सहनशीलता, रति और पातिव्रत्यका नाम लिया गया है। अस्तु ही बाह्यालंकारोंके अतिरिक्त इन बारह अलङ्कारों से अलंकृत नारी ही साक्षात देवी हो सकती है।

दूसरा उदाहरण हमको मिलेगा—महाभारत काल में द्रौपदीका। अपने पतियों द्वारा जुवेमें हारी गयी द्रौपदी नीच दुःशासन द्वारा भरी सभामें नंगी की जा रही है; परन्तु वह अपनी लाज भी बचानेमें असमर्थ है। इस प्रकार शक्तिकी प्रतीक नारीने अपना स्वरूप रामायणकाल या उसके पूर्व ही खो दिया था। अब वह आजकी अबलाका प्रतिनिधित्व करने लगी थी और बनने लगी थी सर्वदा के लिए पुरुषमुखापेक्षी दासी। इसीलिए धीरे धीरे वह पर्दे की वस्तु बन गई और पर्दा उनका एक मात्र ढाल बन गया और कुछ दिनोंमें यह पर्दा ही नारीकी पवित्रताकी कसौटी बन गया। फिर तो जो इस कसौटी पर खरा उतरा, आदर का पात्र बना और जो कच्चा, वह हेय तथा घृणास्पद। बस, यहीं से उस के क्रमिक ह्रासोन्मुख इतिहास का प्रथम पृष्ठ प्रारम्भ हुआ।

स्त्रियों में वस्त्रालंकारों से सजधज कर अपने को आकर्षक बनानेका यह रोग बहुत पुराना है, अभिनव नहीं। सुन्दरता और उसकी रक्षा कोई बुरी बात नहीं है और न ऐसा करना कभी अपराध ही रहा है। परन्तु जब साधन ही साध्य बन जाता है तो

(शेष पृष्ठ ५० पर)

अलंकारोंसे अलंकृत दुर्गा देवताओंके मनोरञ्जनकी केवल गुड़िया ही नहीं थी। वह आत्मरक्षा करना तो जानती ही थी, अपने पोषक देवताओंका असुरोंसे त्राण करना भी जानती थी और जानती थी "गर्ज गर्ज क्षणं मूढ़! मधु यावत्पिबाम्यहम्" अर्थात् अरे मूर्ख! तभी तक तू गरज ले, जब तक मैं मधुपान नहीं कर लेती हूँ" इन शब्दोंमें शत्रुको रण क्षेत्रमें ललकारना भी।

अपनी ओर बुरी भावनासे आँख उठाने वाले शुम्भके दूतके प्रति कैसा निर्भीक है उसका उत्तर—

यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥

"अर्थात् इस संसार में वही मेरा भर्त्ता हो, जो मुझे संग्राम में जीत ले, मेरा दर्प नष्ट कर दे, और मेरे समान बल रखता हो।" क्या एक गुण्डे मनचले शुम्भके प्रति दुर्गाकी यह ललकार आज हमारी बहू बेटियोंको अपनी ओर राहे चलते आँख उठाने वाले गुण्डों के प्रति ललकार की चुनौती नहीं देतीं? नहीं देती, इसलिए कि हमने अपनी स्त्रियोंको आज केवल वस्त्र भूषणोंसे सजाकर सुन्दर एवं आकर्षक बनाना तो याद रक्खा है, परन्तु भुला दिया है देवताओं की भांति उसे अलंकारोंके साथ ही विविध शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित कर आत्मरक्षाके योग्य बनाना! नहीं तो रंग बिरंगे वस्त्राभूषणोंसे परिवेष्टित फूलों पर फुदकने वाली ये सुकुमार तितलियां न होतीं, न अबला होतीं; होतीं शक्तिका अवतार दुर्गा और वह दुर्गा, जो रणभूमिमें शत्रुको ललकार सकती थी और गुण्डोंको उनकी गुण्डईका अच्छा पाठ पढ़ा सकती थी।

यदि हम कहें कि हमने अपनी यह मूल परम्परा आज सौ दोसौ वर्षोंसे ही नहीं, सहस्रों वर्ष पूर्व से भुला दी है तो कोई अत्युक्ति न होगी। आपको याद होगी, आजसे सहस्रों वर्ष पूर्वकी भगवती सीता! सीता एक राजकुमारी ही नहीं, एक चक्रवर्ती राजाकी रानी भी थीं। अतः कहना न होगा कि वह विलासिता एवं शृंगारों में ही पली, सयानी हुई और हुईं रानी। यही कारण था कि जब रावणने सीताका अपहरण किया तो उसकी गुण्डई पर उनका एक भी वश न चला। वश चला केवल आजकी अबला नारीकी भांति नेत्रोंसे पावसकी झड़ी लगाने पर और वस्त्राभूषणोंको शरीर से उतार फेंकने पर।

अवश्य ही सीता को उस दिन अमर्ष हुआ होगा अपनी सुकुमारता पर और शरीरके भारभूत अलंकारों पर। परन्तु वह सीता "कुसुमादपि सुकुमारम्" फूल से भी अधिक सुकुमार न होती तो और क्या होती; जिसे लाड़ प्यार वश सास कभी दिये की बाती तक उकसानेको नहीं कहती थी। और जो कोमल पलंग तथा हिंडोरेसे कठोर अवनि पर अपना पैर भी रखनेमें झिझकती थी।

इसीलिए महाकवि कालिदासको वस्त्राभूषणों के अभावमें भी वनदेवी शकुन्तलाके प्राकृतिक सौन्दर्य ने ही मुखर बना दिया था -

"इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनाऽपि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥

अर्थात् वल्कलवसन (पेड़ों की खाल) में भी लिपटी शकुन्तला अत्यधिक सुन्दर जान पड़ती है क्योंकि स्वभावसे ही सुन्दर व्यक्तियोंके लिए कोई भी वस्तु अलंकारका काम कर सकती है। परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि शकुन्तला शृंगार करना जानती ही न थी, जानती थी। उसका भी यों तो हृदय नारी-हृदय था, फिर उस पर विजय कैसे प्राप्त कर सकती थी। वह भी वन्यतरुके रससे पाँवों में महावर लगाती, फूलोंके स्तवकसे केशपाश सजाती, गलेमें हार डालती और कोमल किसलयोंसे परिधान तथा आभूषणोंका काम लेती थी।

अपवादका स्थान सर्वदा सुरक्षित रहा है। अतः मध्यकालमें दस पांच अपवाद वीरांगनाएं थीं और

नारी और उसकी अलंकारप्रियता

[लेखक :—श्री पं० रामबहादुरजी त्रिपाठी शास्त्री साहित्याचार्य]



कहा नहीं जा सकता मनुष्यमें अपनेको आकर्षक एवं सुन्दर बनानेकी अभिरुचि कब उत्पन्न हुई ? सम्भव है यह उसकी नैसर्गिक इच्छा हो। सृष्टिकी प्रारम्भिक अवस्थामें भले ही साधनोंके अभावमें उसकी यह साध मनकी मनमें ही रह गयी हो। परन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि ज्यों-ज्यों बौद्धिक विकासके साथ उसमें ललित-कला निर्माण की रुचि उत्पन्न हुई होगी, इस ओर उसने अधिक मनोयोग दिया होगा।

सदासे ही पुरुषका अलंकार उसमें जीवन संघर्षके लिए अदम्य पौरुष, सुगठित शरीर, सरल वेष भूषा तथा नैतिक बल रहा है और आज भी समझा जाना चाहिए। परन्तु, आज वह अपनेको आकर्षक एवं सुन्दर बनानेमें इतना व्यस्त है कि उसे अपने प्राणभूत उक्त अलंकारोंकी कोई चिन्ता ही नहीं है। उसने अब अपने मनमाने साधन ढूंढ निकाले हैं, जो निश्चय ही हमारी सहस्रों वर्षोंकी पराधीनताकी देन है। तत्कालीन सहस्रोंवर्ष पूर्वका कोई स्वतन्त्र भारतीय व्यक्ति यदि आज बीचकी दीर्घकालीन परतन्त्रतामें पले हुए किसी व्यक्तिको देखें तो शिरके सुन्दर कटे बालोंमें आड़ी तिरछी माँगों को, श्मश्रुहीन स्निग्ध मुखमण्डल, सुकुमार शिथिल शरीर एवं ढीली धोती को, तो निश्चय ही उसे पहचाननेमें कुछ समय की अपेक्षा होगी।

और नारीकी तो कोई बात ही न पूछिये। वह तो शृङ्गारोंमें ही उत्पन्न हुई, पली, पोसी और सम्भव है उसीमें विलीन भी हो जाना चाहती है। प्रारम्भिक इतिहास उसका जितना ही उज्ज्वल है, वर्तमान तथा भविष्य उतना ही ह्रासोन्मुख। नारीकी अधिष्ठात्री देवी दुर्गा, जिसको दुर्गासप्तशती में "या देवी सर्व भूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता" और "विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः, स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु" कह कर नमस्कार किया गया है, वह भी अपना एक मनोरंजक इतिहास रखती है।

आततायियों एवं असुरोंसे धराको मुक्त करने के लिए जब आदि शक्ति दुर्गा प्रादुर्भूत होती है तो उसके सुन्दर शरीरको और भी अधिक आकर्षक एवं सुन्दर बनानेके लिए सभी देवताओंने एकसे एक दिव्य अलंकार प्रस्तुत किये हैं। परन्तु इन बाह्य

जंगल में वे और पुजारी ब्राह्मणकी साक्षी देनेवाले नन्दनन्दन श्यामसुन्दर दोनों घुलमिलकर रहते हैं। ग्वाले उनसे बहुत सन्तुष्ट हैं। कृष्णमूर्तिका निर्माल्य रुपया पैसा उन ग्वालोंकी ही सम्पत्ति बन गया है। रात्रिको वहाँ नित्य ही सिंह, व्याघ्र, चित्रक, भेड़िये, सूअर आदि वन्य हिंस्र पशु उनसे मिलनेके लिए आते हैं और कभी कभी दिनमें भी। अवधूत सर्वात्मभावमें स्थिर हैं। वहां के ग्वाले उन्हें दूध भी पिला देते हैं। कभी पी लेते हैं कभी नहीं। ग्वालोंका कहना था कि महात्माका यह शरीर १०० वर्ष का हो चुका है। जो भी हो, मुझे तो उनका वह आशीर्वाद मुद्रा वाला हाथ और शरीर की सुदृढ़ताके प्रश्नका उत्तर--

"फीकीय नाईं" (चिन्ता नहीं) अब तक अपनी ओर आकर्षित करता रहता है।

—अ० वा० आचार्य।

बैठे २ उनको मालूम हो गया कि पण्डितजी बालक को लेकर क्यों आये हैं। हरिकीर्तनमें सब मण्डली मग्न थी। महात्मा जी चटाकसे उठे। जाकर उस बालकको पकड़ लिया दोनों भुजाओंसे उठाकर गोदीमें लेते हुए सत्संग भवनमें पहुंचे। कहना क्या कि ऐसे पवित्र महात्माका हस्त जब बालकके हृदय पर लगा, एक दिव्य मूर्ति बनकर वह बैठ गया। इतने में पण्डितजीके नेत्र खुले। देखा तो बच्चा गुम है, कहाँ गया, किधर गया, इस तरह तड़पते हुए तलाश करने लगे। किसीने कहा कि महात्मा जी बालक को उठाकर ले गये हैं। सब सभासद् इस लीलाको आश्चर्यान्वित हो देखते रहे थे। महात्माजी ने एक नारियलका टुकड़ा उस बालकके मुंहमें दिया, कहनेलगे "बोलो, श्रीराम कृष्ण हरे मुरारे। हे नाथ नारायण वासुदेव"। इसी प्रकार तीन बार बोले तो बालक भी बोल पड़ा। बड़े मन्द-मन्द हँसते हुए वह बालक नृत्य करने लगा और उसी श्रीराम कृष्ण मंत्र को उच्चारण करने लगा। सत्संगियोंने देखकर बड़ा ही आश्चर्य किया। कोई महात्माजीकी कीर्ति गाने लगे, कोई भगवान्को धन्य २ कहने लगे। कीर्तन समाप्त हुआ तो उस बालकके हाथसे सभी संगतको प्रसाद दिलवाया। बालक शुद्ध पवित्र वाणी बोलने लगा। वहीं रह गया और कुछ विद्याभ्यास भी किया। दो साल बाद उसने घरमें आना जाना भी बंद कर दिया। उसके पिता माता भी सत्संगमें रहा करते थे, जब १३ वां वर्ष लगा तो उस बालकने महात्मा सुन्दरदासजीसे दीक्षा लेली। दीक्षा ले कुछ काल तक वहां रहा फिर वह भ्रमणार्थ काश्मीर प्रदेश में चल पड़ा। उनका नाम ही आजकल कृष्ण दास है वे बड़े विरक्त साधु हैं। वे बड़े विचारपूर्वक विचरते हैं। मेरे साथ (स्वामी रामानन्दजीके साथ) भी जिला रियासी के "कटरा" स्थान में जहां स्वामी सियाराम जी की गुफा है, वहां रहनेका अवसर मिला है। गुरु की आज्ञा से वे एकांतमें विचरते रहते हैं। ऐसी अद्भुत लीला मैंने महात्मा सुंदरदासजी की देखी है।

एक बार कार्तिक मास की दीपमालाकी समाप्तिके दूसरे दिन पुंछके इलाकेमें सुंदरदासजी हरि भक्तिके प्रचारार्थ चल पड़े। मार्गमें बहुतसे गांवोंमें जहां रात्रि हो जाती वहीं रहते थे। लोग भीउनके स्वागतार्थ दूर-दूर से आया करते थे। जहां जहां रहते थे वहां रात्रि भर गुरुग्रंथ साहबका अखण्ड पाठ और हरिकीर्तनकी चर्चासे सारे गाँव गूंज उठते थे। इनके हृदयमें जाति-पांतिका विचार तो रहा ही न था, कोईभी उनकी संगतमें आये उसे बराबरकी जगह दिया करते थे। उनका यह उपदेश था कि सत्संगमें ऊँचनीच का विचार नहीं करना चाहिये। यह ईश्वरका दर्बार है। जहां-जहां वे जाया करते थे प्रत्येक प्रकारके स्त्री पुरुष उनसे मिलने आया करते थे और दर्शन करके बड़े कृतार्थ होते थे। जिस जिस भावना से जो कोई आता था उसी उसी भावनाके अनुसार उसे फल मिल जाता था। उनकी महिमा इतनी ऊँची बढ़ने लगी कि बहुतसे रोगी उनके दर्शनों से रोगोंकी निवृत्ति कर लेते थे। कहीं-कहीं कुष्ठरोगी भी उनकी शरणमें आये थे। कुछ दिन वहां रहनेसे वे भी निरोग हो गए।

ऐसे ही एक दिनकी बात है कि महात्मा सुन्दरदास जी प्रातःकाल स्नानसे उठकर सत्संगियोंसे बातें कर रहे थे कि इतनेमें खबर मिली कि उसी गाँवके पासमें एक चीतेने किसी गौ को बध कर डाला है, जिसे कुछ लोगोंने देखा है। लोगोंने महात्माजीसे प्रार्थना की कि इस चीतेने बहुतसे पशुओंको नष्ट कर दिया है। यदि ऐसा ही रहा तो कुछ दिन में हमारा गाँव भी समाप्त हो जाएगा। ये सुनकर महात्माजी हाथमें कुछ पुष्प ले र गांवके मध्य चौकमें खड़े हो गये। चारों दिशाओंमें चार फूल फेंक दिए और आज्ञा दी कि

चार-चार मील तक गाँवमें चीता नहीं आयेगा। उस दिनसे पशु निर्भय होकर चरने लगे और चीतेका आना जाना भी बन्द हो गया। अनेक पशुओंको कई प्रकारकी बीमारियां भी आती थीं, जिनसे वे मर जाते थे। गाँवके लोग महात्माजीसे जल ले लेते थे और पशुओं पर छींटे दे देते थे तो पशु निरोग हो जाते थे।

एक दिन भिम्बर से कोटली जानेके लिए लंबा सफर करना पड़ा। साथमें दो चार सत्संगी भी थे। चलते चलते सबको प्यास लगी। गर्मीकी ऋतु थी। सख्त गर्मी पड़ रही थी। सब ही प्याससे व्याकुल हो रहे थे। इर्द गिर्द कहीं पानी नहीं मिला। महात्माजी संगत सहित एक वृक्षके नीचे बैठ गए। कुछ क्षण विश्राम करके महात्माजीने आज्ञा दी कि—"देखो वह जो टालीका वृक्ष दीखता है, उसके नीचे एक पत्थर है, उसे उठाओ। संभव है कि उसके नीचे परमात्माकी कृपासे पानी मिल जाए।" सरदार कृष्णसिंह आज्ञानुसार पहुँचे। देखा तो वहां एक श्वेतरंगका पत्थर पड़ा है। उसे उठाया तो उसके नीचे निर्मल जलका स्रोत निकल पड़ा। सत्संगियोंने जलपान किया। अब भी उस प्रदेशके लोग अनेक रोगोंकी निवृत्तिके लिए उस स्रोतका जल स्नान तथा पानमें व्यवहार करते हैं। आगे बढ़े तो दो मील पर कण्डी (जल-शून्य पहाड़ी) का इलाका था।

वहां एक सुहागपुर गांव था। वहाँके लोग धन इकट्ठा करके कुंआ खोद रहे थे। ४० हाथ खोदने पर भी जल नहीं आया था। ग्रामवासियोंके सौभाग्यसे महात्माजी भी उसी मार्गसे निकल रहे थे। साथमें सत्संगी भी थे। आगे चलने वाले एक सत्संगीने कहा "लोगो! महात्मा सुन्दरदासजी आ रहे हैं।" यह सुन सब लोग कुंआ खोदना छोड़ महात्माजीकी शरणमें आ पहुँचे। महात्माजी चले आ रहे थे। सबने उनके चरणोंमें प्रणाम किया और प्रार्थना की कि गाँवमें पानीकी बहुत तंगी है। पशुओंके लिए दो तीन मील जाकर किसी दूसरे गाँवसे पानी पिलाना पड़ता है। आप भगवान्‌की मूर्ति हैं। कृपा करें तो यहां पानी निकले। महात्माजी सुनकर कुंएके पास चल पड़े, एक आदमीसे धूप, चावल, चन्दन आदि मँगवाये। प्रेमसे बैठकर भगवती पृथ्वीमाताका पूजन करने लगे। जब कुंएसे उठे तो कुंएसे सहसा पानीका स्रोत फूट निकला। गाँवके लोग निहाल हो गये।

मैंने स्वयं देखा है कि जब जब वर्षा बन्द हो जाती थी और किसान वर्षाके लिये तड़फते थे। महात्माजी उन्हें हरिकीर्तन करनेकी आज्ञा दिया करते थे। ऐसा करने पर वहां अखण्ड वर्षा हुआ करती थी।

ऐसे ही यात्रा करते-करते एक दिन उन्हें ज्वर विकार हो गया। रातमें उन्हें भयानक ज्वरने घेरा भक्तोंने कुछ वैद्य डाक्टरोंको बुला लिया। महात्माजीके पास आ कर कहने लगे कि आप वैद्यजीको हाथ दिखावें। ये कुछ औषध देंगे तो आपका शरीर ठीक हो जावेगा। महात्माजी बालकके समान हँसने लगे और एक मधुर धुनसे एक वाक्य उच्चारण करने लगे,—"न मैं औषध खाऊं न कोई बूटी खाऊं, न वैद्य बुलाऊं। वैद्य मिले मेरा अविनाशी ताहीको नब्ज दिखाऊं॥ अब मैं अपने रामको रिझाऊं॥" यह कह उठकर बैठ गये और बड़े प्रेमसे राम-राम उच्चारण करने लगे। वह तो उनकी लीला ही थी। जहाँसे अज्ञानांधकार भाग चुका है, जहाँ अहंकार ममता आदि जल चुके हैं, काम,क्रोधादि शत्रु जिनसे परास्त हो चुके हैं, भला ऐसे पवित्र महानुभावोंके हृदयमें ज्वर कब ठहर सकता था। वह दूर हो गया। इसी प्रकार कुछ दिन इस इलाकेमें विचरते रहे और हरेक ग्रामके अन्दर छोटी-छोटी कुटिया का प्रबंध करा लेते थे। उनकी आज्ञा थी कि कोई साधु महात्मा आये तो उसकी सेवा किया करो। किसी प्रकारका कष्ट किसी को हो तो गाँवमें बहुतसे लोग उन

महात्माका नाम लेकर दूर कर दिया करते थे।

एक दिनकी बात है कि महात्मा सुन्दरदासजी चलते चलते एक गांवमें पहुंचे। वहाँ एक गरीब अरोड़ेका घर था। उसके घरके बरामदेमें महात्मा जी बैठ गये। उनको बड़े जोरकी प्यास लग रही थी। उन्हें लस्सी पीनेका भी अभ्यास था। वड़ी प्रेम भरी वाणीमें कहने लगे—"माँ! लस्सी तो पिला" माईने दुखी होकर कहा—"महाराज! मेरे घरमें लस्सी नहीं है। मैं महा गरीब हूं। मेरे पास गौ तो है पर वह भी दूध सुखा चुकी है।" महात्मा जी ने कहा—"मां! सन्तोंसे हँसी मसखरी नहीं करनी चाहिए। अपने बेटेके लिये तो लस्सी रखी है। क्या मैं तेरा बेटा नहीं हूँ? यह भी झूठ बोला कि गौ सूख गयी है। देख तो गौ दूध देती है। जा अन्दर जा कर हांडी तो देख" माई आश्चर्यमें पड़ गयी। देखा तो हांडीमें लस्सी और साथ कुछ मक्खन भी पड़ा है। लस्सीका कटोरा भरकर और साथ मक्खन लेकर महात्माजी को पिलानेके लिये आई, और उनके चरणोंमें गिर पड़ी। इधर ग्रामवासी भी इकट्ठे हो चले थे। गौ के थनमें बच्चा लगा है और टपाटप दूध थनोंसे नीचे गिर रहा है। इस अपूर्व चरित्रको देख ग्रामवासी आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने महात्मा जीकी प्रार्थना कर रात को वहीं रख लिया। रातभर हरिकीर्त्तन हुआ। प्रातः उठ महात्माजी आगे चल पड़े

मैंने स्वयं अनुभव किया कि अष्टसिद्धियोंमें से कुछ सिद्धियां तो उनके पास दासीरूपसे सेवा किया करती थीं। देखते थे कि निर्धनोंको धन मिल जाता था, बेकारोंको कार्य मिल जाता था, मूर्खोंको विद्या मिल जाती थी। रोगियोंको नीरोगता प्राप्त हो जाती थी। अंधोंको आंखें मिलीं, गूंगोंकी वाणीमें शब्दोंका विकास हुआ। इसी प्रकार उनकी घटनाएँ देखनेमें आईं। वे भूखेको रोटी और नंगेको वस्त्र भी देते थे। दानका कोई अन्त नहीं था। सन्तोंके जूठे बर्तन स्वयं माँजते थे। अपनेको सेवादार समझते थे

एक दिन कार्तिक मासमें गुरु नानकसाहबके पर्वके कुछ दिन बाकी थे तो गुलियाना ग्राम(गुजरात जिला) से महात्मा सुन्दरदासजीके लिये निमंत्रण भेजा गया था कि गुरु पूर्णिमाका उत्सव गुलियानामें किया जाये। इस प्रकार का निमंत्रण लेकर कुछ भक्त पहुँचे और विनयसे कहने लगे तो महात्माजीने उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। अभी गुरुपूर्णिमामें दो दिन शेष थे कि सुन्दरदासजी भक्तोंके साथ गुलियानाके लिए चल पड़े। मार्गमें जाते हुए एक छोटेसे गाँवमें पहुँचे। यहाँ मुसल्मान अधिक थे। दो तीन घर अरोड़ोंके थे। एक ब्राह्मणका घर भी था। इसमें दो तीन हिंदु बड़े संपन्न थे, दो तीन बड़े निर्धन थे। सब दुकानदार थे। किसी भक्तने कहा—"देर हो गई है, हिंदु घर यहां हैं इनसे ही भिक्षा लेलें।" महात्माजीने कहा "जाओ दो चार घरसे रोटी ले आओ। रोटी अधिक ले आना क्योंकि संगतमें आदमी अधिक हैं, १५ होंगे।" जब भिक्षार्थ दो मनुष्य गये तो पहले सम्पन्न घरों पर गये। भिक्षाका नाम सुंदरदासजीका नाम सुनते ही उनके स्त्री बच्चे मजाक करने लगे कि "देखो हुक्म भेज दिया है, रोटी ले आओ। मुफ्तका ये खाते हैं।" भक्त वहांसे हटकर दूसरे घरोंमें गये। भिक्षा वहांसे भी नहीं मिली। जब तीसरे स्थानमें गये वे निर्धन क्षत्रिय थे। उन्होंने घरकी रोटियाँ भी दी तथा बाल बच्चों सहित महात्माजीके दर्शनको चल पड़े। उधर महात्माजी गाँवके मध्यमें पहुँच गये थे। एक गरीब खत्रीकी दुकानमें बैठकर भक्तोंसे कह कि यहाँ भिक्षा ले आओ। भिक्षा थोड़ी थी और आदमी अधिक थे। महात्माजी दुकानदारसे कहने लगे—"भाई तुम भी दो रोटी ले आओ।" जब दुका-

जी उठे। कुछ देर तक विचार किया। इतने में प्रातः काल हुआ। महात्माजीके रामभजनका समय था। उधर ग्रन्थसाहबके पाठियोंने पाठ करना आरम्भ किया। महात्माजी स्नान और प्रार्थनासे निवृत्त होकर गुरुद्वारेमें गये। कुछ जनसमूह एकत्र आगे ही हो रहे थे। कुछ भक्तोंके सामने महात्माजीने हुक्म दिया कि दस पांच आदमी गाँव गाँव जाकर १०,५ अच्छे-अच्छे आदमियोंको बुला लाओ ताकि यज्ञोंका प्रबन्ध किया जाये। तभी देशमें शान्ति होगी। नियुक्त आदमी गांव गांवमें जाकर सबको निमंत्रित कर लोगोंको इकटठा कर लाये। यज्ञ तथा अखण्डकीर्तन आदि होनेका दिन निश्चित किया गया। निश्चित तिथि पर कुछ देहातोंके लोग प्रत्येक गांवसे आ आ कर महात्माजीकी तपोभूमिमें पहुंचे। महात्माजीने अपनी निश्चित तिथिको प्रान्तोंकी शान्तिकेलियेयज्ञ हरिकीर्तन ग्रन्थसाहबका पाठ, रामायणके अखण्ड पाठ प्रारम्भ कराये थे। इसी प्रकार यज्ञारम्भ होनेसे जनता एकत्र होने लगी। इतनी भीड़भाड़ तथा संघटन देखकर मुसलमान विचार करने लगे कि कारण क्या है। क्या मुसलमानोंको मरवानेके लिए कोई संघटन तो नहीं हो रहा है। ऐसा विचारकर कुछ मुसलमानोंने झुण्डके झुण्ड गांवों तथा प्रान्तोंमें इकट्ठे होकर विचार करना आरम्भ किया कि महात्मा सुन्दरदासजी हमारे विरुद्ध मुसलमानोंके नाशके लिये कोई उपाय सोच रहे हैं और लोगोंको इकट्ठा करनेके लिए पाठ पूजाका ढोंग रचाया है। इसलिए हम सब मिल कर इनका पाठ पूजाका मेला समाप्त कर देंगे। और सुन्दरदासजीको सदाके लिये समाप्त कर देंगे। ऐसा विचारकर सहस्रों मुसल्मान शस्त्रास्त्र लेकर डाकू रूपमें वहाँ आ पहुँचे। इधर हरिकीर्तनकी ध्वनि शुरू थी। जिस समय मुसल्मान गांवके चारों ओर इकटठे हो गये गुरु द्वारेमें सूचना मिली कि लूटमार करनेको आ रहे हैं। तब महात्माजीने सुनकर बाहर निकल निकलकर सब भक्तोंसे कहा कि "आप अपने अपने स्थान पर बैठकर ईश्वर चिन्तनमें लगे रहो। वह अकाल पुरुष ब्रह्म सब घट घटमें निवास करते हैं और उनकी कृपासे सब लोगोंको शान्ति मिलती है। दया और प्रभुकी कृपा होगी तो अत्याचार करने वाले पुरुषोंकी बुद्धि भी पवित्र हो जावेगी।" इतनेमें मुसलमानोंने कुछ आदमी गुरुद्वारेका हालचाल देखनेके लिए दूतरूपमें भेजे। इधर लंगरका समय हो गया था। जो भक्त एकत्र हो रहे थे उनके भोजनका प्रबन्ध हो रहा था। कुछ भोजन खाने बैठ गये थे। पंक्तिका नियम था जो आ जाये बैठ जाये। पंक्ति तो शुरू थी। आने वाले मुसलमानोंने जब मिठाई और मोहनभोग बँटते देखे तो वे भी खाने बैठ गये। जब वे प्रसाद खा चुके तो उनकी क्रूर बुद्धि जाती रही। गुरुद्वारेको सलाम करते हुए वे आगे बढ़कर अपने साथियोंसे कहने लगे कि "यह फिसाद करनेका संघटन नहीं है। यहां तो हिन्दू राजकी तरह पाठ पूजाकर रहे हैं। और इस स्थानमें जाकर हम लोग कुछ उत्पात करेंगे तो अच्छा नहीं है। इससे तो देहातमें जाकर साहूकार बनियोंको लूटें"। यह सुन डाकुओंके सरदारने कहा— "तुम लोगोंका विचार गलत है। यदि तुम यहाँ मार काट करना नहीं चाहते तो जिस तरह हो सुन्दरदास को गिरफ्तार करके ले आना चाहिए, नहीं तो ढोलकी और बाजेके बहाने से कभी-न-कभी संगठन करके हमको इन द्वारा मार देना कोई असम्भव नहीं है। ये सब हिन्दुओंकी चाल है।" ये सोचकर महात्मा सुन्दरदासजीको पकड़ने आए। जब गुरुद्वारेके समीप में आकर कीर्त्तनके मैदानमें पहुँचे। तब आगे आकर देखते हैं तो वहां सारे के सारे एक ही रूप दिखाई पड़ते हैं। वहां सारेके सारे सुन्दरदासजीकी मूर्ति नजर आने लगे। यह अद्भुत चमत्कार देखकर पकड़नेवाले डाकुओंने सोचा कि यह तो करामातकी जगह है। यहां छेड़छाड़ करना अपनी तबाही कराना है, यह विचार कर सब वापिस चले गये। इसी महत्व का आदर्श सुन सब प्रान्तमें धैर्य हुआ। हिन्दुओंने

रुई चांदी सोना गुड़ खांडकी अनुभूत रिपोर्ट

[लेखक--दै० भू० श्री पं० गिरिधारीलालजी ज्यो०]

(१) प्रथम सप्ताह—

चैत्र शु० १० शुक्रवार ता० ८ अप्रैलसे रुई चांदीमें अच्छी घटबढ़ ता० १४ तक चलेगी। रुई चाँदी ता० १२ तक घटबढ़ होके मन्दी। परन्तु यह मन्दी ठहरेगी नहीं, ता० १३ को दुपहर तक मन्दी रहकर सायंकाल सब वस्तुयें तेज होंगी। ता० १२ को गुड़ खांडमें घटते ही खरीदो। सोना तेज। ता० १२ को फीचर तेज। ता० ११ को चांदीकी तेजी होगी वहां बेचो २४ घण्टेमें लाभ है हाथकी हाथ नफा ले लेना। ता० १४ को चांदी तेज, रुई मन्दी।

(२) दूसरा सप्ताह—

ता० १५ अप्रैलसे पहले प्रत्येक वस्तु घटके बढ़ेगी। ता० १५।१६ में रुई मन्दी, परन्तु ता० १४ को सायं बन्द बाजारके समय मन्दी रहे तो निश्चय मन्दी रहेगी। अन्यथा तेजीमेंसंशय नहीं। ता०१६ कोचांदीरुईमें अच्छी घटाबढ़ी। पाट हैसियत मन्दा होके ता० २१।२२ के आस पास तेजी। ता० १८ को चांदी विशेष रूप धारण करेगी।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता० २३ से ३० अप्रैल तक रुईके विना प्रत्येक वस्तु की तेजी खेल जानेमें कोई भय नहीं है। ता० २८।२६।३० को सोना चांदी गुड़ खाण्ड अवश्य तेज। ता० २७ को दिनके १२ बजे या ता० २८ को रात्रिके १२ बजे संसार में कोई नवीन अप्रिय घटना घटित होगी।

(४) चौथा सप्ताह—

ता० १ से ७ मई तक एक दिन तेजी और एक दिन मन्दीका रहेगा। मन्दी में बेचो मत खरीदो। यहां पर असली चांदी अवश्य तेज। रुई पाटमें घटाबढ़ी या मन्दी। ता० २-४-७ को अच्छी तेजी। ता० ५ को विशेष घटबढ़। ता० ७ मईको १२ बजेसे शेयरों और चांदी में मन्दी का झटका आयेगा। मन्दी का नफा लेकर डबल खरीदो। गुड़ खांड साधारण स्थितिमें रहेंगे।

(५) पाँचवाँ सप्ताह—

ता० ८ से १४ मई तक सोना चांदीतेज। रुई पाट हैसीयत मन्दे। ता० ९-१० में एक विशेष मन्दी। ता० ११ को दुतर्फा लगाओ। ता० १२ को प्रत्येक वस्तु मन्दगति से चलेगी। ता० १३ को घटबढ़ से मन्दी। ता० १४ को घटबढ़ से ३ चार बजे अच्छी तेजी।

(६) छठा सप्ताह—

ता० १५ से २१ मई तक एक दिन तेजी एक दिन मन्दी। घटे उस दिन खरीदो और बढ़े भाव बेचो। ता० १९।२० को अच्छी घटबढ़ होगी। ता० २१ मई को सोना चांदी पाट हैसियत तेजीमें रहेंगे।

(७) सातवाँ सप्ताह—

ता० २२ से २९ मई तक पहले तीन दिन तक रुई

सोचा कि हमारा यह संकट महात्मा सुन्दरदासजीकी कृपासे शान्त हो जायेगा। इसी प्रकार हवन यज्ञ जोर शोरसे बढ़ने लगे और अग्निकुण्डमें पवित्र घृतकी आहुति वेद मन्त्रोंसे खूब दी जाने लगीं। वेदपाठी दूर दूरसे आये हुए थे। इसी प्रकार एक सप्ताहके बाद यज्ञ समाप्त हुआ। जिस दिन यज्ञ समाप्त हुआ देशमें उपद्रव शान्त होने लगा। यह महात्माजीका शुभ संकल्प और प्रार्थनाका फल था। इसीप्रकार महात्माजी निष्पक्ष होकर जाति पांति सम्प्रदायकी भावना छोड़कर प्रत्येक प्राणीकी कल्याण कामना सोचा करते थे, यह उनका ध्येय बन गया था। उनके मनमें नीच ऊंचका भाव नही था। सभी को सीतारामका रूप समझा करते थे।

———

में १०) १५) खण्डी की तेजी। ता० २५-२६-२७ को मन्दी का रियेक्शन। पाट हैसियत भी मन्दा, सोना चांदी तेज। ता० २८।२६ साधारण तेज। ता० २७ को रुईमें दिन भर ५) ७) की घटाबढ़ी होती रहेगी। सोना चांदी तेज।

(८) आठवाँ सप्ताह—

ता० ३० मई से ५ जून तक रुईमें दो दिन तेजी रहकर मन्दी आयेगी। सोना चांदी तेज होगा। ता० ३०-३१ मई और १-२ जून को रुई तेज, शेष दिनों में मन्दी।

[६] नौवाँ सप्ताह—

ता० ६ से १० जूनतक रुई चांदी पाट गुड़खांड तेज। ता० ६ को रुई मन्दी होगी वहां खरीदो। ता० ७-८-६ को तेजी होगी, ता० १० को दुतर्फा लगाओ। ता० ६ १० को गुड़ की समस्या विषम है तेजी पर ध्यान रखो। सोना चांदी तेज।

(१०) दशवां सप्ताह—

ता० ११ से १७ जून तक रुई पाट मंदी की ओर रहेंगे। चाँदी सम भावसे कुछ मंदी होके तेज होगी। ता० १४-१५ को विशेष मन्दी। ता० १२ को बन्द बाजार तेजी में रहेगा। गुड़, खांड तेज होकर मंदा होगा।

(११) ग्यारहवाँ सप्ताह—

ता० १८ से २६ जून तक कोई विशेष ग्रह स्थिति प्रतीत नहीं होती, अतः यही राय है कि ता० २३ से घट-बढ़ चलेगी। ता० २३ की सायंकाल बन्द बाजार जिस वस्तुकी तेजी हो उसकी तेजी करो और मन्दी वाले को मन्दी करो। ता० २४ को रुई चांदी तेज होगी, वहाँ बेचो, आगेके लिए लाभ रहेगा। ता० २४-२५-२६ जून को वर्षा सर्वत्र होगी।

(१२) बारहवाँ सप्ताह—

ता० २७ जूनसे ४ जुलाई तक पहले दो तीन दिन साधारण मन्दी रहकर पीछे तेजी आवेगी। ता० ३० की सायंकाल से ३६ घण्टे में रुई अवश्य तेज होगी, अचूक चान्स है। चाँदी की साधारण स्थिति में एक दिन तेज एक दिन मन्दा करते रहो। ता० १ या २ जुलाई को सोना, चाँदी, गुड़, खाँड में भी निश्चय करके तेजी रहेगी।

———

(पृष्ठ ४७ का शेष)

नारी और उसकी अलंकार प्रियता

वह खटकनेकी वस्तु हो जाता है और तब उसे रोग कह डालना कोई ना समझी नहीं है। सच पूछिए तो सुन्दरता एक प्राकृतिक देन होती है। उसे वस्त्रा भूषणोंसे नए सिरे से पैदा नहीं किया जा सकता। हाँ, बढ़ाया अवश्य जा सकता है। परन्तु कठोर सत्य तो यह है कि कुरूप कुरूप है और सुन्दर सुन्दर! चाहे वह किसी भी वेष भूषामें ही क्यों न हो।

हम सदासे ही शक्तिकी उपासना करते आए हैं प्रत्येक नवरात्रमें दुर्गा सप्तशतीका पाठ करते हैं, परन्तु हमने उसका वास्तविक अर्थ न कभी समझा था और न आज ही समझा है। समझा होता तो आजकी नारी गृहलक्ष्मीके साथ ही रणचण्डी दुर्गा भी होती और होती इस स्वतन्त्र भारतमें आत्मसम्मानकी रक्षा के साथ-साथ देश तथा समाजका अभ्युत्थान करने वाली आदि शक्ति दुर्गाका सच्चा अवतार। वह अलंकारोंकी अन्ध भक्ता न हो कर शस्त्रास्त्रों से खिलवाड़ करती। फिर बच्चे भी सच्चे अर्थमें पुरुष होते और होते रणकुशल वीर।

लेखकों को सूचना—

श्री पं० गंगाप्रसाद जी ज्योतिषी, श्री पं० गणेशनारायण जी दैवज्ञ' आदि विद्वान् ज्योतिषियों के व्यापारिक ते..ी मन्दी सम्बन्धी लेख देरी से आनेके कारण इस अङ्क में प्रकाशित न हो सके। आगामी 'ग्रीष्माङ्क' के लिए जो लेख ज्येष्ठ शु० १५ ता० १० जून तक पहुंच जायेंगे वे ही प्रकाशित हो सकेंगे। —संपादक

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

चैत्र शुक्ल	११ शनिवार	ता० ९	अप्रैल	कामदा एकादशीव्रत दोलोत्सव
	१२ रविवार	ता० १०	,,	प्रदोषव्रत
	१४ मंगलवार	ता० १२	,,	सत्यव्रत
वैशाख कृष्ण	१५ बुधवार	ता० १३	,,	मेषसंक्रान्ति पुण्यकाल, मेला वैशाखी
	४ शनिवार	ता० १६	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १०।३८
	११ शनिवार	ता० २३	,,	वरूथिनी एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंके लिए
	१२ रविवार	ता० २४	,,	एकादशीव्रत वैष्णवोंका
	१२ सोमवार	ता० २५	,,	सोमप्रदोषव्रत
वैशाख शु०	३० गुरुवार	ता० २८	,,	अमावस्या
	१ शुक्रवार	ता० २९	,,	चन्द्रदर्शन
	२ शनिवार	ता० ३०	,,	श्रीपरशुराम जयन्ती शिवाजी जयन्ती
	३ रविवार	ता० १	मई	अक्षया ३
	११ सोमवार	ता० ९	,,	मोहिनी एकादशी व्रत
	१३ मंगलवार	ता० १०	,,	भौमप्रदोषव्रत
	१४ बुधवार	ता० ११	,,	श्रीनृसिंह १४ जयन्ती
ज्येष्ठ कृष्ण	१५ गुरुवार	ता० १२	,,	सत्यव्रत वैशाखी १५ कूर्मजयन्ती
	२ शनिवार	ता० १४	,,	वृषभ संक्रान्ति पुण्यकाल मु० १५
	३ रविवार	ता० १५	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १०।२६
	११ सोमवार	ता० २३	,,	भद्रकाली (अपरा) ११ व्रत
	१३ बुधवार	ता० २५	,,	प्रदोषव्रत
ज्येष्ठ शु०	३० शुक्रवार	ता० २७	,,	वटसवित्री अमावस्या व्रत
	२ रविवार	ता० २९	,,	चन्द्रदर्शन
	१० सोमवार	ता० ६	जून	श्री गङ्गा दशहरा
	११ मंगलवार	ता० ७	,,	निर्जला एकादशी व्रत
	१२ बुधवार	ता० ८	,,	प्रदोष व्रत
	१५ शुक्रवार	ता० १०	,,	सत्यव्रत, पूर्णिमा
आषाढ कृष्ण	४ मंगलवार	ता० १४	जून	मिथुन संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर श्रीगणेश [४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १०।४२
	११ बुधवार	ता० २२	जून	योगिनी एकादशी व्रत
	१२ गुरुवार	ता० २३	,,	प्रदोषव्रत
	३० रविवार	ता० २६	,,	अमावस्या
अषाढ शु०	१ सोमवार	ता० २७	,,	चन्द्रदर्शन
	२ मंगलवार	ता० २८	,,	श्री जगदीश रथ यात्रा

[पृष्ठ २४ का शेष]

धूमकेतु वेदसम्मत है

हुआ।

वेदने न केवल सूर्य, चन्द्र, राहु, केतु, धूमकेतुका शुभाशुभ फल माना है, प्रत्युत नक्षत्रोंका भी फल माना है। पाठकगण उन मन्त्रोंको भी देख लें—

'सुहवमग्ने ! कृत्तिका ३, रोहिणी ४ चास्तु, भद्रं मृगशिरः ५, शम् आर्द्रा ६। पुनर्वसू ७ सूनृता, चारु पुष्यो ८, भानुराश्लेषा ९, अयनं मघा १० मे ॥ पुण्यं पूर्वा, फल्गुन्यौ ११-१२, चात्र हस्तः १३, चित्रा १४, शिवा स्वाति १५ सुखो मे अस्तु। राधे विशाखे १६, अनुराधा १७, ज्येष्ठा १८, सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम् १९ ॥ अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाढा २०, ऊर्जं देवी उत्तरा २१ आवहन्तु। अभिजिद् २२ मे रासतां पुण्यमेव, श्रवणः २३, श्रविष्ठा (धनिष्ठा) २४ कुर्वतां सुपुष्टिम् ॥ आ मे महत् शतभिषग् २५ वरीय आ मे द्वया प्रोष्ठपदा (भाद्रपदा) २६-२७ सुशर्म। आ रेवती २८ च अश्वयुजौ (अश्विनी) १, भगं मे रयिं भरण्य २ आवहन्तु' (अथर्ववेद शौ० सं० १९।७।२-३-४-५) 'यानि नक्षत्राणि दिवि अन्तरिक्षे...... प्रकल्पयन् चन्द्रमा यानि एति, सर्वाणि मम एतानि शिवानि सन्तु' (अ० १९।८।१)।

इस प्रकार जब इन सब नक्षत्रोंसे शुभफलकी प्रार्थना की गई है; तब ग्रह नक्षत्रोंका शुभाशुभ फल वैदिक सिद्ध हुआ। धूमकेतुकी शिखाओंके झर जानेसे जहां-जहां उसकी वायु प्रभाव डालती हैं; वहां-वहां हानि पहुँचती है; क्योंकि—धूमकेतुमें हानिकारक गैसोंका सम्मिश्रण रहता है, ऐसा पाश्चात्य वैज्ञानिक भी मानते हैं। तब ज्योतिष-प्रोक्त उसके शुभाशुभ फलकी निर्मूलता मानना तथा उसकी हँसी उड़ाना अपनी ही अनभिज्ञता प्रकट करना है, अथवा लार्डमैकालेका मानसिक दास बनना है। ग्रहोंकी शास्त्रीयता पर फिर प्रकाश डाला जायगा।



[पृष्ठ ३६ का शेष]

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र

दलों में झगड़े होंगे। अतलान्तक तट पर आँधियां आवेंगी, दुर्घटनाएं होंगी। रूसके साथ सम्बन्ध तने रहेंगे। सैनिक शक्ति और शस्त्रास्त्र बढ़ाँये जायेंगे। श्री प्रे० ट्रूमैनको केतुकी महादशामें शनिकी अन्तर्दशा है, अतः अमेरिकन जनताकी सद्भावना ट्रूमैनके साथ रहेगी। अमेरिका अपने उद्योगधन्धों और व्यवसायको बढ़ायेगा। राजनैतिक एवं आर्थिक मांगें रखनेसे वर्षान्त में ट्रूमैनकी आलोचना होगी। दक्षिण अमेरिकाके अनेक राज्यों में(ब्राजील,अर्जुनटायना चिली मेक्सिको में) सहसा राजनैतिक क्रांति होगी।

[११ का शेष]

ब्रज राजधानी सुभग भरतपुर नगर मँझारी
पूज्यचरण आचार्यप्रवर कृपाशु शिर धारी ॥
श्रीविश्म्भरतनय दीन द्विज नन्दकुमारा
अनुदित भाषा छन्द किये निज मति अनुसारा ॥
संवत युगनभव्योमभुज शुक्लपक्ष मधुमास ॥
रविवासर प्रतिपदाको भाषाछन्द प्रकाश ॥
अमृतवाग्भवाऽऽचार्य रचित स्तव मनहारी
संक्रान्तिके भक्तजननकों हो सुखकारी ॥
करै तुष्ट अरु पुष्ट सकल मन-काम पुजावै
लहै पूर्ण स्वातन्त्र्य राष्ट्र हिय सों इहि ध्यावै ॥

भूल--सुधार

वर्तमान सं० २००६ के श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग पृष्ठ ७६ पर गुरुकी अन्तर्दशामें आरम्भमें राहुसे अन्तमें मंगल तक ग्रहोंके नाम प्रेसके भूतोंकी कृपासे अशुद्ध छप गये हैं। अन्तर्दाशके वर्ष मासके सब अङ्क ठीक हैं किन्तु ग्रहोंमें आरम्भमें राहुके स्थानमें गुरुसे प्रारम्भ करके अन्त में क्रमशः मंगलके स्थानमें राहु पर्यन्त सब शुद्ध कर लें। इसी प्रकार पृष्ठ ४५ पर ज्येष्ठ शुक्ल १४, १५ को शुक्र शनिवार अशुद्ध छपा है, वहाँ क्षयतिथि १४ को गुरुवार और पूर्णिमाको शुक्रवार समझें।

—सम्पादक

व्यापारसे धन कमाना चाहते हो तो अवश्य पढ़े—

तेजी-मन्दीकी सही जानकारी बताने वाला

सैकड़ों व्यापारियोंका विश्वासप्राप्त स्थान

इस बात श्रेय (भारतके ख्याति प्राप्त तेजी मन्दी विशेषज्ञ राजाओं एवं बड़े-बड़े सटोरियों से प्रशंसापत्रप्राप्त श्री ५० हरिशङ्कर शास्त्री द्वारा स्थापित) श्रीसत्येश्वर ज्योतिषकार्यालयको ही विशेष रूपसे प्राप्त हुआ है। कार्यालयने रिपोर्टोंकी श्रेष्ठता सिद्ध करनेको पहले कई बार रिपोर्ट गलत साबित करने वाले व्यापारियोंको फीससे कई गुणा अधिक इनामकी सूचनाएँ दैनिक साप्ताहिक मासिक त्रैमासिकपत्रोंमें दी थी; इससे भी इसको सर्व श्रेष्ठताका प्रत्यक्ष प्रमाण है आगे सं० २००६ में सोना चांदी रुई अलसी सरसों गुड़ आदिमें भारी घटबढ़ होगी। सोन १२५) या ६५) चांदी २०५) या ८५) रुई ८००) या ४५०) अलसी (बम्बई) ३४) या २०) बारदाना १८०) य ५) कालीमिर्च २००) या ७००) एरण्डा १६०) या १००) डिफर्ड १२००) या २८००) कब। साथमें कब कितने टकोंके जोरदार रियेक्शन आयेंगे ? आदि बातें पूरी तरह ठीक-ठीक रूपसे जानना चाहते हों तो आज ही ग्राहक बनें। याद रखें फीस का मोह, दामकी कमीबेशी या अन्य कारणवश चक्करमें रहे तो जरा भी व्यापार बिगड़ते ही पूंजीको सफाचट होते देर न लगेगी। अस्तु

नोट— (१) एक वस्तुकी एक मासकी खास स्पेशल रिपोर्टकी फीस १००) एक वर्षका ६००) यह रिपोर्ट ७०।६५ प्रतिशत तक सही उतर सकेगी। इस रिपोर्टके सिर्फ २० ग्राहक और बनाना है। एक वर्षके ग्राहकोंको आधी फीस पेशगी भेजनी होगी। स्मरण रक्खो डङ्केकी चोट चेतावनी देता हूँ कि निधड़क धन एवं यश कमाना हो तो शीघ्र ही ग्राहक बनें। ऐसी रिपोर्ट आपको दूसरी जगह मिलनी असम्भव है। साथ ही इस रिपोर्टके व्यापारीको तार एवं टपाल खर्च माफ है।

(२) एक वस्तुकी एक मासकी साधारण मासिक रिपोर्टकी फीस २५) और १ वर्षका २००) चार्ज है। इसमें वार्षिक ग्राहकसे आधी फीस पेशगी, बाकी मुनाफेके बाद समयानुसार यह रिपोर्ट सिर्फ ६५ से ७५ प्रतिशत तक सही उतरेगी। यह रिपोर्ट सिर्फ ५० व्यापारियोंको देना रक्खा है।

(३) दोनों रिपोर्टोंके वार्षिक ग्राहक १ मई सन् १९४९ से १ मई सन १९५० तक माने जावेंगे। रिपोर्ट हर माह २० तारीख अंग्रेजीको रवाना रजिस्ट्री से होगी। साथ ही पहली रिपोर्ट वालोंको करीब ३५ टकेका एवं दूसरी रिपोर्ट वालोंको २० टकेका। अचूक चांस बताया जावेगा। जिससे कि इन चांसोंसे ही मनमाना धन कमा सकते हो।

पता— **ज्योतिषरत्न पं० हरिशङ्कर शास्त्री दैवज्ञ**

अध्यक्ष— **श्रीसत्येश्वर ज्योतिष कार्यालय, मु० पो० खिड़कीयां (सी० पी०)**

साहित्य-समालोचना

[समालोचनार्थ प्रत्येक पुस्तककी दो-दो प्रतियाँ प्राप्त होना आवश्यक है। एक प्रतिकी केवल प्राप्ति-स्वीकार सूचना प्रकाशित होगी]

कल्पना--कानन

लेखक—श्री गजलाल बियाणी

प्रकाशक—राजस्थान प्रिंटिङ्ग प्रेस आकोला (म० प्र०)

पृष्ठ ८०, सजिल्द पुस्तकका मूल्य २) रु०

पुस्तक बहुत सुन्दर है। लेखककी प्रकृति-निरीक्षणमें बुद्धिकी सूक्ष्मता बहुत प्रशंसनीय है। हिन्दी-साहित्यमें इस प्रकारकी लेखनशैली बहुत कम पाई जाती है। हिन्दी-साहित्यके इस अभावकी पूर्तिमें लेखकने जो प्रयास किया है, विद्वत्समाज उसका पूर्ण समादर करेगा। साहित्यिक छटा के साथ साथ प्रशंसनीय दार्शनिक छटा भी सौन्दर्यसे ओत-प्रोत है। हिन्दी-संसार श्री बियाणीजीकी लेखनीसे बहुत कुछ आशा रखता है। पुस्तकमें १३ पुष्प विकसित दिखाए गये हैं। जिनमें पहला 'नर्तकी' पुष्प कलाप्रेमियोंको अवश्य ही सूंघना चाहिए। इसकी सौरभ बहुत ही मधुर एवं कला-प्रेमियोंको मस्त बनानेमें सक्षम है।

'प्राणाचार्य' का वाजीकरणाङ्क

गत वर्षोंमें धन्वन्तरिके जीवन संचारके अनन्तर अब कुछ वर्षोंसे श्री बांकेलाल जी गुप्तके अदम्य उत्साहसे प्राणाचार्य (मासिक पत्र) चल रहा है। इसका 'वाजी-करणांक' एक प्रकारसे अपने गम्भीर अनुभवों का सार है। यद्यपि अधिक अनेक अपेक्षित विषय भी इसमें समावेश चाहते हैं। तथापि बहुत अंशोंमें यह विशेषज्ञोंके लिए भी ज्ञातव्यतासे पूर्ण है। कामशक्ति, रतिरहस्य पुत्रोत्पत्ति क्लीवता आदि पर खूब प्रकाश डाला है। अङ्क सर्वथा संग्रहणीय और उपादेय है। ४०० से भी अधिक पृष्ठोंका मूल्य ४।।) रु०।

प्राप्तिस्थान—प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ (अलीगढ़)

स्वागत–गीत

[ले०—श्री पं० कुलानन्दजी पन्त]

आओ आओ हे नववर्ष !
दूर करो सारी कायरता, बहे वीर भावोंकी सरिता।
धुल जाये आलस्य भीरुता हो सच्चा उत्कर्ष
आओ आओ हे नववर्ष !

मिलता है पयमें जल जैसे, भेद-भावको भूलें वैसे।
भ्रातृ-भावकी लहरोंमें लहराये भारतवर्ष
आओ आओ हे नववर्ष !

कलुष-कलेवर बदलें सारे, दिव्य वीर-सा बाना धारें।
उन्नतिके पथ पर बढ़ जायें— छोड़ें सभी अमर्ष
आओ आओ हे नववर्ष !

काया उलट पलट हो जाये, त्याग भावसे हिय भर जाये।
देश जातिकी रक्षा में हम— देवें प्राण सहर्ष।
आओ आओ हे नववर्ष !



श्रीस्वाध्याय मिलनेके स्थान

दिल्ली—(१) श्री पं० दयानन्दजी जोशी समोसा गली
(२)—नारायणदास जयदयालमल बुकसेलर दरीबा क०
बम्बई—भावीरुख कार्यालय, राममन्दिर–बिल्डिङ्ग कालवा-देवीरोड, बम्बई नं० २।
कानपुर—बम्बई पुस्तक एजेन्सी चौक बाजार।
आगरा—श्री पं० ज्योतिप्रसादजी शास्त्री, भैरोंनाला, बेलनगंज आगरा।
उज्जैन—श्री पं० रामचन्द्रजी त्रिवेदी मारुती गंज।
जयपुर—जैनन्यूजपेपर एजेन्सी, जौहरी बाजार
भरतपुर—डा० आर० सी० गुप्ता, गङ्गामन्दिर

महामहिमआचार्य

श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

तीसरी बार **श्रीराष्ट्रालोक** छप गया

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वतन्त्र्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है माता है और आचार्य। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं राष्ट्रिय नहीं।

हम संक्रान्तिका सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिए जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रीय राष्ट्रके पुत्र होते हैं, पति नहीं।

भारतीय अपने आपको हिन्दु माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रान्ति किंक्रान्ति है, संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीत आदर्शका एक जीवनशास्त्र है।

राष्ट्र प्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मंगाइये। मूल्य ।।) मार्ग व्यय –) 'श्रीस्वाध्याय' और श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्गके स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्गव्यय सहित ।=)

श्रीपरशुरामस्तोत्र

राष्ट्रभाषाऽनुवादसहित सचित्र द्वितीय संस्करण।

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषामें लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुरामका स्तोत्र है। भारतके अनेकों पत्र-पत्रिकाओंने तथा विद्वानोंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। मूल्य विश्वोद्धार

श्रीसप्तपदीहृदय

राष्ट्रभाषाऽनुवादसहित

भारतीय आर्य विवाहसंस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्व पूर्ण है यह तो पाठकों को विदित ही है।

किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वान्ने खोलकर नहीं लिखा। 'एकमिषे' इत्यादि वैदिक वाक्योंके यथार्थ रहस्यको खोलकर भारतीय आदर्श के राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदी-हृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या आदर्श दाम्पत्य जीवनका तत्व इसमें भरा पड़ा है। मूल्य विश्वोद्धार

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचल-सी मच गई और सैकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्ण रूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिए? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिए। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा।

मूल्य २) रु० मात्र।

प्राप्ति स्थान— व्यवस्थापक श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला।......... इस पत्र और इसके सञ्चालकमण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी ''''''''''।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी महोदय—'श्रीस्वाध्याय बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।''''''''मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ''''''''।

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी शिक्षामन्त्री युक्तप्रांत—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' के पञ्चम वर्षका प्रथमाङ्क बड़ा सुन्दर निकला है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह मुग्धकर है। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभी प्रशंसनीय है।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"''''''''''श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।''''''''"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।''''''''यह एक उच्चकोटि का सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूं।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—"''''वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है।''''''''"

श्री डा० रामकुमार वर्मा जी—"''''''''''श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।''''''''"

श्रीयुत पं रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी,)—"''''''''''श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।''''''''प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्मप्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।''''''''"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।''''''''आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजी—"''''''''''श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्ली में छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित।